विशद

भजन संग्रह

आशीर्वाद :

प. पू. क्षमामूर्ति

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

संकलन :

मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज

प्रकाशक :

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : भजन संग्रह

आशीर्वाद : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज

संकलन : मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज

पावन प्रसंग : प.पू. आचार्यश्री विशद सागर जी, मुनि विशाल सागर जी, आर्यिका भक्ति भारती, क्षुल्लिका वात्सल्यभारती, क्षुल्लक विसोम सागर जी, ब्र. ज्योति दीदी, ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी, ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी, ब्र. प्रदीप भैया ससंघ के गुरुग्राम चातुर्मास के शुभ अवसर पर।

सम्पर्क सूत्रः ज्योति दीदी (संघस्थ) - 9829076085
सुरेश सेठी, जयपुर (941336017),
हरीश जैन, दिल्ली (9818115971),
परम जैन, रेवाड़ी (9812502062)

मूल्य :

प्रकाशक : **विशद साहित्य केन्द्र**
मुद्रक : पिक्सल 2 प्रिंट, हेमन्त जैन जयपुर - 9509529502

अनुक्रमणिका

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46

47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96

97 22
98 23
99 24
100 25
1 26
2 27
3 28
4 29
5 30
6 31
7 32
8 33
9 34
10 35
11 36
12 37
13 38
14 39
15 40
16 41
17 42
18 43
19 44
20 45
21 46

47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96

97
98
99
100
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46

47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96

97
98
99
100
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46

47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

बाल प्रार्थना : क्षमा मूर्ति हे गुरुवर

(तर्ज : भोले भाले भगवन् मेरे .....)

क्षमा मूर्ति हे गुरुवर! मेरे, क्यों तुम हमसे रूठे हो।
बात-बात पर हँसने वाले, क्यों चुप होकर बैठे हो।।
चेहरा ऊपर करके देखो, चरणों शीश झुकाते हैं।
बड़े चाव से आशा लेकर, दर्शन करने आते हैं।।
क्षमा मूर्ति हे!........

हमने तुमको अपना माना, तुम्हीं हमारे दाता हो।
तुम हो माता-पिता हमारे, गुरुवर आप विधाता हो।।
क्षमा मूर्ति हे!........

हाथ जोड़कर वंदन करते, शुभाशीष गुरुवर दे दो।
तव चरणों के सेवक गुरुवर, चरण शरण अपनी ले लो।।
क्षमा मूर्ति हे!........

मुस्करा दो हे गुरुवर! मेरे, हम बच्चों को क्षमा करो।
इतनी शक्ति हमें दो गुरुवर, हमको अपने समा करो।।
क्षमा मूर्ति हे!........

तुम हो तारण-तरण मुनीश्वर, भव सागर से पार करो।
विशद ज्ञान संचय के द्वारा, हम सबका उद्धार करो।।
क्षमा मूर्ति हे!........

अरहंत वन्दना

(तर्ज : राम न मिले हनुमान की बिना.....)

मोक्ष न मिले अरहंत के बिना, अरहंत बने नाहिं संत के बिना।
कर्मों का जिसने घात किया है, ज्ञान दर्शन सुख प्राप्त किया है।।
सिद्ध न बने कर्म अन्त के बिना, अरहंत............।।
पंचाचार जो पाल रहे हैं, पद आचार्य सम्भाल रहे हैं।
उपाध्याय न हों द्वादशांग के बिना, अरहंत...............।।
राग-द्वेष-मोह से हीन कहे हैं, विशद ज्ञान ध्यान में लीन रहे हैं।
साधना न होती है संत के बिना, अरहंत..................।।
जिन-धर्म आगम को आप ध्याइये, चैत्य और मंदिर के दर्श पाइये।
अंत न मिले मोक्ष पंथ के बिना, अरहंत............।।
संतों का जिसने दर्श किया है, चरणों को भी स्पर्श किया है।
कोई नहीं मीत महामंत्र के बिना, अरहंत...............।।

भजन : जिन धर्म है

(तर्ज : यह देश है वीर जवानों का .....)

जिन धर्म है विशद बहारों का, महावीर की जय जयकारों का।
जिन धर्म का बंधु-3 क्या बोले, महावीर की भक्ति में डोले।।
जय हो-3 ......
जिन धर्म है काल अनादि का, यह सत्य अहिंसा वादी का।
यह धर्म है श्रद्धाधारी का, यह सम्यक् ज्ञान पुजारी का।।

यह सम्यक् चारितधारी का, यह सागारी अनगारी का।
यह पंच महाव्रतधारी का, यह आतम ब्रह्म विहारी का।।
जिन धर्म का बंधु-3 ....
जिन धर्म है सम्यक् ज्ञानी का, यह वीतराग विज्ञानी का।
जिन धर्म है ज्ञानी ध्यानी का, यह तीर्थंकर की वाणी का।।
यह आठ मूलगुण धारी का, यह निश्चय अरु व्यवहारी का।
यह द्वेषी का न रागी का, यह धर्म है सम्यक त्यागी का।।
जिन धर्म का बंधु-3 ....
जिन धर्म है जिन अरहंतों का, जो मोक्ष पधारे सिद्धो का।
आचार्य उपाध्याय संतों का, ये वीतराग भगवन्तों का।।
यह मंगल है चत्तारि का, यह लोगोत्तम चत्तारि का।
यह प्राणी मात्र उपकारी का, यह शरण कही चत्तारि का।।
जिन धर्म का बंधु-3 ....
जिन धर्म बड़ा हितकारी है, चर्या क्रिया कुछ न्यारी है।
पापों का नाशन हारी है, जिन धर्म की वृत्ती प्यारी है।।
यह मोक्ष मार्ग का हेतु है, यह भव सागर का सेतु है।
यह सिद्ध शिला का केतु है, यह विशद लोक का सेतु है।।
जिन धर्म का बंधु-3 ....

भजन : पा रहे हैं हम जो कुछ भी

(तर्ज : गा रहा हूँ मैं .....)

पा रहे हैं हम जो कुछ भी, आपकी इनायत है,
आज हम जो कुछ भी हैं, आपकी अमानत हैं।
आपके सहारे हम, जिन्दगी ये जी लेंगे।
घूँट कोई कड़वे मीठे, हँसकर के पी लेंगे।
आपके हैं सेवक हम, आपकी इनायत है.........
आपकी छाँव तले, जिन्दगी बनाई है।
आपकी कृपा से हमने, धर्म निधि पाई है।।
आप से ही पाया सब कुछ, आपकी इनायत है...
आपका आशीष पाया, सौभाग्य ये हमारे हैं।
आप गुरु मंजिल के, बहुत ही किनारे हैं।।
विशद मोक्ष मंजिल पाएँ, आपकी इनायत है.......
राह जो दिखाई है, आगे चलते जायेंगे।
ज्ञान के दीपक उर में, मेरे जलते जायेंगे।।
शीष ये झुका है पद में, आपकी इनायत है.......

भजन : उद्धार कर दो

(तर्ज : तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभु .....)

किया तूने जगत उद्धार गुरु, अब मेरा भी तो उद्धार कर दो।
तू सद्ज्ञानी आतमज्ञानी, मुझे भवसागर से पार कर दो।।

नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करे।
नहीं मिला कोई हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करे।।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, मैं ज्ञान सहित आचरण करूँ।
वह दान मुझे आचार कर दो......।।1।।
भटक रहा अनजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए।
रफता-रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए।।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, तू है दाता ईश्वर सबका।
अब दूर मेरा आगार कर दो......।।2।।
तेरी महिमा अगम अगोचर, जग में एक सहारा है।
जग में रहकर जग से न्यारा, सबका तारण हारा है।।
अब मैं चाहूँ, गुरुवर-गुरुवर, जो वीतराग मय रूप तेरा।
उस रूप मेरा आकार कर दो....।।3।।
जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।
तू है मंदिर तू है मस्जिद, विशद ज्ञान की शाला है।।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, जो नित्य निरंजन रूप मेरा।
वह निराकार आकार कर दो....।।4।।

भजन : कौन सुनेगा

कौन सुनेगा किसको सुनायें, इसलिए चुप रहते हैं।
हमसे अपने रूठ न जायें, इसलिए चुप रहते हैं।।
अति संघर्ष भरे जीवन से, दिल मेरा घबराया है।
गैरों की क्या कहें हमें तो, अपनों ने ही भरमाया है।।

राज ये दिल का-2 खुल न जायें- इसलिए......
हँसता खिलता जीवन मेरा, जाने कहाँ पर खो गया।
फूल भरी राहों पर मेरी, कौन ये काँटा बो गया।।
पग ये आगे कैसे बढ़ायें- इसलिए .....
मेरे जीवन की वीणा में, तार दुःखों का जोड़ दिया।
आये थे तेरे पास में तुमने, मुख क्यों अपना मोड़ लिया।।
टूटी ये वीणा-2 कैसे गायें- इसलिए.......
संयम देकर तुमने मुझको, अपने से क्यों दूर किया।
गम में तड़पते रहने को मुझे, तुमने क्यों मजबूर किया।।
दर्द विरह का-2 किसको दिखाये- इसलिए......
तुमसे दूर होकर गुरुवर, गम में गोते लगाते हैं।
दुनियाँ वाले जान न पायें, अधर मेरे मुस्कराते हैं।।
आँख से आँसू-2, बह न जायें- इसलिए......

भजन : पलकें ही पलकें

पलकें ही पलकें बिछायेंगे, जिस दिन प्यारे गुरुवर यहाँ आयेंगे।
मीठे-मीठे भजन सुनायेंगे, जिस दिन प्यरे गुरुवर यहाँ आयेंगे।
घर का कोना कोना हमने, फूलों से सजाया है-2
तोरण द्वार बंधे हैं घर-घर, घी का दीप जलाया है-2
भक्त जनों को, बुलायेंगे, जिस दिन........
मन वच तन से गुरु का वंदन, करके चरण पखारूँ
धूप दीप का थाल सजा ले, मैं भी आरती उतारूँ

भक्ति के रस में, समायेंगे, जिस दिन..........
अब तो लगन एक ही स्वामी, प्रेम सुधा बरसा दो।
जन-जन की मैली चादर, अपने रंग रंगा दो
जीवन को सफल बनायेंगे, जिस दिन ....

भजन : नव वर्ष आया

(तर्ज : आया कहाँ से कहाँ .....)

नव वर्ष आया खुशियों को लाया, नये गीत गाओ भाई
नये गीत गाओ, ताली बजाओ भाई ताली बजाओ....
नये वर्ष में नये फूलों का, हमको बाग लगाना है।
नये गुणों को पाकर अपना, जीवन नया बनाना है।
नव वर्ष आया, गुरुवर को पाया, नये गीत गाओ भाई...।।
देवशास्त्र गुरु की भक्ति कर, अतिशय पुण्य कमाना है।
मूलगुणों का पालन करके, सत् श्रावक बन जाना है।
मन में ये आया- गुरु ने बताया, नये गीत गाओ भाई....।।
नये वर्ष पाकर कई हमने, व्यर्थ कार्य में गंवा दिए।
शुभम् सुहित के काम आज तक, हमने शायद नहीं किए।
नव वर्ष पाया, नव हर्ष छाया, नये गीत गाओ भाई....।।
नये वर्ष की नई खुशी में, दीपक नये जलाना है।
बिछुड़े हुए हमारे बंधु, मंदिर उनको लाना है।
कभी न आया, उसको बुलाना, नये गीत गाओ भाई....।।

पूजा भक्ति तीर्थ वन्दना, करके हर्ष मनाएँगे।
विशद गुणों को पाकर जीवन, फूलों सा महकायेंगे।
मन में ये आया, सब से बताया, नये गीत गाओ भाई....।।

भजन : प्रभु पारस की बोलो

प्रभु पारस की बोलो जयकार, सभी जय जय बोलो
बोलो-बोलो सभी जयकार, सभी जय जय बोलो
जिसने प्रभु को मन से ध्याया, भक्ति भाव से शीष झुकाया
हो गया भव से पार-प्रभु की जय बोलो- प्रभु पारस.....1
जो भी प्रभु की शरण में आते, पार्श्व प्रभु के गुण को गाते
पाते सौख्य अपार-प्रभु की जय बोलो- प्रभु पारस.......2
दीनदुखी दुख हरने वाले, जग का मंगल करने वाले
इस जग के आधार-प्रभु की जय बोलो-प्रभु पारस........3
प्रभु हैं मोक्ष मार्ग के दाता, सर्व चराचर के हैं ज्ञाता
विशद ज्ञान के हार-प्रभु की जय बोलो- प्रभु पारस......4

भजन : कर तू गुरु गुणगान

कर तू गुरु गुणगान भाई, कर तू गुरु गुण गान।
हो जाए कल्याण भाई, हो जाए कल्याण।।
गुरु के गुण को गाने वाला, गुरु गुण को पा जाता है।
कर्म करे इन्सान शुभाशुभ, उसके फल को पाता है।।
कर ले तू श्रद्धान भाई, कर ले सद् श्रद्धान......1

धर्म अहिंसा पालन करना, महावीर की वाणी है।
पाप कहा पर को दुख देना, कहती ये जिनवाणी है।।
देना जीवन दान भाई, देना जीवन दान.....2
सत्य वचन औषधि परम है, जख्म हृदय के भरते हैं।
झूठ वचन के कारण प्राणी, दुःख पाकर के मरते हैं।।
रखना तू यह ध्यान भाई, रखना तू यह ध्यान....3
पर के धन को हरने वाला, पर का जीवन घाती है।
व्रत अचौर्य है चोरी जग में, नहीं किसी को भाती है।
चोर कहा नादान भाई, चोर कहा नादान.....4
भोगी भोग में रत रहकर के, जग में गोते खाता है।
ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से, परम ब्रह्म बन जाता है।।
हो जाता भगवान भाई, हो जाता भगवान...5
संग्रह वृत्ति से भूखे कई, लोग जहाँ में रहते हैं।
पाप कमाते विशद जहाँ में, महावीर ये कहते हैं।।
दान से हो सम्मान भाई, दान से हो सम्मान.....6

भजन : सोना चांदी छोड़ के

(तर्ज–चांदी जैसा रंग है....)

सोना चांदी छोड़ के गुरुवर, हो गये आप निहाल,
धन वाले कंगाल हो गुरुवर, आप हो मालामाल।।टेक।।
जिस रस्ते से तुम गजरे, वह मारग धन्य कहाये–2
एकबार देखा जिसने, जीवन की ज्योत जगाय।

छोड़ आडम्बर बने दिगम्बर-2, काटे सब जंजाल।।
धनवाले..........।।1।।

तप का प्याला तोड़ तिजोरी, भरे हैं रत्न अपार-2
सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित का, भरा हुआ भण्डार।
जिसने खोजा उसने पाया-2, वे कीमत के लाल।।
धनवाले..........।।2।।

एकबार आहार विधि से, अंतराय को टाल-2
मर जाये न जीव पांव से, चलते ऐसी चाल।
विशद सागर नाम तुम्हारा-2, श्री नाथूराम के लाल।
धनवाले..........।।3।।

भजन : बाहुबलि भगवान का

(मस्तकाभिषेक)

बाहुबलि भगवान का मस्तकाभिषेक-2,
धन्य-2 वे लोग यहाँ जो आज रहे सिर टेक।।
मस्तकाभिषेक, महा मस्तकाभिषेक।।टेक।।
पर्वत पर नर-नारी चले, कलशों में नीर भरें।
होड़ लगी अभिषेक प्रभु का, पहले कौन करे।।
नीर क्षीर की बहती धारा, फिर भी ना भीगा तन सारा।
ऐसी अन्य विशाल मूर्ति का, कहीं नहीं उल्लेख।।
मस्तकाभिषेक, बाहुबलि भगवान.....।।1।।

ऐसा ध्यान लगाया प्रभु को, रहा नहीं ये भी ध्यान।
किस-2 ने चरणार विन्द मैं बना लिया स्थान।।
बात उन्हें यह भी न पता थी, तन लिपटी माधवी लता थी।
ये लाखों में एक नहीं है, दुनिया भर में एक।।
मस्तकाभिषेक बाहुबलि भगवान .....।।2।।
महक रहे चन्दन केसर की, पुष्पों की झड़ी लगी।
देखने को यह दृश्य भीड़, वहाँ कितनी बड़ी लगी।।
ऐसी छटा लगे मन भावन, फागन बन हरसे जो सावन।
हाथ यहाँ वे जुड़े जिन्होंने, जोड़े पुण्य अनेक।।
मस्तकाभिषेक, बाहुबलि भगवान .....।।3।।
बीते वर्ष सहस्र मूर्ति ये, कब की खड़ी हुई।
खड़े तपस्वी का प्रतीक बन, कब की खड़ी हुई।।
श्री चामुण्डराय की माता, इसका श्रेय उसी को जाता।
उनके लिए गढ़ी प्रतिमा से, लाभान्वित प्रत्येक।
मस्तकाभिषेक, बाहुबलि भगवान .....।।4।।

भजन : दयालु प्रभु से

दयालु प्रभु से, हम दया माँगते हैं।
अपने दुखों की, दया माँगते हैं।।टेक।।
नहीं हमसा कोई, अधम और पापी।
सत्कर्म हमने, किये न कदापि।
किये नाथ हमने हैं, अपराध भारी।।

उनकी हृदय से, हम क्षमा माँगते हैं।
दयालु प्रभु से, हम......।।1।।
प्रभु तेरी भक्ति में, मन यह मगन है।
निजात्म चिन्तवन की, हर दम लगन हो।।
मिले सत्य संयम, करे आत्म चिन्तन।
वरदान भगवन हम, सदा माँगते हैं।।
दयालु प्रभु से, हम........।।2।।
दुनियाँ के भोगों की, ना कुछ कामना है।
स्वर्ग के सुखों की, ना कुछ चाहना है।।
यही एक आशा है, बन जावे तुमसा।
दास कुछ पैसा न, टका माँगते हैं।।
दयालु प्रभु से, हम ....।।3।।

भजन : ऐ हिन्द देश के लोगो

गौ हत्या ताण्डव
तर्ज–ए मेरे वतन के लोगों....
ऐ हिन्द देश के लोगों, मेरी सुन लो करुण कहानी
क्यों दया धर्म ठुकराया, क्यों दुनियाँ हुई दिवानी।।
हे हिन्द......।।टेक।।
मैं सबको दूध पिलाती, मैं गऊमाता कहलाती।
क्या है अपराध हमारा–2, जो काटे आज कषाई।

बस भीख प्राण की देदो, मैं घर तुम्हारे आई।।
मैं सबसे निर्मल प्राणी, मत करो अप मन मानी।
हे हिन्द......।।1।।
जब जाऊँ कषाई खाने, भूख से मैं तड़फाती।
उस उबलते जल को तन पर-2, मैं सहन नहीं कर पाती।।
जब यन्त्र मौत का आता, मैं हाय-2 चिल्लाती।
मेरा साथ न कोई देता, यह सबकी प्रीत पहचानी।
हे हिन्द ...।।2।।
उस सम दर्शी ईश्वर ने, क्यूँ हमको पशु बनाया।
न हाथ लड़ने को है, हिन्द भी हुआ पराया।।
अब कोई मोहन बन जाओ रे-2, जो मुझको कंठ लगाये।
मैं कर्ज निभाऊँ माँ का, पर जग में प्रीत न जानी।।
हे हिन्इ ...।।3।।
मैं माँ बन दूध पिलाती, तु माँ का मांस भी खाते।
क्यों जननी के चमड़े से, तुम पैसे आज कमाते।।
क्यों बछड़े अन्न उपजाते-2, पर तुम सब दया न लाते।
गौ हत्या बंद करो रे-2, रहने दो वंश निशानी-2।।
हे हिन्द ...।।4।।

भजन : पीछी रे पीछी इतना बता

(तर्ज-माईरे माई ....)

पीछी रे पीछी इतना बता, तूने कौनसा पुण्य किया है।
गुरुवर ने खुश होकर के, हाथों में थाम लिया है।।
पीछी बोलो ना.....3 ।।टेक।।

तेरी किस्मत सबसे अच्छी, गुरुवर ने अपनाया
गुरुवर तूझसे प्यार करे, क्यों कोई जान न पाया,
पीछी और कमण्डल का-2, कैसा संयोग मिला है।।
गुरुवर ने खुश.......।।1।।

मोर पंख से बनी है पीछी, सुन्दरता बतलाती,
अपने कोमल पंखों से, जीवों के प्राण बचाती-2।
गुरुवर की कृपा होने से-2, जग में नाम किया है।।
गुरुवर ने खुश.....।।2।।

जैसे अपनाया पीछी को, मुझको भी अपनालो,
मुझको अपनी पीछी समझकर, अपने गले लगालो।
हम सबने भी भेद अनोखा, पीछी से जान लिया है।।
गुरुवर ने खुश.....।।3।।

भजन

(तर्ज-बाई चालि सासरिये......)

वीरा तेरे चरणों को, कहाँ छोड़ के जाना है।
सारा जग झूठा है, सच्चा तेरा ठिकाना है।।टेक।।
जग के रिश्ते-नाते, तो चार दिनों के हैं।

तेरा मेरा नाता तो, सदियों से पुराना है।।
वीरा तेरे.....।।1।।
हम भी नित आते हैं, तेरे दर्शन को मन्दिर में।
बाबा तेरा गन्धोदक, आंखों से लगाना है।।
वीरा तेरे.....।।2।।
काहे को तू रोता है, इस नश्वर काया को।
चौला तो बदलना है, मरना तो बहाना है।।
वीरा तेरे.....।।3।।
वीरा तेरी वाणी सुन, लाखों तिर गये भव सागर से।
मैं भी तेरा नाम जपूँ, मुझको भी तर जाना है।।
वीरा तेरे.....।।4।।

भजन : प्रभुवर तू है चन्दा

(तर्ज–सावन का महिना पवन करे शोर)
प्रभुवर तू है चन्दा, हम भक्त हैं चकोर।
प्रभु दर्शन को पाकर, मेरा झूम रहा मन मोर।।टेक।।
नैया खिवैया तुम, पार लगैया।
किनारे लगा दो प्रभुवर, मेरी ये नैया।।
मांझी तुम हो मेरे, संभालो मेरी डोर।
प्रभुवर तू है...।।1।।
कमठ का तूने, मान मिटाया

अज्ञानी को तूने, ज्ञान सिखाया।
मानी के तेरे आगे, चले ना कोई जोर।।
प्रभुवर तू है....।।2।।
आया है प्रभुवर, जो भी तेरी शरण
दर्शन तेरा पाकर, खो गया मनवा।
दृष्टि अपनी प्रभुवर, रखना मेरी ओर।।
प्रभुवर तू है....।।3।।

भजन : जब कोई नहीं आता

जब कोई नहीं आता, मेरे बाबा आते हैं।
मेरे दुःख के समय में वो, बड़े याद आते हैं।।टेक।।
मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं होती,
किसी और की अब मुझको, दरकार नहीं होती।
मैं डरता नहीं रस्ते, सुनसान आते हैं।।
मेरे दुःख के.....।।1।।
ये इतने बड़े होकर दीनों से प्यार करें,
अपने भक्तों के दुःख, पल में स्वीकार करें।
हम भक्तों का कहना, ये मान जाते हैं।।
मेरे दुःख के ....।।2।।
कोई याद करे इनको, दुःख हलका हो जाये,
कोई भक्ति करे इनकी, ये उनके हो जाये।

ये बिन बोले दुःख को, पहचान जाते हैं।।
मेरे दुःख के .....।।3।।

भजन : भोले भाले भगवन मेरे

भोले भाले भगवन मेरे, मौन लिये क्यों बैठे हो।
भूल हुई क्या हमसे भगवन, क्यों तुम हम से रूठे हो।।टेक।।
आँख खोलकर देखो भगवान, क्या हम तुम्हें चढ़ाते हैं।
इतनी मेहनत से हम आते, क्यों फिर हमें रूलाते हो।
भोले-भोले.....।।1।।
मैं अज्ञानी तुम हो ज्ञानी, ज्ञान हमें तुम दे देना।
बन जाऊँ मैं तुमसा प्रभुवर, आशीष हमें यह दे देना।।
भोले-भोले.....।।2।।
इतनी शक्ति दो हे गुरुवर, गुण गान करूँ मैं तेरा।
हाथ जोड़ मैं करूँ वन्दना, उद्धार करो तुम मेरा।।
भोले-भोले....।।3।।

भजन : बाजे कुण्डलपुर में बधाई

बाजे कुण्डलपुर में बधाई-2,
कि नगरी में वीर जन्में-2 महावीर जी।।टेक।।
होऽऽऽ जागे भाग्य हैं त्रिशला माँ के-2
कि त्रिभुवन के नाथ जन्में-2 महावीर जी।।1।।

होऽऽऽ शुभ घड़ी जनम की आई-2
कि स्वर्ग के देव आये-2 महावीर जी।।2।।
होऽऽऽ तेरा न्हवन करें मेरू पर-2,
कि इन्द्र जल भर लाये-2 महावीर जी।।3।।
होऽऽऽ तुझे देवियाँ झुलावें पलना-2,
कि मन में मगन हो के-2 महावीर जी।।4।।
होऽऽऽ तेरे पलने में हीरे मोती-2,
कि डोरियाँ में लाल लटके-2 महावीर जी।।5।।
होऽऽऽऽ तेरे पिता लुटाए मोहरें-2,
खजाने सारे खुल जायेंगे-2 महावीर जी।।6।।
होऽऽऽ हम दर्शन को तेरे आये-2,
कि पाप सारे कट जायेंगे-2 महावीर जी।।7।।

भजन : मेरा आपकी कृपा से

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है-2।
करते हो तुम प्रभुवर, मेरा नाम हो रहा है।।टेक।।
पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है,
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है-2।
करता नहीं कुछ भी, सब काम हो रहा है।।
मेरा ....।।1।।
तुम साथ हो तो मेरे किस चीज की कमी है,

किसी और चीज की अब, दरकार नहीं है–2।
तेरे साथ से मेरा गुलज़ान, ये गुलकाम हो रहा है।।
मेरा ....।।2।।
मैं तो नहीं हूँ काबिल तेरा पार कैसे पाऊँ,
टूटी हुई वाणी से, गुणगाण कैसे गाऊँ।
तेरी ही प्रेरणा से, ये कमाल हो रहा है।।
मेरा ....।।3।।

भजन : धन्य धन्य आज घड़ी

धन्य–2 आज घड़ी कैसी सुखकार है–2
आनन्द अपार है जी, आनन्द अपार है।।टेक।।
खुशियाँ अपार आज, हर दिल में छाईं हैं,
दर्शन के हेतु सब, जनता अकुलाई है।
चारों ओर देख लो, भीड़ बेशुमार है,
आनन्द अपार है जी, आनन्द अपार है।।1।।
भक्ति से नृत्य गान कोई है कर रहे,
आतम सुबोध कर, पापों से डर रहे।
पल–2 पुण्य का, भरे भण्डार है
आनन्द अपार है जी, आनन्द अपार है।।2।।
जय–जय के नाद से, गूँजा आकाश है
छूटेंगे पाप सब, निश्चय ये आज है।

देख लो विशाल खुला, आज मुक्ति द्वार है।
आनन्द अपार है जी, आनन्द अपार है।।3।।

भजन : पवन उड़कर ले गयी रे

(तर्ज– ऊँचे–ऊँचे शिखरों...)

पवन उड़ाकर ले गयी रे, भक्तों की चुनरियाँ।
भक्तों की चुनरियाँ, ओ भक्तों की चुनरियाँ।।टेक।।
उड़–2 चुनरियाँ कैलाश गिरि में पहुँची।
आदि प्रभु को भा गई रे भक्तों की चुनरियाँ।।1।।
उड़–2 चुनरियाँ तिजारा में पहुँची।
चन्द्रप्रभु को भा गई रे, भक्तों की चुनरियाँ।।2।।
उड़–2 चुनरियाँ पावापुर में पहुँची।
महावीर प्रभु को भा गई रे, भक्तों की चुनरियाँ।।3।।
उड़–2 चुनरियाँ चम्पापुर में पहुँची।
वासुपूज्य प्रभु को भा गई रे, भक्तों की चुनरियाँ।।4।।

जिनवाणी स्तवन

जिनवाणी जग मैय्या जनम दुःख मेट दो।
जनम दुख मेट दो, मरण दुख मेट दो।।
जिनवाणी जग मैय्या, जनम दुख मेट दो।।टेक।।
कुन्दकुन्द से पुत्र तुम्हारे, गणधर जैसे भैय्या।

समोसरण सा महल तुम्हारा, तीर्थंकर जैसे सैय्या।।
जिनवाणी.....।।1।।
बहुत दिनों से भटक रहा हूँ, ज्ञान बिना मैं मैय्या।
निर्मल ज्ञान प्रदान जो कर दो, तुम हो सच्ची मैय्या।।
जिनवाणी.....।।2।।
गुणस्थान का अनुभव हमको, हो जावेगा मैय्या।
मोक्ष मार्ग पर चलें क्रम-2 से, ऐसे कर्म खिपैया।।
जिनवाणी.....।।3।।
जनम मरण दुख मेट हमारा, इतनी विनती मैय्या।
तुमको शीष नमावैं हम सब, तुम हो सबकी मैय्या।।
जिनवाणी.....।।4।।

जिनाभिषेक स्तवन

अमृत से गगरी भरो, कि आज प्रभो न्हवन करेंगे।
खुशी-2 मिल के चलो कि, आज प्रभो न्हवन करेंगे।।टेक।।
सब सखियाँ साज सजाओ, मंगलकारी गीत सुनाओ।
मन में आनन्द भरो कि, आज प्रभो न्हवन करेंगे।।
अमृत..........।।2।।
पूर्ण कलश प्रभु उदकन धारा, अंग नह्वनें जिनवर प्यारा।
स्वामी जगत दुख हरो, कि आज प्रभो न्हवन करेंगे।
अमृत.............।।3।।

है सुखकारी सब दुक्खहारी, सेवा जिनकी प्यारी-2।
ले कर जल को चलो, कि आज प्रभु नह्वन करेंगे।
अमृत..........।।4।।

भजन

प्रभु पतित पावन मैं अपावन, चरन आयो सरन जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरन जी।।
तुम ना पिछान्या आन मान्या, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जाण्यों, भ्रम गिण्यो हितकार जी।।
भव विकट वन में करम बैरी, ज्ञानधन मेरो हरयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।
छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरे।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरे।।
मिट गयो हर्ष ऐसी भयो, मनु रंक चिन्तामणि लयो।
मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊँ तुम चरण जी।।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन सुनहु तारन तरण जी।
बुध जाचहूँ तुम भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथ जी।।

प्रार्थना

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिये।।
सुर असुर जिनेन्द्र की महिमा को नहीं गा सके।

और गौतम स्वामी न महिमा का पार सके।।
जय जिनेन्द्र बोलकर जिनेन्द्र शक्ति तोलिये।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये।।
जय जिनेन्द्र ही हमारा एक मात्र मंत्र हो।
जय जिनेन्द्र बोलने को हर मनुज स्वतंत्र हो।।
जय जिनेन्द्र बोल बोल खुद जिनेन्द्र हो लिये।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये।।
पाप छोड़ धर्म जोड़ ये जिनेन्द्र देशना।
अष्ट कर्म को मरोड़ ये जिनेन्द्र देशना।।
जाग जाग जाग चेतन बहुकाल सोलिये।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये।।
हे जिनेन्द्र ज्ञान दो मोक्ष का वरदान दो।
कर रहे हैं प्रार्थना हम, प्रार्थना पर ध्यान दो।।
जय जिनेन्द्र बोलकर, हृदय के द्वार खोलिये।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये।।

भजन : गुरुवर नाम तुम्हारा

(तर्ज : जनम जनम का साथ है..)

रोम रोम से निकले गुरुवर, नाम तुम्हारा हो नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूँ गुरु मैं, न हो जनम दुबारा।।टेक।।
मात पिता तुम मेरे, सच्चे मित्र हमारे -2।

सारी दुनियाँ छोड़, आये तेरे द्वारे-2।।
जनम-जनम तक ना भूलूँगा, ये एहसान तुम्हारा।
रोम रोम से निकले............।।1।।
मन मंदिर में आके, ज्ञान की ज्योति जलाएँ।
रोग दुःख व बाधा, पलभर में मिट जाए।।
भक्ति में शक्ति है ऐसा कहता है जग सारा।
रोम रोम से निकले.............।।2।।
बन के दिगम्बर साधु, आतम ध्यान लगाये।
ऐसी शक्ति दे दो तुम जैसा बन जाये।।
जनम जनम तक न भूलूँगा, यह अहसान तुम्हारा।
रोम रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा हो नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूँ गुरु मैं, न हो जनम दुबारा।।
रोम रोम से निकले..........।।3।।

भजन : गुरु का आवन

(तर्ज : झिलमिल सितारों का आंगन होगा....)
खुशियों से भरा मेरा आंगन होगा,
विशदसागर जी का आवन होगा।
मेरे आंगन में कब, समकित सावन होगा।।टेक।।
आयेंगे महाराज तो हम, खुशियाँ मनायेंगे।
हीरे मोती से आंगन, चौक हम पुरायेंगे।।

घर घर में सावन होगा।
बाहुबली जी का आवन होगा।।1।।
होगा जब आहार गुरु का, गद गद हो पड़गाहेंगे।
दे आहार स्वयं हाथों से, जीवन सफल बनायेंगे।।
जन जन का मन भावन होगा।
विशदसागर जी का आवन होगा।।2।।
चरण वंदना करके गुरु की, श्रद्धा सुमन चढ़ाऊँगा।
बैठे गुरु के चरण कमल में, भक्ति गीत सुनाऊँगा।।
भव भव में आवन न जावन होगा
विशदसागर जी का आवन होगा।।3।।

भजन

(तर्ज : यशोमति मैय्या से बोले नन्दलाल....)
सरस्वती मैय्या से पूछें नरनारी।
भटक रहे हम क्यों संसारी।
बोली समझाती मैय्या, वाणी रस पिलाती।
जीव है अकेला जग में, कोई नहीं साथी।
फिर भी है ममता पर में, ओ ओ ओ।
फिर भी ममता पर में, आतम विसारी।
यूँ भ्रमैं संसारी।।1।।
बोली समझाती मैय्या, कठिन भव है पाया।

फिर भी न इसका कोई, लाभ है उठाया।
तेरा मेरा करते करते, ओ ओ ओ।
तेरा मेरा करते करते, बीते उम्र सारी।
सहे दुःख भारी...।।2।।
कुल जैन पाया पर, ना जिन धर्म जाना।
प्रभु वच सुन, ना पहिना, संयम का बाना।
कर्मों की डाली बेड़ी, ओ ओ ओ।
कर्मों की डाली बेड़ी, पाव में है भारी।
सरस्वती मैया से पूँछे....।।3।।

भजन

(तर्ज : दीदी तेरा देवर दीवाना..)
जैनी होके, पानी न छाना, हायराम! रातों में खाये खाना।
पापों में ना खुद को रमाना, नादान! नरकों में होगा जाना।
जैनी होके, पानी न छाना....।।टेक।।
जब बिजली जलेगी, पंतगे उड़ेंगे
उड़ उड़ के थाली में तेरे पड़ेंगे।
फिर भी लागे तुझको सुहाना,
हाय राम, रातों में खाये खाना।
जैनी होके, पानी न छाना.....।।1।।
सोचा था कि भोगों से प्यास बुझेगी।

मगर ये ना जाना कि अब और बढ़ेगी।
भोगों में गर खुद को फंसाया।
नादान, नरकों में होगा जाना।
जैनी होके, पानी न छाना....।।2।।
प्रभु की शरण ही, दुखों से बचावें।
प्रभु की शरण ही, कर्म को नशावें।
नरकों से गर खुद को बचाना।
रातों में खाना, ना खाना।
जैनी होके, पानी न छाना....।।3।।

भजन : माताजी दीक्षा दे दो

माताजी दीक्षा दे दो, चलूँगी तुम्हारे साथ-2।
महलों में रहने वाली, तुझे जंगल लगे उदास।
जंगल में गुजर करूँगी, चलूँगी तुम्हारे साथ।।
पूड़ियों को खाने वाली, तुझे रोटी लगे उदास।
रोटी पर गुजर करूँगी, चलूँगी तुम्हारे साथ।।
बिस्तर की सोने वाली, तुझे धरती लगे उदास।
धरती में गुजर करूँगी चलूँगी तुम्हारे साथ।।
पिक्चर को देखने वाली, तुझे मंदिर लगे उदास।
मंदिर में गुजर करूँगी, चलूँगी तुम्हारे साथ।।
उपन्यास को पढ़ने वाली, तुझे शास्त्र लगे उदास।

शास्त्रों में गुजर करूँगी, चलूँगी तुम्हारे साथ।।

भजन होली खेले मुनिराज

होली खेले मुनिराज अकेले वन में।
काहे का रंग काहे की पिचकारी।।
काहे गुलाल उड़ाये वन में। होली खेले मुनिराज....।।1।।
समता रंग क्षमा की पिचकारी। ज्ञान गुलाल उड़ाये वन में।।
होली खेले मुनिराज....।।2।।
काहे की कीच काहे का गारा। काहे की धूल उड़ाये वन में।।
होली खेले मुनिराज....।।3।।
धर्म की कीच ज्ञान का गारा। कर्मों की धाूल उड़ाये वन में।।
होली खेले मुनिरा....।।4।।
ऐसे होली हो कोई खेले। पाप कटे उसके क्षण में।।
होली खेले मुनिराज अकेले वन में....।।5।।

भजन : समझाया वीर न माना

(चाल : श्री वीतराग भगवन)
चल छोड़ दिया घरबार कुटुम्ब परिवार धार मुनिबाना
समझाया वीर न माना।।टेक।।
माता अति रुदन मचाती है यो बार बार समझाती है
बेटा कुछ दिन पीछे ही वन को जाना

समझाया वीर न माना।।1।।
बोले माता क्यों रोती है जो होनहार से होती है
उठ गया मेरा इस घर से पानी दाना
समझाया वीर न माना।।2।।
सिद्धार्थ नृप समझाते यों बेटा तुम वन को जाते क्यों
क्या घर में है कुछ कमी हमें बतलाना
समझाया वीर न माना।।3।।
मेरा घर से कुछ काम नहीं पलभर लूँगा आराम नहीं
बस सोते हुए जगत को मुझे जगाना
समझाया वीर न माना।।4।।
मेरी है वृद्ध अवस्था घर की करे कौन व्यवस्था
ले राजपाट तू सब पर हुकुम चलाना
समझाया वीर न माना।।5।।
यहाँ खून से होली खिलती है,
हिंसा की ज्वाला जलती है
यह दृश्य देखकर हृदय मेरा आकुलाता
समझाया वीर न माना।।6।।

भजन : उड़ा जा रहा है पंछी

विदाई गीत

(तर्ज : झिलमिल सितारों का....)

उड़ा जा रहा है पंछी, हरी भरी डाल से।
रोको रे रोको कोई, गुरु को विहार से-2।।तर्ज।।
सोचा कभी ना हमने, आके जगाओगे।
ओर जगा के हमें, यूँ ही छोड़ जाओगे।।
दान देना जीवन का तुम, फिर से पधार के।।1।।
रोको रे रोको....।।
गुरुवर तेरी वाणी मन को भाती।
रातदिन गुण मैं गाऊँ, शांति दिलाती।।
हमें छोड़ जाना नहीं, हम हैं पुकारते।।2।।
रोको रे रोको....।।
अनुपम सिंधु तुम हो कहाते।
भव्य जनों को तुम मोती बनाते।।
दया सिंधु दया करना, धर्म को बताय के।।3।।
रोको रे रोको....।।
वर्षायोग को जब थे आये।
सबके मन में दीप जलाये।।
दीप को बुझाना नहीं ज्योति लगाय के।।4।।
रोको रे रोको....।।
संघ में आपके जितने हैं साधू जी।
हो गई है जो भी गलती करना हमें माफ जी।।
सभी लोग मन से यही पुकारते।।5।।

रोको रे रोको....।।

भजन : चाँदी सोना छोड़ के गुरुवर

(तर्ज : चाँदी जैसा रंग है तेरा....)

चाँदी सोना छोड़ के गुरुवर, हो गए आप निहाल।
धनवाले कंगाल है गुरुवर, तुम हो मालामाल।।टेक।।
जिस रास्ते से तुम गुजरो, वह मारग धन्य कहाय।
एक बार जो देखे तुमको, जीवन ज्योति जगाय।।
छोड़ परिग्रह बने दिगम्बर, छोड़े सब जंजाल।
धन वाले कंगाल हैं गुरुवर....।।1।।
चाँदी सोना ...।।
तप का ताला त्याग तिजोरी, भरे है रत्न अपार।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण का, भरा हुआ भंडार।।
जिसने खोया उसने पाया, ये बेकीमत लाल।।2।।
चाँदी सोना ...।।
एक बार आहार विधि से, अंतराय को टाल।
जीव नहीं मर जाए पाँव से, चलते ऐसी चाल।।
विशदसागर है नाम तुम्हारा इन्दर माँ के लाल।
धनवाले कंगाल हैं गुरुवर....।।3।।
चाँदी सोना ...।।
जब से दर्शन पाये मैंने, जीवन सफल बनाया।

विशदसागर गुरुवर चरणों, अपना शीश नवाया।।
भक्ति से सब गीत हैं गाते, आए तेरे द्वार।
धन वाले कंगाल हैं गुरुवर....।।4।।
चाँदी सोना ...।।

भजन : उद्धार कैसे होता हमारा

(तर्ज : अगर तुम न होते....)
उद्धार कैसे होता हमारा, अगर तुम न होते।
गुरुजी तुम्हारा, सहारा न मिलता।।
भंवर में ही रहते, किनारा न मिलता।
दिखाई न देती, अंधेरों में मंजिल।।
उद्धार कैसे हो.......।।1।।
करके दरश तो, लगता है ऐसे।
महावीर फिर से, आये हों जैसे।।
पंचमकाल के, महावीर हो तुम।
विशद सागर गुरुजी हमारे।।
उद्धार कैसे हो.......।।2।।
दया इतनी कर दो, हम पे ये गुरुवर।
कल्याण होवे, बने आप जैसे।।
बने आप जैसे, यही भावना है।
उद्धार कैसे हो.......।।3।।

भजन

गुरुवर आज मेरी कुटिया में आये हैं।
मुनिवर आज मेरी कुटिया में आये हैं।।
चलते-फिरते तीर्थ पाये हैं।। मुनिवर...।।
अत्रो-अत्रो तिष्ठो-तिष्ठो, भूमि शुद्धि करके मुनि को बताए हैं।
श्रावक वन्दन चौकी बिछाए, मुनिवर आज मेरी....।।
प्रासुक जल से चरण पखारे हैं, गंधोदक पा मन भाग संवारे हैं।
शुद्ध भोजन के ग्रास बनाए हैं, मुनिवर आज मेरी...
संत जिनके करीब होते हैं वो बड़े खुश नसीब होते हैं।
जो भी चरणों में इनके आता है, गुरुवर शुभ आशीष देते हैं।।
गुरुवर आज मेरी....।।
हाथ कमण्डल बगल में पिच्छी है।
मुनिवर पै सारी दुनिया रीझी है।
आहार कराके नर-नारी हर्षाये हैं।
विशद के सागर जी ज्ञान बर्षाये हैं।
गुरुवर आज मेरी .....।।
नग्न दिगम्बर साधु बड़े न्यारे हैं।
जैन धर्म के यह ही सहारे हैं।
ज्ञान के सागर ज्ञान वर्षाये हैं।
मुनिवर आज मेरी....।।
चलते फिरते तीर्थ पाये है।।

भजन : श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजे भजे नाथ शीशं।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमो जोड़ हाथं, नमो देव देवं, सदा पार्श्वनाथं।।1।।
गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गहयो तू छुड़ावे, महा आगते नागतें तू बचावें।
महावीर ते युद्ध में तू जितावे, महा रोगते बंधते तू छुड़ावै।।2।।
दुखी दुखहार्ता सुखी सुक्ख कर्त्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्ता।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भव अवाचं।।3।।
दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबे संपदा सर्व को देहि दाता।।4।।
महाचोर को वज्र को भय निवारे, महापौन के पुंजतै तू उबारे।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ धारा, महालोभ शैलेश को वज्र भारा।।5।।
महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महा कर्म कांतार को दो प्रधानं।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी,हरयो मान तू दैत्य को ही अकामी।।6।।
तूही कल्पवृक्ष तूही कामधेनूं, तूही दिव्य चिंतामणि नाग एनं।
पशु नर्क के दुःखतै तू छुड़ावै, महास्वर्ग ते मुक्ति में तू बसावै।।7।।
करे लोह को हेम पाषाण नामी, रटे नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करे सेव ताकी करे देव सेवा, सुनै बैन सोही लहै ज्ञान मेवा।।8।।
जपै जाप ताको नहीं पाप लागे, धरे ध्यान ताके सवै दोष भागे।
बिना तोही जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा ते सारे काज मेरे।।9।।

दोहा– गणधर इन्द्र न कर सकै तुम विनती भगवान।
द्यानत प्रीति निहार कै, कीजै आज समान।।

भजन

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण पारस प्यारा
मेटो मेटो जी संकट हमारा।।
निशदिन तुमको जपूँ पर, से नेहा तजूँ, जीवन सारा
तेरे चरणों में बीते हमारा।।1।।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा
मेटो मेटो जी संकट हमारा।।2।।
जग के दुःख की तो परवाह नही है
स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है
मेटो जामन मरण होये ऐसा यतन पारस प्यारा
मेटो मेटो जी संकट हमारा।।3।।

समाधि भावना : दिनरात मेरे स्वामी

दिनरात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ।
देहान्त के समय में, तुमको न भूल जाऊँ।।ध्रुव।।
शत्रु अगर कोई हो, संतुष्ट उनको कर दूँ।
समता का भाव धरकर, सबसे क्षमा कराऊँ।।1।।
त्यागूँ आहार पानी, औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता में लाऊँ।।2।।
जागे नहीं कषायें, नहीं वेदना सताये।

तुमसे ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ।।3।।
आतम स्वरूप अथवा, आराधना विचारन।
अरिहंत सिद्ध साधु, रटना यही लगाऊँ।।4।।
धर्मात्मा निकट हो, चरचा धर्म सुनाये।
वह सावधान रखे, गाफिल न होने पाऊँ।।5।।
जीने की न हो इच्छा, मरने की न हो बांछा।
परिवार मित्र जन से, मैं राग को हटाऊँ।।6।।
भोगे जो भोग पहले, उनको न होवे सुमरण।
मैं राज्य सम्पदा वा, पद इन्द्र का न चाहूँ।।7।।
रत्नत्रय का पालन हो, अन्त में समाधि।
तन से ममत्व हटाकर, मुक्ति नगर को जाऊँ।।8।।
इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
निर्विकल्प हो समाधि, स्वर्ग मोक्ष सुख को पाऊँ।।9।।
हे नाथ अर्ज करता, विनती पर ध्यान दीजे।
होवे समाधि पूरी, जब प्राण तन से निकले।।10।।
तन धन से मोह तोडू, कर्मों को अब मरोडूँ।
अरिहंत सिद्ध बोलू, जब प्राण तन से निकले।।11।।
पुद्‌गल से नेह तोडू, आतम से नेह जोडूँ।
अंतिम समय है मेरा, शुद्धात्मा रस में खेलूँ।।12।।

भजन

दयालु प्रभु से दया माँगते हैं।
अपने दुःखों की, दवा माँगते हैं।।
नहीं हमसा कोई, अधम और पापी।
सत् कर्म हमने, ना किये हैं कदापि।
किये नाथ हमने, हैं अपराध भारी।
उनकी हृदय से, क्षमा माँगते हैं। दयालु...
दुनियाँ के भोगों की, ना कुछ चाहना है
स्वर्ग के सुखों की भी, ना कुछ कामना है
मिल सत् संयम, करे आत्म चिंतन
वरदान भगवन्, सदा माँगते हैं। दयालु....
प्रभु तेरी भक्ति में, मन यह मगन हो
निजातम के चिन्तन की, हरदम लगन हो
यही एक आशा है, बन जाये तुम से
यह सेवक नहीं, और कुछ माँगता है। दयालु....

भजन

छोटा सा मंदिर बनायेंगे वीर गुण गायेंगे।
वीर गुण गायेंगे महावीर गुण गायेंगे।। छोटा सा...
हाथों में लेकर, चाँदी के कलशे।
श्री जी का न्हवन करायेंगे। वीर गुण गायेंगे...
हाथों में लेकर पूजन की थाली।

श्री जी का पूजन करायेंगे। वीर गुण गायेंगे...
हाथों में लेकर घृत के दीपक।
श्री जी की आरती उतारेंगे। वीर गुण गायेंगे...
हाथों में लेकर झांझ और मंजीरा।
श्री जी का कीर्तन करायेंगे। वीर गुण गायेंगे...
छोटा सा मंदिर बनायेंगे वीर गुण गायेंगे।

भजन

चाल : तुझे देखकर जग वाले....
नाम तिहारा तारण हारा, कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।टेक।।
सुरनर मुनिजन, तुम चरणों में, निशदिन शीश झुकाते हैं।
नाम तिहारा तारण हारा....।।1।।
जो गाते हैं, तेरी महिमा, मन वांछित फल पाते हैं।
धन्य घड़ी, समझूँगा जिस दिन, जब तेरा शरणा होगा।।
दीन दयाला, करुणा सागर, जग में नाम तुम्हारा है।
भटके हुए, हम पथिकों का, प्रभु तू ही एक सहारा है।
भव से पार उतरने को, तेरे गीतों का सरगम होगा।
नाम तिहारा तारण हारा....।।2।।
तुमने तारे, लाखों प्राणी, ये संतों की वाणी है।
तेरी छवि पर, मेरे भगवन, ये दुनियाँ दीवानी है।

झूम झूम तेरी पूजा रचाये, मंदिर में मंगल होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।3।।
हम मन की मुरादें लेकर स्वामी, तेरी शरण में आये हैं।
हम हैं बालक, तेरी चरण के, तेरे ही गुण गाते हैं।
भव से पार उतरने को तेरे, गीतों का सरगम होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।4।।

भजन

तर्ज : चलत मुसाफिर मोह लिया रे...
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीरथ हमारा–2
तीरथ हमारा ये, जग से न्यारा–2
मधुबन मांही बरसे रे, अमृत की ये धारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीरथ हमारा–2
भाव सहित वन्दे जो कोई–2
ताही नरक पशु गति ना होई–2
उनके लिए खुल जाए रे सीधा स्वर्ग का द्वारा–2
स्वर्ग का द्वारा हो स्वर्ग का द्वारा, उनके लिए
खुल जाए रे सीधा स्वर्ग का द्वारा.....
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीरथ हमारा
जहाँ तीर्थंकर ने वचन उचारे–2
कोटि–कोटि मुनि मोक्ष पधारे–2

पूज्य परम पद पायो रे जन्में ना दुबारा–2
जन्में ना दुबारा वो जन्में ना दुबारा–2
पूज्य परम परम पद पायो रे जन्में ना दुबारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीरथ हमारा
हरे हरे वृक्षों की झूमें डाली–2
समोशरण की रचना निराली–2
पर्वत रात पे शीतल झरना बहता सु प्यारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीरथ हमारा
गुरुवर जी की आज्ञा पाकर–2
सारे जिनालयों में धोक लगाकर–2
करलो जो स्वीकार प्रभु ये वन्दन हमारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीरथ हमारा

भजन

तर्ज : परदेशी परदेशी जाना नहीं....
जिनमन्दिर जिनमन्दिर आना सभी।
कर जोड़ के ऽऽ घर छोड़ के।
जिनमन्दिर में सब आना, दर्शन पाना।
तुम याद रखना, कहीं भूल न जाना।
जिनमन्दिर, जिनमन्दिर आना सभी
कर जोड़ के ऽऽ घर छोड़ के।।टेक।।

जेठ बदी चौदस के दिन, तुम जन्म लिया।
नर नारी हर्षे मन में, तब हर्ष किया।
तेरे दरपे दर्शन करने आते हैं।
मन वांछित फल पाकर घर को जाते हैं।
जिनमन्दिर, जिनमन्दिर आना सभी
कर जोड़ के ऽऽ घर छोड़ के।।1।।
चार कषायों को तुमने, क्यों बांधा है।
इसलिए तो इन पापों को पाया है।
इन पापों को छोड़ के तुम तर जाओगे।
लौट के इस संसार में न तुम कभी आओगे।
जिनमन्दिर में आना हमें भी बुलाना।
तुम याद रखना ऽऽ कहीं भूल ना जाना।
जिनमन्दिर, जिनमन्दिर आना सभी
कर जोड़ के ऽऽ घर छोड़ के।।2।।
एक बार तेरे दर्शन कर आते हैं।
दर्शन करने को वापस हम आते हैं।
भक्तों की किस्मत में तेरी भक्ति है।
मुक्ति का दूजा नाम प्रभु तेरी भक्ति है।
जिनमन्दिर में अब आना ऽऽ दर्शन पाना।
तुम याद रखना, कहीं भूल न जाना।
जिनमन्दिर, जिनमन्दिर आना सभी।

कर जोड़ के ऽऽ घर छोड़ के।।3।।

भजन

रोम रोम से निकले प्रभुवर, नाम तिहारा, प्रभु नाम तिहारा।
ऐसा दो वरदान कि, फिर ना पाऊँ जन्म दुबारा।
रोम रोम से....।।

छोड़ न पाऊँ प्रभूजी पाँच ठगों का डेरा।
किसविध पाऊँ आखिर प्रभुजी दर्शन तेरा।
भटक न जायें ये बालक प्रभु, देना आन सहारा।
रोम रोम से......।।1।।

दिल से निशदिन प्रभूजी ज्योत जलाऊँ तेरी।
कब तक मन की होगी पूरी आशा मेरी।
इन नयनों से तेरी ज्योत का, देखा अजब नजारा।
रोम रोम से .....।।2।।

कोई न खाली जाये, तेरे दरसे प्रभुजी।
अपनी दया का हाथ तू, सर पै रख दे प्रभुजी।
तेरे दर हम आवे प्रभु, पाने दीदार तुम्हारा।
रोम रोम से ....।।3।।

भजन

तर्ज : झूठ बोले कोआ काटे....

मम्मी रूठे पापा रूठे, रूठे भाई और बहना।
मैं दीक्षा लेने जाऊँगी, तुम देखते रहना।।टेक।।
मानो बेटी बात हमारी, आयु अभी थोड़ी है।
इतनी आयु में क्यों बिटिया, त्याग से ममता जोड़ी है।।
हाँ दीक्षा में कष्ट घनेरे, तुमरे बस की न सहना।
मैं दीक्षा लेने जाऊँगी....।।1।।
कष्टों का ही नाम है जीवन, क्यों घबराती हो माता।
झूठे सांसारिक सुख हैं, और झूठा है अपना नाता।।
हाँ वीर के चरणों में बीते, मेरे दिन और रयना।
मैं दीक्षा लेने जाऊँगी....।।2।।
ऐसा न सोचो बिटिया, तुम बड़ी लाड़ से पली हो।
संपन्न है यह परिवार अपना, फिर भी कोठी खाली है।।
हाँ हम बेटी है बाप तुम्हारे, कहना मान लो अपना।
मैं दीक्षा लेने जाऊँगी....।।3।।
माँ का कहना मानो दीदी, हम सब तुम्हारी शरण खड़े।
कैसे मन को कहा करोगी, जब हम रोयेंगे खड़े खड़े।।
रक्षा बंधन जब आयेगा, मेरी याद आयेगी बहना।
मैं दीक्षा लेने जाऊँगी....।।4।।
समझाया सब घरवालों ने, कोई रहा नहीं बाकी।
बड़े भाई रोते आये, हाथ में लेके एक राखी।।
इसको बहना बांधत जाओ, यह है प्यार का गहना।।
मैं दीक्षा लेने जाऊँगी....।।5।।

भजन

हमको भी बुला लो भगवन्, सिद्धों के दरबार में।
सिद्धों के दरबार में हाँ, सिद्धों के दरबार में।।हमको...।।
चारों गति में फिरा भटकता, कभी न पाया पार मैं।
पशु बना तो बोझा ढोया, मूक रहा हर वार मैं।।हमको..।।
न चाहिए मुझे धोती कुर्ता, न चाहिए सलवार हमें।
नग्न दिगम्बर बनके स्वामी, वन-वन करूँ विहार मैं।।हमको.।।
न चाहिए मुझे मोटर गाड़ी, न चाहिए मुझे कार भी।
मुझको भी वह कार दिला दो, तुम बैठे जिस कार में।।
मोक्षपुरी का टिकट कटा दो, हो जाऊँ भव पार में।।हमको..।।

भजन

तर्ज : गहरी-गहरी नदियाँ नाव बिच धारा है....
धन्य-धन्य आज घड़ी, कैसी सुखकार है।
सिद्धों का दरबार लगा, सिद्धों का दरबार हैं।
खुशियाँ अपार आज, हर दिल में छाई हैं।
दर्शन के हेतु सारी, जनता अकुलाई है।।
चारों ओर देखो कैसी, भीड़ अपरम्पार है।
सिद्धों का ....।।1।।
जय जय के नाद से, गूँजा आकाश है।
पापों का नाश होगा, निश्चय ही आस है।।

देख लो विशाल खुला, आज मुक्ति द्वार है।

सिद्धों का....।।2।।

भजन

श्री सरस्वती के सुमरन से, मिटता भव-भव का फेरा।
है वन्दन तुमको मेरा।। टेक।।
जहाँ धर्म ध्यान अरु मोक्ष मार्ग का निशदिन रहता डेरा।
है वन्दन तुमको मेरा।
जिनके पद पंकज में झुकती है स्वर्ग लोक की बाला।
जिन की वाणी से आत्म कमल को, मिलती ज्ञान की धारा।।
जहाँ ज्ञान ध्यान तप लक्ष्मी का, निशदिन शाम सबेरा।।
है वन्दन तुमको मेरा।।
जिनके चरणों में आसमान के, तारे निशदिन गाते।
भक्ति भाव से देव इन्द्र नर, नारि शरण में आते।।
जिनके द्वारे पर सूर्य किरण का, लगता रहता पहरा।
है वन्दन तुमको मेरा।।
जिनकी वाणी से भव-भव का, मिथ्यात्व दूर भग जाता।
निज तत्त्व प्रकाश न हो करके, सम्यक्त्व पास में आता।।
है अनेकांत की निर्मल गंगा, तट में नर हंस बसेरा।
है वन्दन तुमको मेरा।।

भजनभजन

तर्ज : मंत्र जपो नवकार मनवा – मंत्र जपो नवकार...

पाँच पदों के पैतिस अक्षर, है सुख का आधार, मनवा।
अरिहंतों का सुमरन करले, सिद्ध प्रभु का नाम तू जप ले।
आचार्य सुखकार, मनवा....।।1।।
उपाध्याय को मन में ध्याले, सर्व साधु को शीश नवाले।
होवे भव से पार, मनवा....।।2।।
धन हीन सुख संपत्ति पाये, मन वांछित हर काम बनावे।
सुखी रहे परिवार, मनवा....।।3।।
रोग शोक को दूर भगावे, जनम जरामृत रोग मिटावे।
भय दुःख भंजन हार, मनवा....।।4।।

भजन

मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे–2
मखमल पर सोने वाले, भूमि पर पड़ते देखे
सरसों का दाना जिनके, बिस्तर पर चुभता था
काया की सूद बुध नाहिं, गीदड़ तन भखते देखे
मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे।
बोद्धों का जोर था, तब अकलंक सम वीर देखे
धर्म को नहीं छोड़ा मस्तक सिर कटते देखे।
पारस नाम स्वामी, तद्भव मोक्षगामी।
कर्मों ने नहीं बख्सा, पत्थर सिर पड़ते देखे

मोक्ष के प्रेमी.....
सेठ सुदर्शन प्यारा, रानी ने फंदा डाला
शील को नहीं छोड़ा, सूली पर चढ़ते देखे
भोगों को त्याग चेतन, जीवन यो जारा बीता
तृष्णा ना पूरी हुई, डोली में चढ़ते देखो
मोक्ष के प्रेमी....।।

भजन

अमृत से गगरी भरो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे
खुशी खुशी मिल के चलो, कि न्हवन प्रभु आज करेंगे।।टेक।।
सब साथी मिल कलश सजाओ, मंगलकारी गीत सुनाओ।
मन में आनन्द भरो-2 कि न्हवन प्रभु आज करेंगे।
खुशी खुशी मिल के चलो....।।1।।
इन्द्र इन्द्राणी हर्ष मनाये, प्रभु चरणों में शीष झुकाये।
प्रभु जी की छवि निखरों-2 कि न्हवन प्रभु आज करेंगे।
खुशी खुशी मिल के चलो....।।2।।
स्वर्ण कलश प्रभु उदकनि धारा, अंगे नहावे जिनवर प्यारा।
स्वामी जगत को खरो-2, कि न्वहन प्रभु आज करेंगे।
खुशी खुशी मिल के चलो....।।3।।

भजन

तर्ज : न कजरे की धार....

न तन पे कोई लिवास, न ले खाने में स्वाद।
ये पैदल करे विहार ये तो मेरे गुरुवर हैं।
यही तो मेरे मुनिवर हैं।
न इनमें कोई राग, सब चीजों का परित्याग।
बस पिच्छी कमण्डल साथ, ये तो मेरे गुरुवर हैं।
यही तो मेरे मुनिवर हैं।।1।।
घर की ममता है त्यागी, फिर होते हैं ब्रह्मचारी।
दिनरात ये अध्ययन धारी, पद मिलता क्षुल्लकधारी।।
पावे पद ऐलक का, फिर होते हैं मुनिराज।
न तन पे कोई लिवास, न ले खाने में स्वाद।
ये पैदल करे विहार, यही तो मेरे गुरुवर हैं।।2।।
दिन रात परिषह सहना, इक शास्त्र बना निज गहना।
सुरमति मृदु सज्जीवन में, तप ही तप जीवन में।
खत्म होते सुनते-सुनते, जिन धर्म की जय जयकार।
न तन पे कोई लिवास, न ले खाने में स्वाद।
ये पैदल करे विहार, यही तो मेरे मुनिवर हैं।।3।।

भजन

तर्ज : ढूँढ़ ले ठिकाना चेतन...

आया कहाँ से, कहाँ है जाना, ढूँढ़ ले ठिकाना चेतन-2।।टेक।।

एक दिन गोरा तन ये तेरा, मिट्टी में मिल जायेगा।
कुटुम्ब कबीला खड़ा रहेगा, कोई बचा न पायेगा।
नहीं चलेगा कोई बहाना-2....।।1।।
बाहर सुख को खोज रहा है, बनता क्यों दिवाना रे
आतम ही सुख धाम है चेतन, निज को भूल न जाना रे।
सारे सुखों का ये है खजाना...।।2।।
जब तक तुझ में सांस है चलती, सब तुझ को अपनायेंगे।
जब न रहेंगे प्राण ये तन में, देख तुझे घबरायेंगे।
कहीं तो तुझको पड़ेगा जाना....।।3।।
दौलत के दिवानों सुन लो, कुछ भी साथ ना जायेगा।
धन दौलत और रूप खजाना, यहीं धरा रह जायेगा।
आया अकेला, अकेले ही जाना....।।4।।

भजन

कलश ढारो रे....
महावीर की मुंगावर्णी मूरत मनहारी
कलशा ढालो रे, ढालो रे ढालो नरनारी।।टेक।।
नमन कराओ माता त्रिशला के लाल को
त्रिशला के लाल को, सिद्धार्थ के गोपाल को
एक वर्ष का एक कलश और आठ दिनों के आठ
एक हजार आठ कलशों से नाहे जग सम्राट ढालो रे।।1।।

इतने दिनों में पहली बार ही, जायेगा प्रभु का रथ नदिया के पार ही।
नव निर्मित कुण्डलपुरी पहुँचे, वैशाली के लाल
पाण्डुक शिला पर महावीर का है, मंगल प्रक्षाल ढालो रे।।2।।

भजन

जीवराज उड़ के जाओ

जीवरा जीवरा जीवरा ऽऽ जीवराज उड़ के जाओ सम्मेद शिखर में।
भाव सहित वंदन करो पार्श्व चरण में।।टेक।।
आज सिद्धों से अपनी बात होके रहेगी
शुद्ध आतम से मुलाकात होके रहेगी
रंग रहित राग रहित भेद रहित जो।।1।।
मोह रहित लोभ रहित शुद्ध बुद्ध जो
ध्रुव अनुपम अचल गति जिन ने पाई है
सारी उपमाएँ जिनसे आज शरमाई हैं
अनंत ज्ञान अनंत सुख अनंत वीर्य मय।।2।।
अनंत सूक्ष्म नाम रहित अव्याबाधी है
अहो! शाश्वत सिद्धधाम तीर्थराज है
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्यराज है
शुद्ध करे आज यहाँ आत्म साधना
चतुर्गती में हो कभी जन्म मरण ना। जीवराज..।।3।।

ध्वज गीत : लहर लहर लहराये

लहर लहर लहराये केसरिया झंडा
जिनमत का केशरिया झंडा
जिनमत का केशरिया झंडा जिनमत का हो जी हो जी
यह सबका मन हरषाये केसरिया झंडा जिनमत का।।
फर फर फर फर करता झंडा गगन शिखा पर डोले-2
स्वस्तिक का यह चिह्न अनूठा भेद हृदय का खोले-2
यह ज्ञान की ज्योति जलाये केशरिया झंडा..।।1।

भजन : भेद दिगम्बर धार

भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का
मजा कहा नहीं जाये इस कंगाली का।।
बच्चा हो या बच्ची, उसे निंदिया आये अच्छी
पास न होवे लंगोटी, उसे चिन्ता हो फेर किसकी
न भय रखवाली का।।1।।
छोड़े जो परिवारा, नहीं हो ममता उसे धन की।
तजे परिग्रह सारा, फिर चाह मिटे सब मन की।
न फिकर घरवाली का।।2।।
धन्य दिगम्बर साधु, नग्न है, वन में रहते।
खड़े खड़े इकबारा, हाथ में भोजन करते।
काम क्या थाली को।।3।।
तज के सारी दुविधा, जो निज आतम को ध्याये।
धन्य जन्म है उनका, वो शिव आनंद को पाये।।

मुक्त पुर बाली का।।4।।

भजन

तर्ज : कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े...।

कभी कभी मुनिवर को भी, श्रावक से काम पड़े।
चर्या का समय हुआ तो मुनिवर, आहार पे निकल पड़े।।टेक।।
ध्यान छोड़ मुनि आहार को जाये, पंच समिति मन में लाये।
श्रावक मन ही मन मुस्काए, घर बैठे गुरु दर्शन पाये।
हाथ जोड़कर गुरु के आगे, श्रावक मगन खड़े।।1।।कभी..
अहार दान को मन में ललचाये, श्रावक तीन शुद्धि अपनाये।
विधि लिए हम खड़े तुम्हारी, श्रावक कहते सुनो हमारी।
हे स्वामी नमोस्तु-3...
हाथ जोड़कर हम दुखियारे, चरणन आन पड़े।।2।।कभी..
श्रावक जन ने आज पुकारा, हो यही आहार तुम्हारा।
मुनिवर की आँखें मुस्काई, जन जन में फिर खुशियाँ आईं।
तार दिया तुमने हमको अब, हम कुछ त्याग करें।।3।।कभी..

भजन

तर्ज : चाँदी की दीवार ना तोड़ी...

पैसे की पहचान यहाँ, इंसान की कीमत कोई नहीं।
बच के निकल जा इस दुनियाँ से, करता मोहब्बत कोई

न ह ीं । ।

बीबी बहन माँ बेटी भाई, सब पैसे के रिश्ते है।
आँख का आसूँ खून जिगर का, मिट्टी से भी सस्ते है।।
बच के ....

शोख गुनाहों की यह मण्डी, मीठा जहर जवानी है।
कहते है ईमान जिसे वो, कुछ लोगों की कहानी है।
पैसा ही मजहब दुनियाँ का, और हकीकत कोई नहीं।।
बच के ....

हीरा तूने समझ लिया जो, कांच का टुकड़ा है प्यारे।
खुशबू ढूँढ़ रहा है जिसमें, फूल है कागज के सारे।
कपड़े शरीफों वाले पहने, दिल में शराफत कोई नहीं।।
बच के ....।।

भजन

तर्ज : चले आना प्रभुजी चले आना...
कभी वीर बन के महावीर बन के।
चले आना प्रभुजी चले आना।।

तुम वृषभ रूप में आना, तुम अजित वेष में आना।
संभवनाथ बन के, अभिनन्दन बन के।। चले....।।1।।
तुम सुमति रूप में आना, तुम पद्म वेष में आना।
सुपार्श्वनाथ बन के, चन्द्र प्रभु बन के।। चले...।।2।।

तुम पुष्प रूप में आना, तुम शीतल वेष में आना।
श्रेयांशनाथ बन के, वासुपूज्य बन के।। चले...।।3।।
तुम विमल रूप में आना, तुम अनन्त वेष में आना।
धर्मनाथ बन के, शान्तीनाथ बन के।। चले...।।4।।
तुम कुंथु रूप में आना, तुम अरह वेष में आना।
मल्लिनाथ बन के, मुनिसुव्रत बन के।। चले...।।5।।
तुम नमि रूप में आना, तुम नेमि वेष में आना।
पार्श्वनाथ बन के, महावीर बन के।। चले...।।6।।

भजन

मन तो मगन हुआ, साधु गुण गाय के।। टेक।।
श्रावक चाले गाड़ी मोटर बग्घी मँगाय के।
साधु चाले नंगे पैर जीव को बचाय के।। मन...।।1।।
श्रावक खाये लड्डू पेड़ा, बरफी मंगाय के।
साधु लेवे शुद्ध आहार, अन्तराय टाल के।। मन...।।2।।
श्रावक पीये सोड़ा बोतल, लेमन मँगाय के।
साधु पीये अमृत रस, समता धराय के।। मन...।।3।।
श्रावक खेले तास चौपड़, शतरंज मँगाय के।
साधु ध्यावे आतमा को, ध्यान लगाय के।। मन...।।4।।
श्रावक सोवे तकिया गद्दा पिलंग बिछाय के।
साधु सोवे शुद्ध भूमि, पटड़ा बिछाय के।। मन...।।5।।

भजन

तर्ज : मेरे अंगने में तम्हारा क्या काम है...
प्रभु के मन्दिर में, विधर्मी का क्या काम है
जो मुख मोड़े, प्रभु से ए ए
अरे जो मुख मोड़े प्रभु से, उनका नहीं यह धाम है
प्रभु के मन्दिर में...
जिसके पास दौलत, उसका भी बड़ा नाम है–2
गर–दर्शन को भी आवे–2, झुकने का क्या काम है
प्रभु के मंदिर में....
जिसके खूब बेटे, उसका भी बड़ा नाम है–2
अरे बोली पै लगा दो–2, शादी का क्या काम है।। प्रभु।।
जिसके पास बुद्धि, उसका भी बड़ा नाम है–2
अरे लेक्चर तो झड़वालो–2, पंडित का क्या काम है।।प्रभु।।
जो है सेठ दानी, उसका भी बड़ा नाम है–2
नाम पत्थर पर लिखवादो–2, गुपचुप का क्या काम है।।प्रभु।।
जो है खूब आलसी, उसका भी बड़ा नाम है–2
चाय बिस्तर पै पिला दो–2, उठने का क्या काम है।।प्रभु।।
जो है शोकीन फिक्चर के, उसका भी बड़ा नाम है–2
उमर पिक्चर में बिता दे–2, मन्दिर का क्या काम है।। प्रभु।।

भजन

धीमी धीमी उड़े रे गुलाल चलो रे मन्दरिया में।।

म्हारे प्रभुजी की सुन्दर मूरत।

झुक झुक करूँ रे प्रणाम। चलो रे...।।1।।

क्षीर सागर से जल भर लाए।

न्हवन करो रे अपने हाथ। चलो रे...।।2।।

तीन छत्र सिर पर शोभत हैं।

चौसठ चँवर ढुराय।। चलो रे...।।3।।

अष्ट द्रव्य का थाल सजाया।

पूजा करो, बारम्बार।। चलो रे...।।4।।

सोने का दीपक, कपूर की बाती।

आरती उतारे सुबह शाम। चलो रे...।।5।।

म्हारे गुरुजी ज्ञान के सागर।

ज्ञान का भरा रे भण्डार। चलो रे...।।6।।

भजन : हवा तेज चलती है तो

हवा जब तेज चलती है, तो पत्ते टूट जाते हैं।

मुसीबत के दिनों में, अच्छे-अच्छे छूट जाते हैं।

बहुत मजबूर हैं हम, झूठ तो बोला नहीं जाता।

अगर सच बोलते हैं हम, तो रिश्ते टूट जाते हैं।

भले ही देर से आये, मगर वो वक्त आता है।

हकीकत खुल ही जाती है मुखोटे टूट जाते हैं।

हवा जब तेज चलती है......................।।
अभी दुनिया नहीं देखी तभी वो पूछते हैं ये।
किसी का दिल किसी का ख्वाब, कैसे टूट जाते हैं।
हवा जब तेज चलती है......................।।
जो रिश्ते हैं हकीकत में, वो अब रिश्ते नहीं होते।
हमें जो लगते हैं अपने, वही अपने नहीं होते।
हवा जब तेज चलती है......................।।
पसीने की स्याही से जो, लिखते हैं इरादों को।
कभी उनके मुकद्दर के, सपने कोरे नहीं होते।
हवा जब तेज चलती है......................।।
वतन की जो तरक्की है, अभी तो वह अधूरी है।
वो घर भी है दवाई के, जहाँ पैसे नहीं होते।
हवा जब तेज चलती है ....।।

दान : मन में नवधा भक्ति

मन में नवधा भक्ति लेकर, तू जो दान करेगा।
दान के फल से जग का वैभव, तुझको शीघ्र मिलेगी।।टेक।।
जंजीरों में बंधी चन्दना, दान का फल है पाया।
इक्षु रस देकर श्रेयांश भी, दान तीर्थ कहलाया।।
अंजुलि भर देने वाले, दरिया भर के मिलेगा।
दान के फल से जग का वैभव, तुझको शीघ्र मिलेगा।।

पुण्य कोष तेरा रिक्त हो रहा, कुछ तो संचय कर ले।
कंजूसी को छोड़ रे प्राणी, दान तू अक्षय कर ले।।
पदरज श्री चरणों की ले-ले, शिवपद तुझे मिलेगा।
दान के फल से जग का वैभव, तुझको शीघ्र मिलेगी।।
जिसने दिया उसी ने पाया, जो जोड़े सो छोड़े।
खाता बही सही रख पगले, कलम काहे को तोड़े।।
कैसे मिलेगा वक्त पड़े पे, जब जमा ही कुछ न करेगा।
दान के फल से जग का वैभव, तुझको शीघ्र मिलेगी।।

भजन : आसरा इस जहां

आसरा इस जहाँ का मिले ना मिले।
हमको तेरा सहारा सदा चाहिए।।टेक।।
चाँद तारे पलक पर दिखे ना दिखे।
हमको तेरा नजारा सदा चाहिए।।
आसरा इस जहाँ.................।।1।।

यहाँ खुशियाँ हैं कम, और ज्यादा हैं गम
जहाँ देखो वहीं है, भरम ही भरम
मेरे दिल में ज्योति, जले ना जले।
सदा दिल में उजाला तेरा चाहिए।।
आसरा इस जहाँ.................।।2।।

मेरी धीमी चाल, और पद है विशाल।
हर कदम पर मुसीबत है, अब तू संभाल।।

पैर मेरे थके हों, चलें ना चलें।
मुझे तेरा इशारा, सदा चाहिए।।
आसरा इस जहाँ.................।।3।।

कभी वैराग्य है, कभी अनुराग है।
जहाँ बदले हैं माली, वहीं बाग है।।
मेरी चाहत की दुनिया, बसे ना बसे।
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए।।
आसरा इस जहाँ............।।4।।

भजन : मीठो मीठो बोल

मीठो-मीठो बोल थारो कांई बिगड़े
कांई बिगड़े थारो कांई बिगड़े
आ जीवन या दम नहीं
कब निकले दम मालूम नहीं
मीठो-मीठो...............
सोच समझ ले, स्वारथ का ये संसार
लाख जतन कर छूटे न घर बार
तू जान ले रे समझ ले, अरे मान ले
संसार किसी का घर नहीं
कब निकले दम मालूल नहीं
मीठो-मीठो...................
युग युग से गुरु कहते बार-बार

एक बार तू कर ले मन में विचार
तू जाग जा, तू मान जा, पहचान जा
संसार किसी का घर नहीं
कब निकले दम मालूम नहीं
मीठो–मीठो..................

भजन : जब तेरी डोली

जब तेरी डोली, निकाली जाएगी।
बिना मुहूर्त के, उठा ली जाएगी।।टेक।।
धन सिकन्दर का, यहीं सब रह गया।
मरते दम लुकमान भी, ये कहा गया।।
ये घड़ी हर्गिज़, न टाली जाएगी।
बिना मूहूर्त...................।।1।।
अय मुसाफिर क्यों पसरता है यहाँ।
ये किराये पर मिला, तुझको मकां।।
कोठरी खाली, करा ली जाएगी।
बिना मूहूर्त...................।।2।।
क्यों गुलों पर हो रही, बुल–बुल निशार।
पीछे से शिकारी, खड़ा है होशियार।।
मारकर गोली, गिरा ली जाएगी।
बिना मूहूर्त...................।।3।।
इन हकीमों से, कहो यूँ बोलकर।

करते थे दावा, किताबें खोलकर।।
ये दवा हर्गिज़, न खाली जाएगी।
बिना मूहूर्त....................।।4।।
होवेगा परलोक में, तेरा हिसाब।
कैसे मुकरोगे वहाँ पर, तुम जनाब।।
जब वडो तेरी निकाली जायेगी।
बिना मूहूर्त....................।।5।।

भजन : वीर तुम्हारे द्वारे पर

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर, एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया है।।टेक।।
नहीं दुनिया में कोई मेरा है, आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा है, जग ने मुझको ठुकराया है।।1।।
धन दौलत की कुछ चाह नहीं, घर-बार लुटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा है तेरे दर्शन की, दुनिया से चित्त घबराया है।।2।।
मेरी बीच भँवर में नैय्या हे, बस तू ही एक खिवैया है।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने, भव सिन्धु से पार उतारा है।।3।।
आपस में प्रीत व प्रेम नहीं, तुम बिन हमको भी चैन नहीं।
अब तो तुम आकर दर्शन दो, यह सेवक अति अकुलाया है।।4।।

भजन : हम पर किया बड़ा उपकार

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत

माता-पिता गुरु प्रभु चरणों में, प्रणवत बारम्बार।

हम पर किया बड़ा उपकार–2।।टेक।।
माता ने जो कष्ट उठाया, ऋण कभी न जाए चुकाया।
अँगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया।।
जिनकी गोद में पलकर के, कहलाते होशियार।
हम पर किया बड़ा उपकार....।।1।।
पिता ने हमें योग्य बनाया, कमा–कमा कर आज खिलाया।
पढ़ा–लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया।।
जोड़–जोड़ अपनी सम्पत्ति का बना दिया हकदार।
हम पर किया बड़ा उपकार....।।2।।
तत्त्व ज्ञान गुरु ने दर्शाया, अन्धकार सब दूर हटाया।
हृदय में भक्ति दीप जलाकर प्रभु दर्शन का मार्ग बताया।।
बिना स्वार्थ ही कृपा करे, वे इतने बड़े हैं उदार।
हम पर किया बड़ा उपकार....।।3।।
प्रभु कृपा से नरतन पाया, सन्त मिलन का साज सजाया।
बल बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया।।
जो भी इनकी शरण में आता, कर देते उद्धार।
हम पर किया बड़ा उपकार....।।4।।
माता–पिता गुरु प्रभु–चरणों में, प्रणवत बारम्बार
हम पर किया बड़ा उपकार....।

भजन : भगवन समय हो ऐसा

नवकार मन्त्र जपते, मम प्राण तन से निकले।
ये क्रोध मान माया, अरु लोभ जो बताए।।
चारों कषाय छोड़े जब प्राण तन से निकले।।1।।
न वैर हो किसी से, समभाव हो सभी से।
शान्ति क्षमा हो मन में, जब प्राण तन से निकले।।2।।
आठों कर्म दुरवेरे, लोग हैं संग मेरे।
इनसे मैं मुक्त होऊँ, जब प्राण तन से निकले।।3।।
होवे मरण समाधि, व्यापे न मोह व्याधि।
घट में हो ध्यान तेरा, जब प्राण तन से निकले।।4।।
वस्तु स्वरूप निरखूँ स्वात्म गुण निहारूँ।
निज में हो ध्यान मेरा, जब प्राण तन से निकले।।5।।
भक्ति में रत हों तेरी, शुद्धात्मा हो मेरी।
प्रभुनाम जपते जपते प्रभु ॐ नाम रटते।।
जब प्राण तन से निकले।।6।।
कर जोड़ अर्ज मेरी, काटो कर्मों की बेड़ी।
सम्यक्त्व होवे पैदा, जब प्राण तन से निकले।।7।।

भजन : जिया कब तक उलझेगा

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में
उड़-उड़ कर यह चेतन, गति-गति में जाता है

रागों में लिप्त सदा, भव-भव दुःख पाता है
निज तो न सुहाता है, पर ही मन भाता है
यह जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में
जिया कब तक उलझेगा.............
यदि अवसर चूका तो, भव भव पछताएगा
यह नर भव कठिन महा, किस गति में जाएगा
नर भव भी पाया तो जैन कुल न पाएगा
अनगिनत जन्मों में, अनगिनत विकल्पों में
जिया कब तक उलझेगा.................
तू कौन कहाँ का है, और क्या है नाम अरे
आया किस घर से तू, जाना किस गाँव अरे
यह तन तो पुद्‌गल है, दो दिन छाँव अरे
अनन्त सुख चाहो जो, तो सुख अविकल्पों में
जिया कब तक उलझेगा................

गुरुवर तेरे चरणों की

गुरुवर तेरे चरणों की, रजधूली जो मिल जाए
सच कहता है तो मन मेरा, जीवन ही संभल जाए
गुरुवर..................
मेरा मन बड़ा चंचल है, कैसे मैं भजन करूँ
जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचलता है

गुरुवर................

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है

एक बूँद जो मिल जाए, जीवन ही संवर जाये

गुरुवर................

मेरे जीवन की बस एक तमन्ना है

तुम सामने रहो मेरे, चाहे दम ही निकल जाये

गुरुवर................

नजरों से गिराना ना, चाहे जो भी सजा देना

नजरों से गिराया तो, कहीं और ठिकाना ना

गुरुवर................

तुम सम्यग्दृष्टि हो, सम्यक् जीवन कर दो

सम्यक् से ज्ञान चारित्र, मेरा उज्ज्वल कर दो

गुरुवर................

भक्तों की विनती को, स्वीकार करो बाबा

मझधार में है नैय्या, उसे पार लगा देना

गुरुवर................

भजन : ऐ जैन धर्म के प्रेमी

तर्ज : ए मेरे वतन

ऐ जैन धर्म के प्रेमी, ये कहती है जिनवाणी

रात्रि भोजन को त्यागो, पियो छान कर पानी

ऐ जैन धर्म................

एक बूँद में जीव अनन्ते, जो हमसे ही मरते हैं।
थोड़े आलस में ही, ये पाप हमी करते हैं–2
करो पहले दर्शन पीछे, पियो छान कर पानी
रात्रि भोजन को त्यागो, पियो छान कर पानी
ऐ जैन धर्म................
सब ठाठ यहाँ रह जाए, जब अन्त घड़ी आएगी
सब पड़ा यहीं पर होगा, एक सुई भी न जाएगी–2
है कौन यहाँ पर किसका, ये दो दिन की जिन्दगानी
ऐ जैन धर्म................
जो कर्म किये है हमने, बस साथ यही जाएँगे
क्या अच्छा किया बुरा किया, पर भव में बतलाएँगे–2
जो मिला आज तुमको है, वह पूरब कर्म निशानी
रात्रि भोजन को त्यागो, पियो छान कर पानी
ऐ जैन धर्म................

भजन : जैन धर्म ले लो प्यारा

गली–गली में घूम–घूम कर, बेच रहा है बंजारा
जैन धर्म ले लो प्यारा.....
ओ दुनिया के रहने वालो, ले लो दिल को खोलकर
अपने ही काँटे–बाटों से, ज्यादा–ज्यादा तोल कर
कीमत कुछ भी नहीं चाहिए, चाहे ले लो तुम सारा
जैन धर्म ले लो प्यारा...।।1।।

क्रोध बेचकर क्षमा खरीदो, मार्दव मान हटाकर के
कपट छोड़ आर्जव अपनाओ, शौच लोभ पलटा करके
झूठ-झूठ है सत्य सत्य है, इसे करो अंगीकारा
जैन धर्म ले लो प्यारा...।।
महावीर का माल मैं बेचूँ, आज फिर रहा डगर-2
देखो मैं आवाज लगाता, देश गाँव और नगर-2
जिनवाणी है, वीर की वाणी जिसने लाखों को तारा
जैन धर्म ले लो प्यारा...।।

भजन

तर्ज : यही तो मेरे गुरुवर हैं ...
न तन पे कोई लिवास....
न लें खाने में स्वाद
ये पैदल करें विहार
ये तो मेरे गुरुवर हैं, यही तो मेरे मुनिवर हैं
न इनमें कोई राग
सब चीजों का परित्याग
बस पिच्छी कमण्डल साथ
ये तो मेरे गुरुवर हैं यही मेरे मुनिवर हैं
घर की ममता है त्यागी
फिर होते हैं ब्रह्मचारी

दिन रात ये अध्ययन करते
पद मिलता क्षुल्लक धारी
पावे पद ऐलक का फिर
होते हैं मुनिराज
ये तो मेरे गुरुवर हैं यही तो मेरे मुनिवर हैं
दिन रात परीषह सहना
एक शास्त्र बना है गहना
सुरमिति मृदु सज्जीवन में
तप ही तप करते रहना
खुश होते सुनते-सुनते, जिन धर्म की जय जय कार
ये तो मेरे गरुवर हैं यही तो मेरे मुनिवर हैं

चिट्ठी न कोई सन्देश

चिट्ठी न कोई सन्देश जाने वो कौन-सा देश
जहाँ तुम चले गये-2
इस दिल पर लगाकर ठेस, जाने वो कौन-सा देश
जहाँ तुम चले गये-2
इक आह भरी होगी, हमने न सुनी होगी
जाते-जाते तुमने आवाज तो दी होगी
हर वक्त यही है गम, उस वक्त कहाँ थे हम
जहाँ तुम चले गये-2
चिट्ठी न कोई............

हर चीज पे अश्कों से, लिखा है तुम्हारा नाम
हर रास्ते हर गलियों में, तुम्हें कर न सके प्रणाम
दिल में रह गयी हर बात, जल्दी से छुड़ाकर हाथ
जहाँ तुम चले गये-2
चिट्ठी न कोई...............
अब यादों के काँटे, इस दिल में चुभते हैं
न दर्द ठहरता है, ना आसूँ रुकते हैं
दिल ढूँढ़ रहा है गुरुवर को, हम कैसे करें दर्शन
जहाँ तुम चले गए-2
चिट्ठी न कोई............

भजन : जैनधर्म के हीरे मोती

जैन धर्म के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली-गली
ले लो रे कोई वीर का प्यारा, शोर मचाऊँ गली-गली-2
दौलत के दीवाने सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा
धन-दौलत और रूप खजाना, पड़ा यहीं रह जाएगा
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगी गली-गली
ले लो रे.............
क्यों कहता तू मेरा, तज दे उस अभिमान को
झूठे झगड़े छोड़कर प्राणी, भज ले तू भगवान को
जग का मेला दो दिन का है, अन्त में होगी चला चली

ले लो रे.................

जिन जिन ये मोती लूटे, वे ही मालामाल हुए
दौलत के जो बने पुजारी, आखिर वे कंगाल हुए
सोन चाँदी वालो सुन लो, बात कहूँ मैं भली-भली
ले लो रे............

जीवन में दुख है तब तक ही, जब तक सम्यक् ज्ञान नहीं
ईश्वर को जो भूल गया, वह है सच्चा इन्सान नहीं
दो दिन का ये चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली
ले लो रे ....

भजन

तर्ज : जैनों का मन्दिर....

जैनों का है मन्दिर
जैनों का है मन्दिर, और बहनों का है शोर
धूम मचाएँ ऐसे, जैसे झगड़ा हो घनघोर
जैनों का....................

रामा गजब ढाएँ ये महिलाएँ
करें क्या ये बातें भैय्या, कोई ना जाने-2
सास बहू का झगड़ा, मन्दिर में लेती मोल
धूम मचाएँ..........................

कोई कहे अपने पति की, सास अपनी बहु की

झगड़ा करने भैय्या, बुढ़िया करे क्यों जोर
लोक शरम के मारे मन्दिर आये घर छोड़
धूम मचाएँ................
गुरुवर कहे तुमसे, जरा बचके ही रहना
बात करे तो इनको करने नहीं देना-2
हार गये खुद घर से चले यहाँ पर जोर
धूम मचाएँ.......................

भजन : आया सास बहू का जमाना

जिन्दगी एक सफर है सुहाना, आया सस बहु का जमाना..
सास कहे बहु आएगी जरूर, आके आटा लगाएगी जरूर
देखो सास लगा रही आटा, बहू करके चली गयी टाटा
जिन्दगी एक सफर......
सास कहे बहू आएगी जरूर, आके रोटी बनाएगी जरूर
देखो सास बना रही रोटी, बहू करने चली गयी चोटी
जिन्दगी एक सफर.....
सास कहे बहू आएगी जरूर, आके बर्तन मांजेगी जरूर
देखो सास मांज रही बर्तन, बहू करने चली गयी फैशन
जिन्दगी एक सफर......
सास कहे बहू आएगी जरूर, आकर बिस्तर लगाएगी जरूर
देखो सास लगा रही बिस्तर, बहू देखने चली गयी पिक्चर

भजन : इस योग्य हम कहाँ हैं

तर्ज : वो दिल कहाँ से लाऊँ

इस योग्य हम कहाँ हैं गुरुवर तुम्हें रिझाए–2
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाए–2
इस योग्य.................
निश्चित ही हम पतित हैं, लोभी हैं स्वार्थी हैं
तेरा ध्यान जब लगाएँ, माया पुकारती है
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाए
इस योग्य ....
जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है
एक दूसरे के सुख में, खुद को बड़ी जलन है
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ न पाए
इस योग्य ....
जब कुछ न कर सके तो, तेरी शरण में आए
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजाएँ
अब ज्ञान हमको दे दो, कुछ और न चाहें
इस योग्य ....

भजन : मेरे दुःख के दिनों में

तर्ज : मेरे दुःख के दिनों में

मेरे दुःख के दिनों में ये, बड़े काम आते हैं
गुरुवर मेरी पीड़ा, मुनिवर मेरी पीड़ा पहचान जाते हैं
मेरे दुःख............

मेरी नैय्या चलती है पतवार नहीं होती–2
किसी और की अब मुझको, दरकार नहीं होती–2
मझधार में नाव मेरी–2 ये पार लगाते हैं
मेरे दुःख...................

दिल से जो याद करे ये, उनके घर जाते हैं–2
दर पे फरियाद करे ये झोली भर जाते हैं–2
खुशियों का जीवन में–2 पैगाम लाते हैं
मेरे दुःख..............

ये बड़े दयालु हैं दुःख पल में हरते हैं–2
अपने भक्तों का यह, हर काम करते हैं–2
दुखियों के दुःखों को–2 पहचान जाते हैं–2
मेरे दुःख...............

ये इतने बड़े होकर, हर किसी से प्यार करें–2
सदियों से सुदामा के, चावल स्वीकार करें–2
ये भक्तों का कहना–2 पल में मान जाते हैं
मेरे दुःख.......

भजन : पीछी रे पीछी इतना बता

तर्ज : माही रे माही

पीछी रे पीछी इतना बता, तूने कौन-सा काम किया है
गुरुवर ने खुश होकर के, हाथों में थाम लिया है
पीछी बोलो ना.............
तेरी किस्मत सबसे अच्छी, गुरुवर ने अपनाया-2
गुरुवर तुमसे प्यार करें क्यों, कोई जान न पाया-2
गुरुवर की कृपा होने से-2 जग में नाम किया है
गुरुवर ने खुश.........
मोर पंख से बनी है पीछी, सुन्दरता दर्शाती-2
अपने कोमल पंखों से, जीवों के प्राण बचाती-2
पीछी और कमण्डल का-2 कैसा संयोग मिला है
गुरुवर ने खुश ....
जैसे अपनाया पीछी को, मुझको भी अपना लो-2
मुझको अपनी पीछी समझकर, अपने गले लगा लो-2
तेरा मेरा भेद अनोखा-2 पीछी से जान लिया है
गुरुवर ने खुश...............

भजन : सज-धज के जिस दिन

सज-धज कर जिस दिन, मौत की सहजादी जाएगी
न सोना काम आएगा, न चाँदी आएगी-2
छोटा सा तू कितने बड़े अरमान हैं तेरे-2

मिट्टी का तू सोने के सब, सामान हैं तेरे
मिट्टी की काया मिट्टी में, जिस दिन समाएगी
न सोना काम आएगा.................
कोठी वहीं, बंगला वहीं, बगिया रहे वहीं–2
पिंजरा वहीं, पंछी वहीं, है बागवाँ वहीं
ये तन का चोला आत्मा, जब छोड़ जाएगी
न सोना काम आएगा..........
पर खोल ले पंछी तू पिंजरा छोड़ के उड़ जा–2
माया महल के सारे बन्धन तोड़ के उड़ जा–2
धड़कन में जिस दिन मौत तेरी गुनगुनाएगी
न सोना काम आएगा..................

भजन : आये हैं मेरे गुरुवर

तर्ज : आये हैं मेरे गुरुवर
आये हैं मेरे गुरुवर अपना मुझे बनाने–2
अज्ञान का अंधेरा, मन का मेरे मिटाने–2
गुरु के मुखाबिन्द से, सदा ज्ञान गंगा बहती
करो सबसे प्रेम प्यारों, वाणी इन्हीं की कहती–2
सत्संग रूपी अमृत, लाये हमें पिलाने
अज्ञान का.................
कल्याण हो जगत का, सन्देश ये ही देते

उद्धार हो भगत का, उपदेश ये ही देते–2
मिल–जुल सभी से रहना, आये हमें सिखाने
अज्ञान का..............
पाएँगे कैसे कल को, कैसे करें हम भक्ति
कैसे मिलेगी शक्ति, उसकी बताते युक्ति–2
तन मन प्रभु को अर्पण कर, देख लो दिखाने
अज्ञान का..............
ये ब्रह्मा और विष्णु, गुरु का ही रूप समझो
दाता दयालु इनको, शिव का समरूप समझो–2
हम मात–पिता भ्राता, गुरुदेव को ही माने
अज्ञान का...............

भजन : मेरा आपकी कृपा से

मेरा आपकी कृपा से, सब काम हो रहा है–2
करते हैं मेरे गुरुवर, मेरा नाम हो रहा है
मेरा आपकी................
पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है–2
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है–2
करता नहीं मैं कुछ भी–2 सब काम हो रहा है–2
मेरा आपकी..................
तुम साथ हो जो मेरे, किस चीज की कमी है–2

किसी और चीज की अब, दरकार ही नहीं है–2
तेरी ही दिव्य वाणी–2 मन को जमा रही है–2
मेरा आपकी..................
मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरा प्यार कैसे पाऊँ–2
टूटी हुई वाणी से, गुणगान कैसे गाऊँ–2
तेरी ही प्रेरणा से–2 ये कमाल हो रहा है–2
मेरा आपकी ....
तूने हर कदम पर–2 मुझको दिया सहारा–2
मेरी जिन्दगी बदल दी तूने, करके एक इशारा–2
अहसानों पे तेरा ही–2, अहसान हो रहा है–2
मेरा आपकी...............

भजन : दुनिया से सहरा क्या लेना

दुनिया से सहारा क्या लेना, गुरु तेरा सहारा काफी है–2
कुछ कहने की क्या जरूरत है, बस तेरा इशारा काफी है
दुनिया से............
धन–दौलत का क्या करना है, इन महलों का क्या करना है–2
जिन्दगानी–2 जिन्दगानी चार दिनों की है, चरणों में गुजारा काफी है–2
दुनिया से...............
माना दुनिया संगीन तेरी, हर चीज बनायी है तूने–2

देखूँ तो-2 देखूँ तो क्या-2 देखूँ मैं, तेरा एक नजारा काफी है-2
दुनिया से............
मेरी नैय्या डगमग डोल रही, मैं बीच भँवर में अटका हूँ-2
भव सागर से-2 भव सागर से ही तरना है,
तो नाम प्रभु का काफी है-2
कुछ करने की ....
बैकुण्ठ नहीं और स्वर्ग नहीं, मुझे मुक्ति पथ पर जाना है-2
गुरुवर-2 गुरुवर भजन मैं तेरा करूँ
चरणों में गुजारा काफी है-2
कुछ करने की.................

भजन : मनाओ मौज हर्षाओ

तर्ज : बहारो फूल बरसाओ
मनाओ मौज हर्षाओ, यहाँ मुनिराज आये हैं
बिछाओ नैन बलि जाओ, यहाँ ऋषिराज आये हैं
मनाओ मौज............
दिगम्बर रूप मन भाया, परम शान्ति छवि भारी
दमकता तेज जिन मुख से, तपोवन महिमा है न्यारी-2
दर्श कर इनके सुख पाओ, यहाँ मुनिराज आये हैं
मनाओ मौज.......
नहीं रागी नहीं द्वेषी, दया मूरत के अधिकारी

परिग्रह त्याग निज केवल, कमण्डल पीछी हैं धारी-2
बधाई गान मिल गाओ, यहाँ मुनिराज आये हैं
मनाओ मौज.............
है संयम और व्रतधारी, परिग्रह झेलते भारी
मृदुभाषी हैं समदर्शी, ये शुभ रमणीक अधिकारी
पखारो चरण, शिरनाओ, यहाँ मुनिराज आये हैं
मनाओ मौज................

भजन : गुरुवर तुम ही मालामाल

तर्ज : चाँद जैसा रंग है तेरा
चाँदी सोना छोड़ के गुरुवर, हो गये आप निहाल
धनवाले कंगाल हैं गुरुवर, तुम तो मालामाल
जिस रास्ते से तुम गुजरो, वह मारग धन्य कहाय
एक बार जो देखे तुमको, जीवन ज्योति जगाय
छोड़ परिग्रह बने दिगम्बर, छोड़े सब जंजाल
धन वाले कंगाल है...........
चाँदी सोना छोड़ के ....
तप का ताला त्याग त्जोरी, भरे हैं रत्न अपार
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, भरा हुआ भण्डार
जिसने खोया उसने पाया, ये वे कीमत लाल
धन वाले कंगाल हैं...........

चाँदी सोना छोड़ के.............
जब से दर्शन पाया मैंने, जीवन सफल बनाया
विशद गुरुवर चरणों, अपना शीश नवाया
भक्ति से सब गीत हैं गाते, आये तेरे द्वार
धन वाले कंगाल हैं............
चाँदी सोना छोड़ के ....

भजन : गुरुवर तू है जग का नूर

तर्ज : तेरी दुनिया से दूर होके मजबूर
गुरुवर तू है जग का नूर, तेरी ख्याति दूर-दूर हमें याद रखना
तुझको जाना है जरूर, हम तो श्रावक मजबूर हमें याद रखना-2
गुरुवर तू.........
आएँगे जब मन्दिर, तो तेरी मीठी वाणी, बुलाएगी हमें-2
सूना सिंहासन ये, आँखें हर पल, रुलाएँगी हमें-2
तड़पाएँगी हमें...........
तुझको जाना..........
किसको पड़गाऊँ और किसको अब नमोस्तु,कहूँगा ये बता-2
अत्रो अत्रो कहकर के विधि किसकी मिलाऊँगा बता-2
बुलाएँगे किसे
तुमको जाना.........
तेरी गुरु भक्ति और तेरी आनन्द यात्रा मिलेगी अब कहाँ-2

प्रवचन करती वाणी और वैय्यावृत्ति तेरी मिलेगी अब

कहाँ–2 याद आएगी जहाँ–2

तुझको जाना.....

जा रहे हो जाओ पर वापस आने का इशारा तो करो–2

इस तरह हमको छोड़कर गुरुवर बेसहारा न करो–2

बेसहारा न करो–2

इशारा तो करो–2

तुझको जाना.........

भजन : उद्धार कैसे होता हमारा

तर्ज : हमें और जीने की

उद्धार कैसे होता हमारा, अगर तुम न होते–2

उद्धार कैसे...........

गुरुजी तुम्हारा, सहारा न मिलता

भंवर में ही रहते, किनारा न मिलता–2

दिखाई न देती, अंधेरे में मंजिल

अगर तुम............................

करके दरश तो लगता है ऐसे

महावीर फिर से आये हों जैसे–2

पञ्चम काल के महावीर हो तुम

विशद सागर, गुरुवर हमारे

उद्धार....................

दया इतनी कर दो, हम पे गुरुवर

कल्याण होवे, बनें आप जैसे–2

बनें आप जैसे, यही भावना है

यही भावना है, यही चाहना है

उद्धार......................

भजन : बहती ज्ञान की धार

तर्ज : न कजरे की धार...

बहती ज्ञान की धार, गुरुवर तेरे द्वार

विशद सागर जी महाराज

तुम तो मेरे गुरुवर हो

तुम्हीं तो मेरे मुनिवर हो

बहती ज्ञान............

संसार तो है नश्वर, संसार में क्या रहना–2

जो साथ में न जाये, क्या साथ उसके रहना

दो ऐसी ज्योति हमको–2 कर दो मेरा उद्धार

बहती ज्ञान.............

ये दुनिया काम न आयी, तेरे ज्ञान में है सच्चाई–2

इसलिए छोड़ के दुनिया, तेरे द्वार पे आया

हे गुरुवर तुमको वन्दन–2 कर दो मेरा उद्धार

बहती ज्ञान..................
भटके जिया भव-भव में, न चैन पल भर पाये-2
नरकों में गिरकर देखा, ये इतना कष्ट उठाये
मिले तुझसे ज्ञान हमको-2 हो जीवन में उद्धार
बहती ज्ञान...............

भजन : चन्द दिनों का जीना रे

तर्ज : कसमें वादे प्यार वफा
चन्द दिनों का जीना रे वन्दे, ये दुनिया मकड़ी का जाल
क्यों हुये विषयों में पागल, हाल हुआ तेरा बेहाल-2
आखिर तेरा होगा जाना, कोई ना साथ निभाएगा
तेरे कर्मों का फल वन्दे, साथ तेरे ही जाएगा
धन दौलत से भरा खजाना, पड़ा यहीं रह जाएगा
चन्द दिनों............
दया धर्म समय के द्वारा, मुक्ति मंजिल पाएगा
तेरे त्याग की अमर कहानी, सारा जमाना गाएगा
चिन्तन कर ले इन बातों का, जन्म सफल हो जाएगा
चन्द दिनों................
ये तन है माटी का नश्वर, माटी में मिल जाएगा
मुट्ठी बाँधे आया जग में, हाथ पसारे जाएगा
ज्ञानीजन कहते हैं सुन लो, गया वक्त नहीं आएगा
चन्द दिनों..................

भजन : जाने वाले एक सन्देशा

तर्ज : भला किसी का कर ना

जाने वाले एक सन्देशा, गुरुवर से तुम कह देना।
भक्त तुम्हारा याद में रोये, उसको दर्शन दे देना।।
जाने वाले..............
जिसको गुरुवर दर पे बुलाएँ, किस्मत वाले होते हैं
जो उनसे कभी, मिल ना पाये, छुप-छुप के वो रोते हैं
जितनी परीक्षा ली है मेरी, और किसी की मत लेना
भक्त तुम्हारी.................
तूने कौन सा पुण्य किया है, दर से तुझे बुलाया है
मैंने कौनसा पाप किया है, दिल से मुझे भुलाया है
एक बार तुझे दर पे बुला ले, इतनी कृपा बस कर देना
भक्त तुम्हारी...............
मुझको ये विश्वास है दिल में, मेरा बुलावा आएगा
गुरुवर मुझको दर्शन देकर, अपने पास बिठाएगा
उनसे जाकर इतना कहना, मेरा भरोसा टूटे ना
भक्त तुम्हारी..............
कहना उनसे मन मन्दिर में, मैंने उन्हें बिठाया है
गुरु रूप में पारस प्रभु को, अब तो मैंने पाया है
आशा केवल एक यही है, मुक्ति मार्ग दिखला देना
भक्त तुम्हारी..........

भजन : दे दो थोड़ा ज्ञान

तर्ज : दे दो थोड़ा ज्ञान

दे दो थोड़ा ज्ञान गुरुवर, तेरा क्या घट जाएगा–2

ये बालक भी तर जाएगा

दे दिय तुमने, उसको सहारा जो, द्वारे पे आया है

भर दिया दामन, उसकी खुशी से, जो अर्जी को लाया है।

मुझको देने से–2 खजाना कम नहीं हो जाएगा–2

ये बालक.........

नैय्या मेरी तेरे हवाले, इसको गुरुवर पार करो

गर दे दिया गुरुवर, मुझको सहारा तो, ये विश्वास करो

ये तेरा दरबार–2 जय जयकारों से गुंजाएगा

ये बालक................

भक्त खड़े दर पे, तेरे गुरुवर अब तो ध्यान दो

लाये हैं ये भक्ति की सौगात, इसको तुम स्वीकार करो

सर पे रख दो हाथ–2, मेरा भाग्य तो जग जाएगा

ये बालक..............

भक्तों के सहारे गुरुवर, हमारे हर दिल में, रहते हैं

जो चरणों में आए, झोली को भर जाए, बड़े उपकारी हैं

भक्तों को शरण देते–2, जो शरण में जाएगा–2

ये बालक...........

अज्ञानी बालक, चरणों के लायक, चरणों में ठौर दो

नादान हम ये, बात सच्ची हमें, गुरु ज्ञान दो
वरना ये बालक–2 अज्ञानी ही रह जाएगा
ये बालक.............

भजन : गुरुवर दया करके

तर्ज : ये मेरे दिले नादान तू गम से न घबराना
गुरुदेव दया करके, कर्मों से छुड़ा देना
पा जाऊँ मैं आतम को, वो राह दिखा देना
गुरुदेव...............
करुणा निधि नाम तेरा, करुणा वो जगाओ तुम
मैत्री के भावों को, हे नाथ जगाओ तुम
प्रतिपल समता में रहूँ, सबर वो सिखा देना
गुरुदेव..........
मैं अनादि से घायल हूँ, उपचार कराओ तुम
हो जाऊँ निरोग सदा, औषध वो पिलाओ तुम
पा जाऊँ परमपद को, वो राह बता देना
गुरुदेव.............
टूटी हुई वीणा के, सब तार मिला दो तुम
गाँऊ मैं मधुर संगीत, पे साज बना दो तुम
यह गीत जो बिछुड़ा है, गायक से मिला देना
गुरुदेव............

बहती हुई सरिता की, आवाज मिटा दो तुम
मैं हूँ दीपक स्वामी, ज्योति प्रगटा दो तुम
ये बूँद जो बिछुड़ी है, सिन्धु से मिला देना
गुरुदेव............
लाखों को सुधारा है, मुझको भी सुधारों तुम
पाऊँ मैं चरण तेरी, मेरी ओर निहारो तुम
मेरा जन्म मरण छूटे वो भक्ति सिखा देना
गुरुदव...............

सोते-सोते ही निकल गयी

सोते-सोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ही निकल गयी सार जिन्दगी।।
जिस दिन जन्म लिया पृथ्वी पर तूने रुदन मचाया
आँख तेरी खुलने न पायी, भूख-सुख चिल्लाया
खाते-खाते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी
बोझा ढोते ही...........
यौवन बीता आया बुढ़ापा, डग-मग डोले काया
सबके सब रोगों ने आकर, डेरा खूब जमाया
रोगों भोगों में निकल गयी, सारी जिन्दगी
बोझा ढोते ही................
जिस तन को तू अपना समझा, दे बैठा वह धोखा
प्राण जाए और जल जाएगा, यह काठी का खोका

खोका ढोते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी
बोझा ढोते ही..................
जीवन भर नहीं धर्म किया, और अन्त समय पछताया
पैसा-पैसा करते-करते पेटी बहुत भराये
रोगों भोगों में निकल गयी, सारी जिन्दगी
बोझा ढोते ही..................

भजन : पओ प्यारे परदेशी पंछी

ओ प्यारे परदेशी पंछी, जिस दिन तू उड़ जाएगा
तेरा प्यारा पिंजरा पीछे, यहाँ जलाया जाएगा
जिस पिंजरे को सदा सभी ने, पाला पोसा प्यार से
खूब खिलाया खूब पिलाया, हर दम रखा संभाल के
तेरे होते-होते नीचे, उसे सुलाया जाएगा
ओ प्यारे परदेशी..........
देखे बिना तरसतीं आँखें, रहना चाहतीं साथ में
तेरे बिना ना खाती खाना, तू ही था हर बात में
तेरे पूछे बिना ही सारा, काम चलाया जाएगा
ओ प्यारे परदेशी..................
रोएँगे थोड़े दिन तक यह भूलेंगे फिर बाद में
ज्यादा से ज्यादा इतना कुछ, करवा देंगे बाद में
हलवा पूरी खाकर तेरा, श्राद्ध मनाया जाएगा

ओ प्यारे परेदशी..................

तुझे पता है क्या कुछ होगा, फिर भी क्यों नहीं सोचता

वन्दे वह दिन भी आएगा, पड़ा रहेगा सोचता

जन्म अमोलक खोकर हीरा, पीछे से पछताएगा

ओ प्यारे परदेशी पंछी..............

भजन : देना है तो दीजिए

मेरे सर पर रख दो गुरुवर, मेरे सर पर रख दो मुनिवर

अपने ये दोनों हाथ–2

देना हो तो दीजिए, जन्म जन्म का साथ।।टेक।।

इस जन्म में सेवा देकर, बहुत बड़ा एहसान किया–2।

बड़े दयालु तुम हो गुरुवर, मैंने तुम्हें पहचान लिया–2।।

हम साथ रहें जन्मों तक–2 बस रख लो इतनी बात।

देना है...........।।1।।

मेरे जैसे दीन दुःखी का, कोई नहीं है रखवाला–2।

झूठी तसल्ली भी मेरे गुरुवर, कोई नहीं देने वाला–2।।

मुझे कुछ ना सूझे गुरुवर–2 छायी है गम की रात।

देना है..................।।2।।

बड़े ही निर्बल हाथ हैं, मेरे चारों ओर अंधेरा है–2।

थामे रहना मुझको गुरुवर, बस एक सहारा तेरा है–2।।

बस इतना करना गुरुवर–2, तुमसे अब रख लो मेरी बात।

देना है.................॥3॥

भजन : णमोकार मन्त्र की जय

णमोकार मन्त्र की जय बोलो, हम महिमा इसकी गाते हैं
यह मन्त्र बड़ा ही पावन है, हम इसकी बात सुनाते हैं
णमोकार मन. की जय बोलो......
अरिहन्तों के नित सुमिरण से, शुभ कर्म उदय हो जाते हैं
श्री सिद्ध प्रभु के जपने से, सब काम सिद्ध हो जाते हैं
आचार्यों को कर नमस्कार, उपाध्याय का कर विचार
साधुपद शीश झुकाते हैं ......
परमेष्ठी जगत में पाँचों ही, पापों से हमें बचाते हैं
णमोकार मन्त्र की जय बोलो......
सती चन्दना ने इसको ध्याकर, महावीर का दर्शन पाया था
मैना सती ने यह मन्त्र रटा, निज पति का कुष्ठ मिटाया था
हैं रोग अनेक पर मन्त्र एक, ये लाख दुःखों को खोता है
बड़भागी बड़े हैं, वो जग में, जो इसकी शरण में आते हैं
णमोकार मन्त्र की जय बोलो.....
दुनिया के सब महापुरुषों ने, यह मन्त्र आधार बनाया है
तब ऋद्धि-सिद्धि मिलती इससे, यह ज्ञान हमें सिखलाया है
इस मन्त्र की है महिमा अपार, ये मन वाञ्छित फल देता है
करते जो ध्यान सुबह और शाम, सभी शिवसुख वो पाते हैं

णमोकार मन्त्र की जय बोलो.....

भजन : पैसे की पहचान यहाँ

तर्ज : चाँदी की दीवार न तोड़ी

पैसे की पहचान यहाँ, इंसान की कीमत कोई नहीं
बचके निकल जा इस दुनिया से, करता मोहब्बत कोई नहीं।।
बीवी बहन माँ-बेटी भाई, सब पैसे के रिश्ते हैं
आँख का आँसू खून जिगर का, मिट्टी से भी सस्ते हैं
बचके निकल जा..........
शोख गुनाहों की यह मण्डी, मीठा जहर जवानी का
कहते हैं इंसान जिसे वो, कुछ लोगों की कहानी है
पैसा ही मजहब दुनिया का, और हीकत कोई नहीं
बचके निकल जा..................
हीरा तूने समझ लियाजो, काँच का टुकड़ा है प्यारे
खुशबू ढूँढ़ रहा है जिसमें, फूल है कागज के सारे
कपड़े शरीफों वाले पहने, दिल में शराफत कोई नहीं
बचके निकल जा................

भजन : प्रभु दर्शन करके

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे हैं।
झुका तेरे चरणों में, सर जा रहे हैं।। टेक।।

यहाँ से कभी दिल न, जाने का करता
करें क्या कि जाए, बिना भी न सरता
अगरचे नयन मेरे, भर आ रहे हैं
प्रभु.............

हुई पूजा भक्ति न, कुछ सेवकाई
न मन्दिर में बहुमूल्य, वस्तु चढ़ाई
यह खाली फकत, जोर कर जा रहे हैं
प्रभु............

सुना तुमने तारे, अघम चोर पापी
न धर्मी सही फिर भी, तेरे हैं हामी
हमें भी तो करना, अमर जा रहे हैं
प्रभु.............

बुलाना यहाँ फिर भी, दर्शन को अपने
सुमन तुम भरोसे, लगे कर्म हरने
जरा लेते रहना, खबर, जा रहे हैं
प्रभु...........

भजन : मत बोलो अरे मत बोलो

तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले

मत बोले, अरे मत बोले, मत बोले कड़वा बोल रे
तू बजा प्रेम की बाँसुरिया

मधुर–मधुर वचनों से भाई, ससुर नर वश हो जाएँ
कटु वचनों से घरवाले भी, तेरे पास नहीं आएँ
रे भाई, तेरे पास नहीं आएँ
जब बोले, जब मुँह खोले, तब बोल रे, मीठा बोला रे
तू मत बोले.........
वचन–2 में फूल खिलाना, खुशबू सदा लुटाना
तेरे काँटे तेरे चुभेंगे, काँटे नहीं गड़ाना रे, भाई
रस घोले दिल नहीं छोले, तू ऐसी वाणी बोले रे
तू.................
बोली–बोली ही से घर के, चूल्हे दो हो जाते
गृह कलक का जनक इसी को,सज्जन जन बतलाते
सुन भोले मत विष घोले, तू तोल–तोल कर बोल रे
तू...........
अनजाने को भी तो योगी, मधुर वचन मोह लेते
प्यारे मित्रों को भी पराये, कटुक वचन कर देते–2
हँस बोले सबका हो ले, उसके वचन अनमोल रे
तू...............

भजन : प्रभु मंदिर में विधर्मी

तर्ज : तेरे आँगने में
प्रभु मन्दिर में विधर्मी का क्या काम है

जो है मुख मोड़े-मोड़े उनका नहीं यहाँ दाम है।।टेक।।
जिसके पास दौलत, उसका भी बड़ा नाम है-2
गर दर्शन को भी आये-2 झुकने का क्या काम है
जिसके खूब बेटे उसका भी बड़ा नाम है-2
अरे बोली पे लगा दो-दो शादी का क्या काम है
जिसके पास बुद्धि, उनका भी बड़ा नाम है-2
अरे लेक्चर तो झड़वा दो-2 पंडित का क्या काम है
जो है सेठ दानी, उसका भी बड़ा नाम है
ओ नाम पत्थर पे लिखवा दो, गुपचुप का क्या काम है
जो हैं खूब आलसी, उसका भी बड़ा नाम है
चाय बिस्तर पर पिला दो, उठने का क्या काम है
जो हैं पूरे शौकीन, उनका भी बड़ा नाम है-2
उमर पिक्चर में बिता दो, मन्दिर का क्या काम है
विशद भक्तों का, उसका भी बड़ा नाम है-2
अरे भजनों में बिठा दो, उठने का क्या काम है।

भजन : पैसा मेरा है भगवान

तर्ज : रघुपति राघव राजाराम ....
हूँ परतन्त्र करूँ क्या काम, पैसा मेरा आतम राम
पैसा मेरा है भगवान, मेरी पैसा से है शान
अन्तर यही तु मुझसे जान, तू निर्धन और मैं धनवान

मम स्वरूप है, सिद्ध समान, स्त्री बच्चों से है शान
बनना है मुझको धनवान, जिससे होती घर की शान
सुख के दाता ये परिवार, ये ही मेरे संकट हार
इनसे करूँ सदा मैं प्यार, ये ही करेंगे मम उद्धार
जिन शिव ईश्वर ब्रह्माराम, विष्णु बुद्ध हरि जिनके नाम
इनसे मेरा क्या है काम, पैसा दो तो करूँ प्रमाण
चाहे जाए मेरी जान, पैसा दे-दे हे भगवान
दूर करो ये मोक्ष का नाम, मुझको पैसे से है काम
योगी पैसों का ये काम, जो कि भुलाता आतमराम
ऐसा तुम मत करना काम, जो कि जाने ये शिवधाम।

भजन : इस जन्म में न मिले

तर्ज : इस जन्म में न सही
इस जन्म में न मिले, परभव में मिलता है
अपनी-अपनी करनी का फल, सबको मिलता है
इस जन्म में.......
एक पत्थर वो है, जिसकी मूरत बनती है
एक पत्थर वो हे जो, सड़कों पर बिछता है
पत्थर दोनों एक ही, खान से निकलते हैं
अपनी-अपनी.........
एक फूल वो है जो, वेदी पर चढ़ता है

एक फूल वो है जो, अर्थी पर चढ़ता है
फूल दोनों एक हैं, गुलशन में खिलते हैं
अपनी–अपनी..........
एक भाई वो है जो, विषयों में रमता है
एक भाई वो है जो, मुनिराज बनता है
भाई दोनों एक हैं, एक माँ से जन्में हैं
अपनी–अपनी
एक मोती वो है जो, माला में गुँथता है
एक मोती वो है जो, धरती पर गिरता है
मोती दोनों एक ही, सीपों में मिलते हैं
अपनी–अपनी............

भजन

हँस जब जब उड़ा अकेला उड़ा
जिन्दगी में हजारों का, मेला जुड़ा
हँस जब–जब उड़ा, तब अकेला उड़ा–2
राज राजा रहें ना वो रानी रही
कहने सुनने को केवल, कहानी रही
वस्तु तब ही यहाँ आनी जानी रही
ना बुढ़ापा रहा, न जवानी रही
चार दिन के लिए जग, झमेला जुड़ा

हँस जब-जब...........
ठाठ सारे के सारे, पड़े रह गये
कोठी बंगले खड़े के, खड़े रह गये
कुल नगीने जड़े के, जड़े रह गये
अन्त में लखपति के, ना धेला जुड़ा
हँस जब-जब.........
सोच ले सोच ले, अपने अंजाम को
कैसाखुद गर्ज भूला, तू भगवान को
पैसा कौड़ी ना लागे बिना दाम को
भज ले मोहन भगवान परसनाथ को
हँस जब-जब..........

भजन : आ लौट के आ जा महावीर

तर्ज : आ लौट के आ जा
आ लौट के आ जा महावीर, तुम्हें चन्दना बुलाती है
तुम सुन लो ये करुण पुकार, अभागन व्यथा सुनाती है
आ लौट...............
आ करके जाना, तरस ना खाना, ये तुमने कैसा है ठाना
दर्शन की प्यासी, चन्दना उदासी, उसको दर्शन दिखलाना
मेरी नाव पड़ी मझधार, तुम्हें क्यों दया न आती है
आ लौट...........

द्वारे पर आना खाली ही जाना, आहार मुझसे ना लेना
दुखिया बनाके दर्शन दिखाके, मुझको प्रभु यूँ ना सताना
मैंने घोर किये हैं पाप, मुझे ये बात रुलाती है
आ लौट..........
कर्मों ने घेरा, शरण है तेरी, देखो तो मजबूरी मेरी
ओ त्रिशला नन्दन, करती हूँ वन्दन, लीनी शरण है तेरी
मैंने किया ना पश्चाताप, मेरी आँखें भर आती हैं
आ लौट..........

भजन : नहीं चाहिए दिल दुखाना

नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का
सदा न रहा है, सदा न रहेगा, ये जमाना किसी का। नहीं....
आएगा बुलावा तो, जाना पड़ेगा
सर तुझको आखिर, झुकाना पड़ेगा
वहाँ ना चला है, वहाँ ना चलेगा, ये बहाना किसी का
नहीं............
पहले तो तुम अपने को संभालो
हक नहीं तुमको, बुराई औरों में निकालो
बुरा है बुरा जग में-2 बताना पड़ेगा
नहीं.......
दुनिया का गुलशन तो, सजा ही रहेगा

ये तो जहाँ में लगा ही रहेगा
आना किसी का जग में-2 जाना किसी का
नहीं...........
शोहरत तुम्हारी, रह जाएगी ये
दौलत यहाँ पर रह जाएगी ये
नहीं साथ जाता ये-2 खजाना किसी का
नहीं...........

भजन : तेरा ही सहारा है

तर्ज : चुप-चुप खड़े हो जरूर कोई बात है..
गहरी-गहरी नदियाँ नाव बीच धारा है।
तेरा ही सहारा प्रभु, तेरा ही सहारा है।।
डगमग करती है, कर्मों के भार से।
मारग भूल रहे हैं, घोर अन्धकार से।
डूबती सी नाव का, तू ही खेवनहारा है।
तेरा ही सहारा ....।।
अग्नि का नीर हुआ, तेरे प्रताप से।
कुष्ठ रोग दूर हुआ, तेरे नाम जाप से।।
भव दुःख का तू ही, मेटनहारा है।
तेरा ही सहारा है.......।।
वीतराग छवि तेरी, लागे अति प्यारी है।

चरणों में जाऊँ नाथ, बलि बलिहारी है।।
रूप तेरा देखकर, शान्ति चित्तधारा है।
तेरा ही सहारा है...............

भजन : अरे भक्त लोगों

तर्ज : अरे ग्वाल बालों...
अरे भक्त लोगों, जरा भक्ति तो कर लो
तुम्हारे नगर में गुरु आ गये हैं
भेष है दिगम्बर, पिछी है कमण्डल
वाणी का अमृत, लिये आ गये हैं
अरे........
गुरु की शरण में, जो आ गया है
मुक्ति के पथ को, वो पा गया है
करो भक्ति इनकी, काटो कर्म को
ज्ञान का अमृत, लिये आ रहे हैं
अरे........
मिला तुमको अवसर, देखो आज कैसा
शायद मिले न, तुम्हें आज जैसा
करो इनका वन्दन, करो इनका दर्शन
कमण्डल में अमृत लिये, आ गये हैं
अरे.......

वाणी का अमृत, हमें भी पिला दो
मुक्ति का रास्ता, हमें भी बता दो
नमन है नमन है, नमन है हमारा
संकल्प लेके, हम आ गये हैं
अरे......
लाखों को तारा, हम को भी तारो
खता क्या हुई जो, हमें न सँभाला
हम हैं तुम्हारे, तुम हो हमारे
शरण में तुम्हारी, हम आ गये हैं
अरे.......

भजन : रत्नों से भरी तिजोरी

तर्ज : आय हाय हो मजबूरी...
हाय हाय रे मजबूरी, रत्नों से भरी तिजोरी
तुझे रात में नींद न आए, इस की रक्षा करने में
यह उमर बीतती जाए
हाय हाय.........
कमा कमा कर धन को जोड़ा, खाया नहीं खिलाया
नहीं दान में फूटी कौड़ी, मन में लोभ समाया-2
कुछ तो पुण्य कमा ले पगले, यही साथ में जाए
हाय हाय..........

बचपन बीता गयी जवानी, देख बुढ़ापा रोया
नर तन यही अमोलक तूने, विषयों में है खोया–2
अब तो सोच समझ ले भाई, समय गुजरता जाए
हाय हाय...............
जो कुछ तुझको मिलेगा प्यारे, भक्ति से ही मिलेगा
सुख शान्ति का जीवन तुझको, भक्ति से ही मिलेगा–2
भक्ति से मुक्ति का रास्ता, गुरुवर यही बताएँ
हाय हाय..............
मेरा–मेरा क्यों करता है, कुछ भी नहीं है तेरा
यह संकल्प कहे है, तुझसे, जाए हँस अकेला–2
दो दिन की है जिन्दगी तेरी, क्यों इतना इतराए
हाय हाय...........

भजन : तुम्हारे नगर में कल

तर्ज : अरे ग्वाल बालों ...
अरे भक्त लोगों, जरा भक्ति तो कर लो
तुम्हारे नगर से, कल जा रहे हैं
आये थे दर्शन, करने प्रभु के
तुम्हारे नगर से, कल जा रहे हैं
अच्छा लगा हो जो, कुछ–ग्रहण उसको करना
बोलो गलत हो, उसे भूल जाना

तुम हो हमारे, हम हैं सभी के..
तुम्हारे...............
आएँगे फिर से, कह नहीं सकते
गर तुम बुलाओंगे, तो रुक नहीं सकते
आया है जो भी, उसे जाना पड़ेगा
तुम्हारे................
आये थे हम तो, तुम्हें साथ लेने
संसार सागर से, तम्हें पार करने
चलो ना चलो ये, तुम्हारी है इच्छा
मुक्ति के पथ पर, हम जा रहे हैं
जीवन में याद रखना, प्रभु को न भूल जाना
पापों को छोड़, भक्ति में मन लगाना
कामना है मेरी, मिले शान्ति तुम को
इसी भावना को, लिये जा रहे हैं
तुम्हारे..............

भजन : सब कुछ दिया प्रभु ने

तर्ज : वो दिल कहाँ से लाऊँ गुरुवर तुम्हें रिझाऊँ
सब कुछ दिया प्रभु ने, फिर भी सबर नहीं है
सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं है
किस्मत में जो लिखा था, सब कुछ दिया है हमको

जो ना मिला कभी था, वो भी मिला है हमको
ज्यादा मत सोच बन्दे, कल की खबर नहीं है
सब...........
दी है निरोग काया, घर में बहुत है माया
नारी सुलक्षणा है, सुत आज्ञाकारी पाया
ऐसे ये सुख मिले हैं, इसकी खबर नहीं है
सब..............
सुत बहू की अमानत, बेटी दामाद की है
काया शमशान की है, जिन्दगी ए मौत की है
कितने ये भोग भोगे, फिर भी खबर नहीं है
सब............
पंच इन्द्रियाँ मिली हैं, मन भी मिला ये कम है
नवरत्न यह अमोलक, इसका न मोल कम है
तप करने को मिला है, इसकी खबर नहीं है
सब..............

भजन : करो तपस्या मनमानी

करी जवानी में मनमानी, हो मन मानी
आया बुढ़ापा जब जानी
बालापन हँस खेल गमाया
आयी जवानी ब्याह कराया
भोगों में खो गयी जिन्दगानी, हो जिन्दगानी

आया बुढ़ापा जब जानी
चाय नाश्ता मिलता नहीं
कोई तुम्हारी मानता नहीं
तुमने जवानी में कब मानी, हो कब मानी
आया बुढ़ापा जब जानी
भैया भोगों को तुम छोड़ो
वीर प्रभु से नाता जोड़ो
करो सफल तुम जिन्दगानी
आया बुढ़ापा जब जानी... करो... जवानी.....
हमने तुमको बहुत समझाया
प्रवचन किये और पाठ पढ़ाया
तुमने हमारी भी कब मानी हो कब मानी
आया बुढ़ापा जब जानी
करी जवानी में.....।

दुनिया में रहने वाले क्या तुमको

तर्ज : दुनिया में रहने वाले

दुनिया में रहने वाले, क्या तुमको ये खबर है
दो दिन की जिन्दगी है, पल भर का ये सफर है
दुनिया............
जीना जो चाहते थे, वो भी तो जी न पाये
घर बार छोड़कर सब, मिट्टी में जा समाये

कल तेरा मेरा सबका, अंजाम ये असर है
दो दिन..............
मत नाज कर तू अपने, सहभागी दोस्तों पर
छोड़ जाएँगे ये तुझको सब खाक में मिलाकर
तेरा यहाँ न कोई, हमदम न हमसफर है
दो दिन....................
मरने से पहले तौबा, अपने गुनाओं से कर ले
अंजाने मान जा तू, बातें खुदा से कर ले
मरने के बाद तेरा, मुश्किल बहुत सफर है
दो दिन.................
कुछ भी नहीं है तेरा, दो गज जमीं है तेरी
मिल जाए गर ये तुझको, ये भी नहीं जरूरी
इस बात का पता तो, होता नहीं किसी को
दो दिन.................
आँखों ने तेरी तुझको, कितने दिखाये मुर्दे
काँधों से अपने तूने, कितने उठाये मुर्दे
फिर भी बनाहै अन्धा, जिसपे तेरी नजर है
दो दिन...................
जब मौत ने पुकारा, कुछ भी न काम आया
मरते हुए को देखा, कोई बचा न पाया
सच्चाई से तू उसकी, क्यूँ आज बेखबर है

दो दिन..................

मरते समय न आयी, कुछ काम झूठी माया
सब कुछ था पास, लेकिन कुछ भी न काम आया
बेकार निकली आखिर, दुनिया की हेरा–फेरी
दो दिन...........

इस बात का पता तो, होता नहीं किसी को
किस वक्त मौत आए, कब खत्म जिन्दगी ये
यूँ ही पड़ी रहेगी, बेजान लाश तेरी
दो दिन.................

किसमें मिलेगी मिट्टी, किससे कफन मिलेगा
क्या जाने कोई तुझको, कन्धा भी दे सकेगा
अंजाने याद रखना, इस बात को तू मेरी
मिल जाए गर ये तुझको, ये भी नहीं जरूरी
दो दिन.......

खिलौना जानकर

खिलौना जानकर दिल ये, मेरा क्यूँ तोड़ जाते हो
क्यों कँगना हाथ का तोड़ा, मुकुट क्यों तोड़ जाते हो
प्रभु तोरण पे जब आये, पशु थे जोर से चिल्लाये
हो इनका घात शादी में, ये सुनकर नेमी घबराये
जरा दर्शन दे जाओ, क्यों रथ को मोड़ जाते हो
खिलौना..........

दया पशुओं पे है आयी, नहीं मुझपे तरस आया
खता मेरी बता जाओ, नहीं क्यों दर्श दिखलाना
मेरी नव-भव की प्रीति, क्यों क्षण में तोड़ जाते हो
खिलौना.............

उतारे वस्त्र आभूषण, चढ़े गिरनार पर जाकर
कोई जाकर मना लाओ, मेरी विपदा को समझकर
मुझको किसके सहारे पर, प्रभु जी छोड़ जाते हो
खिलौना.............

मुझे यह हो गया निश्चय, कि स्वारथ का जगत सारा
तजूँ मैं मोह ममता को, तजूँ घरबार-परिवारा
बनूँ में अर्जिका, बन में, प्रभु जिस ओर जाते हो
खिलौना..................

कहे राजुल सुनो सखियो, उतारो मेरा सब गहना
ना छेड़ों ब्याह की चर्चा, मुझे घर में नहीं रहना
मैं शिव सुन्दर को पाऊँगी, प्रभु जी छोड़ जाते हो
खिलौना................

हर बात को तुम भूलो

हर बात को तुम भूलो भले, माँ-बाप को तुम मत भूलना
उपकार इनके लाखों हैं, इस बात को तुम मत भूलना
हर बात.............

धरती पर गो को पूजा है, भगवान को लाख मनाया है

अब तेरी सूरत पायी है, संसार में तुझको बुलाया है।
इन पावन लोगों के मन को, पत्थर बनकर मत तोड़ना
उपकार..........
गीले में सदा ही सोये हैं, सूखे में तुझको सुलाया है
बाँहों का बना करके झूला, तुझे दिन और रात झुलाया है
इन निर्मल निश्चल आँखों में, इक आँसू भी मत घोलना
उपकार...............
अपने ही पेट को काटा है, और तेरी काया सजायी है
अपना हर कौर खिलाया तुझे, तब मेरी भूख मिटायी है
इन अमृत देने वालों के, जीवन में जहर मत घोलना
उपकार............

हाय हाय रे मजबूरी

हाय हाय रे मजबूरी, जाना है हमें जरूरी
तुम आँसू नहीं बहाओ
जब दुनिया तुमको ठुकराये, पास हमारे आओ
हाय...........
चातुर्मास हुआ है पूरा हमको जाना होगा
अभी आपकी मजबूरी है तुम को रहना होगा-2
साधु का नहीं कोई भरोसा-कब आए कब जाए
हाय..........
चार महीने से समझाया, कुछ तो मन में लाओ

बहुत रहे हो तुम पर घर में, अब निज घरमें आओ-2
पर को अपना मान-मान कर, क्यों संसार बढ़ाओ
हाय............
भूल से कोई भूल हुई हो, उस को आप भुलाना
हमको भूल जाओ तो गम नहीं, धर्म को नहीं भूलाना-2
तज कर माया मोह को प्यारे, आतम में रम जाओ
हाय...............

कल भी मन

कल भी मन अकेला था आज भी अकेला है
जाने मेरी किस्मत ने, ये कैसा खेल खेला है
कल भी..................
ढूँढ़ते हो तुम खुशबू, कागजी गुलाबों में
प्यार सिर्फ मिलता है, आज कल किताबों में
रिश्ते नाते झूठे हैं, स्वार्थ का झमेला है
जाने मेरी..................
जिन्दगी के मण्डप में, हर खुशी कुँवारी है
जिससे माँगने जाये, हर कोई भिखारी है
कह कहें कि आँखों में, आँसुओं का रेला है
जाने मेरी.......

क्षुल्लक जी का गीत

मेरा मन बोले मेरा तन डोले, मेरा कब से मन में विचार

मेरी कब होवेगी मुनि दीक्षा
एक लंगोटी का भी परिग्रह मुझको नहीं सुहाता
कब छूटे ये सारा परिग्रह मेरे मन में आता
कि स्वामी मेरे मन में आता
मैं चरण पडूँ मैं नमन करूँ, मेरी मुनि बनने की चाह रे
मेरी होवेगी कब मुनि दीक्षा
मेरा मन................
बहुत भावना भायी मैंने, आज समय वह आया
रत्नत्रय को धारण करने, शरण आपकी आया
कि गुरुवर शरण आपकी आया
मैं चरण पडूँ मैं नमन करूँ, मेरी विनय करो स्वीकार रे
मेरी आज ही होवे मुनि दीक्षा
मेरा मन.............
मेरा मन बोले, मेरा तन डोले, मेरा कब से मन में विचार रे
मेरी कब होवेगी मुनि दीक्षा
मेरा मन..............

मुक्तक

गुरुवर मेरे ख्याल की तस्वीर आप हैं।
हर इक हसीन ख्वाब की तस्वीर आप हैं।।
खुशियाँ भी आपसे हैं, मेरे गम भी आपसे।
मुझको यकीन है, मेरी तकदीर आप हैं।।

बैठा हुआ गला गीत गा नहीं सकता।
रखा हुआ पैर मंजिल पा नहीं सकता।।
जिस पर गुरुवर का आशीर्वाद है।
वह अंधेरे में भी ठोकर खा नहीं सकता।।

मोर पंख से बनी

मोर पंख से बनी ये पीछी, कितनी सुन्दर लगती है।
क्यों रखते हैं मुनिवर इसको, कौन-सी शिक्षा मिलती है।।टेक।।
मोर ही ऐसा पंछी होता, नहीं परिग्रह रखता है।
स्वयं ही छोड़े अपने पंख को, नहीं भार को सहता है।।
छोड़ों परिग्रह सारा तुम भी, ये भी शिक्षा मिलती है।
मोर............।1।।
बहुत मुलायम होती है यह, जीव नहीं मर सकता है।
मिट्‌टी धूली ग्रहण न करती, भारीपन नहीं रहता है।।
स्वयं पंख का करे त्याग वह, त्याग की शिक्षा मिलती है।
मोर.............।।2।।
पहला गुण है होती मुलायम, दूसरा जीव नहीं मरते।
तीसरा गुणहै पानी-पसीना, चौथा धूल नहीं गहते।।
परवस्तु को ग्रहण न करना, यह भी शिक्षा मिलती है।
मोर............।।3।।
पाँचवाँ गुण हल्कापन इसमें, भारीपन का काम नहीं।
फिर परिवर्तन क्यों करते हैं, इसका कुछ भी नाम नहीं।।

पंख झरने पर करो परिर्वतन, त्याग की शिक्षा मिलती है।
मोर............॥4॥

आ जाओ प्रभु अब तो

तर्ज : संसार है एक नदिया..

संसार के सागर में, मिलते न किनारे हैं।
आ जाओ प्रभु अब तो, हम तेरे सहारे हैं।।टेक।।
गम से भरी दुनिया में, कोई भी नहीं अपना
अरमान अधूरे हैं, टूटा है हर एक सपना
हमको भी सहारा दो, हम भी बेसहारे हैं
आ जाओ......
जीवन का सफर लम्बा, राहों में अंधेरा है
आँखों में भी आँसू, दुःख दर्द ने घेरा है
दर-दर पे भटकते हैं, तकदीर के मारे हैं
आ जाओ..........
कहते हैं तेरे दर पे, तकदीर सँवरती है
जो डूबने वाली है, वो नाव उबरती है
दुःख दूर करो भगवान, हम तो दुखियारे हैं
आ जाओ.............

भरता-भरता है पापों का घड़ा

तर्ज : चला चला रे ड्राइवर गाड़ी हौले-हौले..

भरता भरता है पापों का घड़ा हौले हौले

जीवन की नैय्या, डगमग डोले।।टेक।।
बेईमानी से पैसा जोड़ा–2 और तिजोरी भरता
दीन दुःखी पर तरस न आए, नहीं प्रभु से डरता–2
धर्म काँटे पे–2 बैठ काहे कमती तोले–2
जीवन की नैय्या.....
माता–पिता–सुत–दादा–नानी, कोई नहीं है अपना
जिस दिन तेरी अर्थी जाए, टूटा सारा सपना
चली चली रे कांधों पे, अर्थी होले–होले
जीवन की नैय्या.....
दानी देता दान में पैसा–2, वही साथ में जाए
कर ले भलाई, अपनी–अपनी, पड़ा वहीं रह जाए
कर ले कर ले रे–2 दान, आत्मा तेरी बोले–2
जीवन की नैय्या.......

सांस आ रही है एक सांस

तर्ज : याद आ रही है, तेरी याद आ रही है...
साँस आ रही है, एक साँस जा रही है
आने जाने के चक्कर में, जिन्दगी जा रही है
साँस आ..........
पुण्य कर्म के फल से ये उत्तम नर तन पाया
मोह माया के चक्कर में, इसको यूँ ही गंवाया
बचपन खेला, आयी जवानी, ये भी जा रही है

साँस आ..........

देख बुढ़ापा अपना भैया, पीछे तू पछताएगा
ये भी मेरा वो भी मेरा, साथ न तेरे जाएगा
कर्म की करनी भैया तेरे, संग में जा रही है
साँस आ..........

मैं मूर्ख अज्ञानी प्रभु जी, मुझको कुछ न आए।
दर्शन दे दो प्रभु जी, कल्याण मेरा हो जाए
मोह में फँसती पाप में डूबी, आयु जा रही है
साँस आ...........

गोम्टेश्वर भगवान

जय गोमटेश, जय गोमटेश
मम हृदय विराजो, जय-जय बाहुबली
हम यही कामना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो
हो नगर-नगर में बाहुबली, सारी धरती धर्म स्थल हो
हम यही........

हम भेद मतों के समझें पर, आपस में कोई मतभेद न हो
ऐसे आचरण करें जिन पर, कभी क्षोभ न हो कोई खेद न हो
जो प्रेम प्रीति की शिक्षा दे, यही धर्म हमारा सम्बल हो
हम यही........

आराध्य वही हो जिन सबने, मानवता का सन्देश दिया

तुम जीयो सभी को जीने दो, सबके हित यह उपदेश दिया
उनके सिद्धान्तों को मानें, और जीवनका पथ उज्ज्वल हो
हम यही............
चिन्तामणि की चिन्ता न करें, जीवन को चिंतामणि जाने
परिग्रह ना अनावश्यक जोड़ें, क्या है आवश्यक पहचानें
क्षण भंगुर सुख के हेतु कभी, नहीं चित्त हमारा चंचल हो
हम यही..............

भजन : वैराग्य गीत

प्रेम की न ये तोड़ो लड़ी, मेरी विनती सुनो तो सही
लम्बी-लम्बी उमरिया को छोड़ो, मौत तो सबके सिर पर खड़ी
मैं जो कहता सुना तो सही,
ब्याह करके तुम लाये मुझे, छोड़कर अब कहाँ को चले
गर जो साधू तुम्हें बनना था, तो फिर मुझ से क्यों आकर मिले
जरा सोचो तो तुम, तेरे चरणों में हम
आज कैसी ये विपदा पड़ी, मेरी विनती सुनो तो सही
ब्याह करके जो लाये थे हम, साथ में तुम चलो क्या है गम
नेमि राजुल को तू याद कर, तोड़ी नौ भव की प्रीति क्या गम
अब तो संयम धरूँ नहीं घर में रहूँ
आठ कर्मों की काटूँ लड़ी
मेरी विनती तुनो तो सही....

जीव आता अकेला ही है, और जाता अकेला ही है
साथ में कुछ नहीं लाया था, ना लेकर जाता भी है
कोई अपना नहीं, तू समझती नहीं
स्वार्थ की है ए दुनिया बड़ी,
मैं जो कहता सुनो तो सही
प्रेम की....।

रोको रे रोको कोई

तर्ज : उड़ चला पंछी–वैराग्य
चला है वैरागी रे, छोड़ माया जाल को
रोको, रे रोको, कोई हाय मेरे लाल को
रो–रो के माता कहती, मुझे तू बता जा
किस के सहारे मुझको, तू छोड़ जाता
सरल तो नहीं है मारग, देख पञ्चमकाल को
रोको..........
कैसे ए मन में तेरे, वैराग्य आया
मुनि बनने को तेरा, मन ललचाया
पहला है पेपर देखो, उखाड़े जो बाल को
रोको........
नहीं खेल बच्चों का, जो तूने ठानी
सोच समझकर करे, देखो जिनवाणी

संकल्प करके तूने, काटा माया जाल को
रोको........
माता तू मेरी कैसी, बातें हैं करती
पिया दूध मैंने तेरा, क्यों न समझती
आठों कर्म को काटूँ, तजूँ मोह जाल को
रोको.....

केशलुंच का पहला पेपर

तर्ज : कसमें वादे....
केशलुंच का पहला पेपर, जो भी इसमें पास हुआ
वही करेगा केश का लुंचन, जिसके मन में वैराग्य हुआ
केशलुंच का.....
तन से ज्यादा रहता राग है, और अधिक फिर बालों में
देखों कैसे करें यूँ लुंचन, तन से राग हटाने को
अपने हाथ से खुद ही लुंचे, तब जानों वैराग्य हुआ
केशलुंच का..........
फिर आगे की करें कामना, मूल गुणों अट्ठाईस की
कपड़े उतारे हुआ दिगम्बर, महाव्रतों की दुहाई की
मुनि मुद्रा को धारण करके, निज आतम में वास हुआ
केशलुंच का......
जनमे नंगा मरते नंगा, बीच में कपड़ा आया क्यों

तप करने को मिला है जीवन, फिर तू पाप कमाये क्यूँ
रागद्वेष की इस कीचड़ में, फिर क्यों तूने वास किया
केशलुंच का............
रत्नत्रय को धारण कर ले, यही मार्ग बतलाया है
जिसने इसको धारण कीना, यही मोक्ष पथ पाया है
जिसने निज आतम को जाना, वही मोक्ष में वास किया
केशलुंच का.......

भजन : पार्श्वप्रभु जी पार लगा दो

(तर्ज : नगरी–नगरी द्वारे–द्वारे..)

पार्श्व प्रभु जी पर लगा दो, मेरी ये नावरिया
बीच भँवर में आन फँसी है, काढ़ो जी साँवरिया
धर्मी तारे बहुत ही तुमने, एक अधर्मी तार दो
वीतराग है नाम तिहारा, तीन जगत हितकार हो
अपना विशद निहारो स्वामी, काहे को विसरिया....
चोर भील चाण्डाल है तारे, ढील क्यों मेरी बार है
नाग नागिनी जरत उबारे, मन्त्र दिया नवकार है
दास तिहारा कष्ट में है, लीजो जी खबरिया...
लोहे को जो कञ्चन कर दे, पारस नाम परवान है
मैं हूँ लोहा तुम प्रभु पारस, क्यों न फिर कल्याण हो
नाथ मिटा दो अब तो मेरी, भव–भव की घुमरिया...

भटक रहा हूँ मैं भव सागर, आपका मुक्ति निवास है
अपने पास बुला लो मुझको, एक ये ही अरदास है
भूल रहा हूँ नाथ बता दो, शिवपुर की डगरिया...

भजन

आज मैं अपने दिल की बात आपसे कहता हूँ
इस दुनिया में सबसे ज्यादा मैं आपको चाहता हूँ
मेरे दिल के जख्म तो वक्त की नजाकत है
मैं आज भी तुम्हें याद करके आपके स्नेह की लहरों में बहता हूँ।
जिन्दगी खत्म हो जाएगी प्यार कम ना होगा
ना जाने गुरुवर तुमसे मिलन कब होगा
आज भी अगर तुम मिल जाओ तो मैं समझूँगा कि
मेरी तरह खुशकिस्मत इंसान इस धरती पर और कौन होगा।।

जंगल जंगल पर्वत पर्वत

तर्ज : नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे

जंगल-जंगल पर्वत-पर्वत ढूँढ़े रे साँवरिया
नेमि प्रभु जी कोई बता दे, मुझको तो डगरिया
जंगल..............

मैंने तो बस यही सुना था, वो जूनागढ़ आएँगे-2
ले बारात आएँगे नेमि जी, मुझे ब्याह ले जाएँगे-2
मगर न आये द्वारे तक मैं, देखती रही डगरिया

जंगल...........

पशुओं का तो क्रन्दन सुनकर, उन्हें बंधाई धीर रे–2
मुझसे खता हुई क्या ऐसी, बने आप वे वीर रे–2
अब तो नाथ तुम्हारे बिन, मैं हो गयी रे बावरयिा
जंगल...........

खड़ी–खड़ी मैं बाँट निहारूँ, लिये हाथ में माता रे–2
जाने कब दर्शन देने वो, मात शिया के लाल रे–2
भनक पड़ी यह कान में मेरे, गये मेरे साँवरिया
जंगल...........

आती हूँ मैं भी प्रभु सब कुछ, ठाठ हथेली छोड़कर
मोह कर्म का नाश करूँगी, आपके दर्शन पायकर–2
चलूँ तुम्हारे पद पर अब ये, छोड़ चली नगरयिा
जंगल..........

अशुभ कर्म का उदय हुआ है

तर्ज : तीर्थ वन्दना

तीरथ करने चली सती, निज पति का कुष्ठ मिटाने को
अशुभ कर्म का उदय हुआ है, कर्मबन्ध छुड़ाने को।।टेक।।
कर्मों की गति न्यारी देखो, राजा के घर जन्म लिया।
पूर्व जन्म के कई भोगों से, कोढ़ी रूप में मिले पिया।।
तरह–तरह के संकट झेले, पत्नी धर्म निभाने को।

अशुभ.............

गिरिनार गिरि पे नेमिनाथ ने, आतम ध्यान लगाया था।
पूज्य भूमि है इसीलिए यहाँ, मोक्ष परम पद पाया था।।
मन वच तन से शीश झुकाते, आठों कर्म मिटाने को।
अशुभ...............।।

मानतुंग का ऊँचा पर्वत, सबके मन को भाता है।
कोड़ा कोड़ी मुनियों ने यहाँ, केवल ज्ञान उपाया है।।
सोनागिरि पे बनी है नशियाँ, मोक्ष मार्ग दर्शाने का।
अशुभ.........।।

पैरों में शाले पड़ जाते तन, की सुध बुध नहीं रही।
दुखों की चिन्ता ना करती, मन में समता भाव धरी।।
हस्तिनापुर के दर्शन कराती, मन की व्यथा मिटाने को।
अशुभ.............।।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ ने, अयोध्या में जनम लिया।
केवलज्ञान उपाकर के, जैन धर्म का प्रचार किया।।
इन्द्र इन्द्राणी आवे, सब ही, प्रभु का जन्म मनाने को।
अशुभ........।।

राजुल की पुकार

खिलौना जानकर दिल ये, मेरा क्यों तोड़ जाते हो।
क्यों कँगना हाथों का तोड़ा, मुकुट क्यों तोड़ जाते हो।।टेक।।

प्रभु तोरण पै जो आये, पशु थे रोये चिल्लाये।
हो इनका घात शादी में, ये सुनकर नेमि थर्राये।।
जरा दर्शन तो दे जाओ, क्यों रथ को मोड़ जाते हो।
खिलौना जानकर................।।
दया पशुओं पे आयी, क्यों नहीं मुझ पे तरस खाया
भूल मेरी बता जाओ, नहीं क्यों दर्श दिखलाया
मेरी नव भव की थी प्रीति, क्यों क्षण में तोड़ जाते हो
खिलौना जानकर................।।
मुझे यह हो गया निश्चय, है स्वारथ का जगत सारा।
तजूँ मैं मोह ममता को, तजूँ घर–बार परिवारा।।
बनूँ जोगन बसूँ वस वन, प्रभु जिस ठौर जाते हो।
खिलौना जानकर................।।
कहे राजुल सुनो सखियो, उतारो मेरा सब गहना।
न छेड़ो ब्याह की चर्चा, मुझे घर में नहीं रहना।।
मैं शिव सुन्दर से झगडूँगी, प्रभु क्यों छोड़ जाते हो।
खिलौना जानकर................।।

समाधि भावना

दिन रात मेरे स्वामी मैं भावना ये भाऊँ।
देहान्त के समय में, तुमको न भूल जाऊँ।।
शत्रु अगर हो कोई, सन्तुष्ट उसको कर दूँ।

समता का भाव धरकर, सबसे क्षमा कराऊँ।।
त्यागूँ आहार पानी औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊँ।।
जागे नहीं कषायें, नहीं वेदना सताए।
तुम से ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ।।
आतम स्वरूप अथवा, आराधना विचारन।
अरिहन्त सिद्ध साधू, रटना यही लगाऊँ।।
धरमात्मा निकट हों, चर्चा धरम सुनाएँ।
वो सावधान रक्खें, गाफिल न होने पाऊँ।।
जीन की हो न वांछा, मरने की हो न इच्छा।
परिवार मित्र जन से, मैं राग को हटाऊँ।।
भोगे जो भोग पहले उनका न होवे सुमरन।
मैं राज्य सम्पदा या, पद इन्द्र का ना चाहूँ।।
रत्नत्रय का पालन हो, अन्त में समाधि।
विशद प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।

बस परदेशी हुआ रवाना

तर्ज : पड़े रहे रे अँगले-बँगले...

आशाओं का हुआ खात्मा, दिली तमन्ना धरी रही।
बस परदेशी हुआ रवाना, प्यारी काया पड़ी रही।।
करना-करना आठों पहर ही, मूर्ख फूँकन लगा है।

मरना मरना मुझे कभी नहीं, लफ्ज जबाँ पर लाता है।।
पर सब ही मरने वाले हैं, झण्डी न किसी की खड़ी रही।
बस परदेशी..............।।
इक पण्डित जी पत्रिका ले, गणित हिसाब लगाते थे।
समय काल तेजी मन्दी, की होनहार बतलाते थे।।
आया काल चले जोशी जी, पत्री कर में धरी रही।
बस परदेशी..............।।
एक वकील ऑफिस में बैठे, सोच रहे यों अपने दिल।
फलां दफा पर बहस करूँगा, पाइंट मेरा बड़ा प्रबल।।
इधर कटा वारंट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही।
बस परदेशी..............।।
एक साहब बैठे दुकान पर, जमा खर्च खुद जोड़ रहे।
इतना लेना इतना देना, बड़े गौर से खोज रहे।।
कालबली की लगी चोट, जब कलम कान में टँगी रही।
बस परदेशी..............।।

हाय रे बुढ़ापा

तर्ज : ऐ मेरे चमन के फूलों ...
ऐ मेरे वतन के फूलों, जरा आँख में भर लो पानी।
हम वरिष्ठ नागरिकों की, जरा सुन लो आज कहानी।।
कोई वकील डॉक्टर जज थे, कोई टीचर कोई अधिकारी।

हम गर्व किया करते थे, गयी निकल अकड़ अब सारी।।
ऐ मेरे चमन के फूलों....
निर्धनता ओर कष्टों में, बेटों को हमने पाला।
बिना खिलाये इनको, कभी तोड़ा नहीं निवाला।।
अब पिटते उन पूतों से, है हद की यह शैतानी।
ऐ मेरे चमन के फूलों....
मल मूत्र में रह करके, जिन पूतों को पाला-पोसा।
वे ही लाड़ले हमको, अब दिखलाते हैं घूँसा।।
अब जीवन से ही हमको, हो रही आज ग्लानी।
ऐ मेरे चमन के फूलों....
पढ़ा-लिखा कर बेटे, सब सम्पन्न खूब बनाये।
शिक्षित और सुन्दर सी, हम बहुएँ उनकी लाये।।
अब कहा न माने बेटा, तंग करती है बहुरानी।
ऐ मेरे चमन के फूलों....
यदि पुत्र छोड़ बेटी से, हम करते हैं फरियाद।
बेटी तो गले लगा ले, पर क्यों माने दामाद।।
भूले वेद पुराण और गीता, भूले सब जिनवाणी।
ऐ मेरे चमन के फूलों....
वही पेड़ दौड़ते खाने, जिन्हें पाता था बनमाली।
बस दुआ एक ही माँगी, संग छोड़े न घरवाली।।
दे सकती खिचड़ी दलिया, केवल वह महारानी।

ऐ मेरे चमन के फूलों....

मेरी डोली लेके चले हो

मेरी डोली लेके चले हो, बोलो बन्धु इधर किधर।
लोग खड़े जाने पहचाने, राह में मेरी इधर-उधर।।
मेरी डोली....।। टेक।।
कैसी गलती की है तुम्हारी, ज्ञान में मैंने पहली बार।
तुम तो सब पैदल चलते हो, मैं हूँ इन काँधों पर सवार।।
शर्मिंदा हूँ जाते-जाते छोड़, के तुमको नयी डगर।
लोग खड़े......।।
मजबूरी मेरी तो देखो, बोल ना कुछ भी पाता हूँ।
अन्तिम विदा कहूँ मैं कैसे, बेवस हो रहा जाता हूँ।।
जाने की जल्दी है मुझको, लम्बा है ये मेरा सफर।
लोग खड़े......।।
किसकी ये आवाज है आयी, टप-टप आँसू गिरने की।
पौंछा सिंदूर चूड़ियाँ टूटी, सजन सलोनी सजनी की।।
शायद याद आ गयी तुमको, प्रथम मिलन की प्रथम पहर।
लोग खड़े......।।
बचपन बीता जिसकी गोद में, रोती है वह सुबक सुबक।
पिता भाई सब चिल्लाते हैं, बहना रोती दुबक दुबक।।
इनसे कह दो राह न रोके, जाना है मुझे दूर नगर।
लोग खड़े......।।

अच्छा तो मुझे ले ही आये, जहाँ पे मुझको आना था।
अपने देश में आ ही पहुँचा, वो देश बेगाना था।।
लकड़ी के इस ढेर पर रखकर, रहते हो क्यों तितर-वितर।
लोग खड़े......।।

इक रोज तो चलना है

तर्ज : एक रोज तो चलना है...
इक रोज तो चलना है, कुछ दिन का ठिकाना है।
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, यूँ ही आना और जाना है।।
उड़ जाएँगे पंछी बन, तेरे प्राण गगन की ओर।
रह जाएगी बस माटी, मच जाएगा ऐसा शोर।।
उठ जाएगा दुनिया से, तेरा दाना पानी है।

तुझे कोई नहलाएगा, पर होश नहीं तुमको।
कोई प्यार से देखेगा, कोई रोएगा तुझको।।
दूल्हा सा सजाकर के, अर्थी पर सुलाना है।
कन्धों पे उठाकर के, कुछ लोग तेरे तुझको।।
ले जाएँगे सब मिलकर, शमशान में ही तुझको।
कुछ पल की देरी है, सब कुछ मिट जाना है।।
तुझे मृत्यु शैय्या पर, फिर नींद सुला देंगे।
तेरी सुन्दर काया को, फिर आग लगा देंगे।।

दो गज का कफन देकर, बाकी सब कुछ छुड़ाना है।
इक रोज तो चलना है, कुछ दिन का ठिकाना है।

पधारो जैन जगत के ताज

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत
स्वागत करने आज आपका, आया जैन समाज
पधारो जैन जगत के ताज।
सत्य अहिंसा के व्रतधारी, मानवता के आप पुजारी।
दया धर्म के हो व्रतधारी, ममता भी तुमसे है हारी।।
ऐसे योगीराज का स्वागत, करते हम सब आज।
पधारो जैन जगत के ताज........।।
महा तपस्वी मुनिवर प्यारे, जैन धर्म के आप सहारे।
कृपा करके यहाँ पधारे, भविजन के हो आप सहारे।।
मोक्ष मार्ग के नेता का हम, करते स्वागत आज।
पधारो जैन जगत के ताज........।।
सत्य अहिंसा पाठ पढ़ाया, जैन धर्म को है फैलाया।
दया धर्म की ज्योति जगाने, आडम्बर को दूर भगाने।।
जनता हर्षित होकर गुरुवर, करती स्वागत आज।
पधारो जैन जगत के ताज........।।

वीरा जिनका याद करे

तर्ज : चलो बुलावा आया है..

वीरा जिनको याद करें, वे लोग निराले होते हैं।
वीरा जिनका नाम पुकारे, किस्मत वाले होते हैं।।
चलो बुलावा आया है, वीरा ने बुलाया है।
ऊँचे मन्दिर देख के तेरे, सबका मन हर्षाया है।।
सारे जग में एक ठिकाना, सारे गम के मारों का।
रस्ता देख रहा है वीरा, अपने आँख के तारों का।।
मस्त हवाओं का एक झोंका, ये सन्देश लाया है।
सारे बोलों जय वीरा की......।।
जय वीरा की कहते जाओ, आने जाने वालों को।
चलते जाओ तुम मत देखो, अपने पाँव के छालों को–2।।
जिसने जितना दर्द सहा है, उतना चैन भी पाया है।
चाँदनपुर के मन्दिर में, जो लोग मुरादें लाते हैं।।
वो रोते–रोते आते हैं, हँसते–हँसते जाते हैं।
मैं भी माँग के देखूँ जिसने, जो माँगा वो पाया है।।
चलो बुलावा आया है, वीरा ने बुलाया है....

गुरु तेरा सहारा है

तर्ज : हम तुमसे जुदा होके....
गुरुदेव मेरे तुमको, भक्तों ने पुकारा है।
आओ अब आ जाओ, गुरु तेरा सहारा है।।टेक।।
है चारों तरफ छाया, घनघोर अँधेरा है।

अब जाएँ कहाँ बोलो, तूफानों ने घेरा है।।
है नाथ अनाथों को, तेरा ही सहारा है।
गुरुदेव..........।।
मँझधार पड़ी नैय्या, डगमग डोला खाये।
मिल जाओ हमें आकर, हम भव से तर जाएँ।।
बिन तेरे नहीं जग में, एक पल भी गुजारा है।
गुरुदेव..........।।
तेरे इन चरणों की, धूल ही जो मिल जाए।
भटके हुए राही को, निज मंजिल मिल जाए।।
किस्मत भी चमक जाए, जो चमके सितारा है।
गुरुदेव..........।।
सेवा गुरु चरणन की, मुक्ति भव तरणन की।
महिमा गुरु वर्णन की, ज्ञाता शुभ कर्मण की।।
गुरु ज्ञान संजीवन की, बहती एक धारा है।
गुरुदेव..........।।
भ्रम सम गुरु भक्ति को, कोई पार नहीं पाए।
दो दर्शन अब गुरुवर, चरणों में लिपट जाएँ।।
ये भक्त सदा करता, गुणगान तुम्हारा है।
गुरुदेव..........।।

गुरुवर तेरे चरणों को

गुरुवर तेरे चरणों को कहाँ छोड़ के जाना है।

सारा जग झूठा है सच्चा तेरा ठिकाना है।।
गुरुवर............
सारे जग के नाते तो, चार दिनों के हैं।
तेरा मेरा नाता तो, सदियों से पुराना है।।
गुरुवर............
हर दिन तेरे दर्शन को, आते हैं द्वारे पर।
गुरुवर तेरे चरणों की, रज माथे लगाना है।।
गुरुवर............
काहे को तू रोता है, इस नश्वर काया पर।
चोला तो बदलना है, मरने का बहाना है।।
गुरुवर............
गुरुवर तेरी वाणी सुन, लाखों तिर गये भव से।
मैं भी तेरानाम जपूँ, मुझको भी तरना है।।
गुरुवर............

रुलातीं हैं रोटियाँ

दुनिया में आदमी को, रुलाती हैं रोटियाँ
भर पेट मिल न पाये, तो सताती हैं रोटियाँ
हर काम आदमी से, कराती हैं रोटियाँ
किस-किस तरह से नाच, नचाती हैं रोटियाँ
रोटी के लिए आदमी, हाथ पसारे

रोटी के लिए आदमी ने, इंसान बिगाड़े
अपनेसे दुश्मनी, कराती हैं रोटियाँ
इन्सान से हैवान, बनाती हैं रोटियाँ
जो दिन न दिखने पाए, दिखाती हैं रोटियाँ
ऊँचे चढ़े को नीचे, गिराती हैं रोटियाँ
रोटी ने कई लोगों के, घर बार उजाड़े
रोटी ने राजाओं के भी, दरबार छुड़ाये
डरती नहीं मौत से, लड़ाती हैं रोटियाँ
मरता है आदमी मगर, जिन्दा हैं रोटियाँ
दुनिया में आदमी को, रुलाती हैं रोटियाँ

तेरी ऊँची शान

तेरी ऊँची शान है गुरुवर, मेरी अर्जी मान ले गुरुवर।
मुझको भी तू दर्श जगा दे, मेरा सोया भाग्य जगा दे।।
तूने सबको ज्ञान दिया है, सबका बेड़ा पार किया है।
मुझको भी तू ज्ञान जरा दे, मेरा बेड़ा पार लगा दे।।टेक।।
जिनवाणी का ज्ञान तू दे दे, भक्तामर का ज्ञान तू दे दे।
नियम दे दे संयम दे दे, मुझको तप का जीवन दे दे-2।।
तू ही छप्पर फाड़ दे गुरुवर, अपनी पिच्छी झाड़ दे गुरुवर।
मुझको तू धनवान बना दे, तूने सबको ज्ञान..........।।
ठीक से तू आहार ले ले, भक्तों का तू प्यार ले ले।

आहार ले ले प्यार ले ले, मेरा तू नमस्कार ले ले।।
ब्रह्मचारी जी ने कहा है, ठीक से ना आहार लिया है।
चौके का बस राउण्ड लिया है, हिम्मत से तू काम जरा ले।
स्वास्थ्य अपना ठीक बना ले, भक्तों की लाज बचा ले।।
तूने सबको ज्ञान........

गुरुवर सबकी झोली भर दो, इस मौसम में होली कर दो।
झोली भर दे, होली कर दे, खुशियों की तू डोली कर दे-2।।
तू ही कर त्योहार गुरुवर, खुशियों की बौछार गुरुवर-2।
भक्तों को तू प्यार जरा दे, उनके सोये भाग्य जगा दे।।
तूने सबको ज्ञान............

बहारो फूल बरसाओ

बहारो फूल बरसाओ, मुनि महाराज आये हैं।
हवाओं रागिनी गाओ, कि ऐसे योगि आये हैं।।टेक।।
यह कितने आत्मज्ञानी हैं, यह कितने ज्ञानी ध्यानी हैं।
किसी से कुछ नहीं लेते, जगत को ज्ञान देने आये हैं।।
बरसता वाणी से अमृत, बहुत आनन्द आता है।
बड़े विद्वान स्वामी हैं, मुनि महाराज आये हैं।।
कि ये ज्ञान के सागर हैं, तपस्वी आत्मज्ञानी हैं।
हम उनके वचनों को सुनकर, सफल जीवन बनाते हैं।।
है होती ज्ञान की वर्षा, नहा ले जिसका जी चाहे।

पता क्या तेरे जीवन में ये अवसर आए ना आए।।
यह अनमोल वर्षा है, जो बेमोल मिलती है।
बहारों फूल बरसाओं, मुनि महाराज आये हैं।।
यह बन्धन कर्म के सारे, जहाँ से पार तू कर ले।
लगा ले ध्यान चरणों में, मुनि महाराज आये हैं।।
बहारो फूल बरसाओ, मुनि महाराज आये हैं।
हजारों रागिनी गाओ कि, गुरु महाराज आये हैं।।

भजन : दुनिया में कितना गम है

दुनिया में कितना गम है, मेरा गम कितना कम है।
लोगों का गम देखा तो, मैं अपना गम भूल गया।।
दुनिया में............
कोई एक हजारों में, शायद ही खुश होता है।
कोई किसी को रोता है, कोई किसी को रोता है–2
हर घर में ये मातम है, मेरा गम कितना कम है।
दुनिया में............।।
इसका है रंग रूप यही, इसी को जीवन कहते हैं।
कभी हँसी आ जाती है, कभी ये आँसू बहते हैं–2।।
दुःख सुख का ये संगम है, मेरा गम कितना कम है।
दुनिया में............।।
सबके दिल में शोले हैं, सबकी आँखों में पानी है।

जिसको देखो उसके पास, एक दुख भरी कहानी है-2।।
दुःखी यहाँ सारा आलम है, मेरा गम कितना कम है।
दुनिया में............।।

हम नहीं दिगम्बर श्वेताम्बर

हम यही कामना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में बाहुबली, सारी धरती धर्मस्थल हो।।
हम यही कामना करते हैं...।।टेक।।
हम नहीं दिगम्बर श्वेताम्बर, तेरह पन्थी, स्थानकवासी।
सब एक पन्थ के अनुयायी, सब एक देव के विश्वासी।।
हम जैनी अपना धर्म जैन, इतना ही परिचय केवल हो।
हम यही ....।।
सब णमोकार का जाप करें, और पाठ करें भक्तामर का।
नित नियमित पालें पंचशील, और त्याग करें आडम्बर का।।
वो कर्म करें जिन कर्मों से, सारे संसार का मंगल हो।
हम यही ....।।
वैराग्य हुआ जिस पल प्रभु को, कोई रोक नहीं पाया पथ में।
अपनी उपमा बन आप खड़े, कोई और नहीं इन सा जग में।।
इनके सुमिरण से प्राप्त हमें, बाहुबल हो आत्मबल हो।
हम यही ....।।

एक रोज तो

कन्धों पर उठाकर के, कुछ लोग तेरे तुझको
ले जाएँगे सब मिलकर, श्मशान में वो तुझको
कुछ पल की देरी है, सब कुछ मिट जाना है
एक रोज तो..........।।
तुझे मृत्यु शैय्या पर, चिर नींद सुला देंगे।
तेरी सुन्दर सी देह को, फिर आग लगा देंगे।।
दो गज का कफन देकर, बाकी सब कुछ छुड़ाना है।
इक रोज तो...........।।
तेरे अपने सब ही तो, वह तुझसे दूर होंगे।
तेरे जीवन के सपने, सब जलकर चूर होंगे।।
तेरा मन का दीपक जो, कुछ दिन ही जलना है।
इक रोज तो............।।

कौन सुनेगा किसको सुनाएँ

कौन सुनेगा किसकी सुनाएँ, इसलिए चुप रहते हैं।
हमसे अपने रूठ ना जाएँ, इसलिए चुप रहते हैं।।
अति संघर्ष भरे जीवन में, दिल ये अब घबराया है।
गैरों की क्याकहें, हमें तो, अपनों ने ही मार गिराया है।।
राज ये दिल का खुल न जाए, इसलिए चुप रहते हैं....
कौन सुनेगा..........।।

हँसता खिलता जीवन मेरा, जाने कहाँ पर खो गया।
फूल भरी राहों पर मेरी, कौन ये काँटा बो गया।।
पग ये आगे कैसे बढ़ाएँ, इसलिए चुप रहते हैं।
कौन सुनेगा..........।।
मेरी जीवन वीणा में, तार दुःखों का जोड़ दिया।
आया था तेरे पास में तुमने, मुख क्यों अपना मोड़ लिया।।
टूटी ये वीणा कैसे गाए, इसलिए चुप रहते हैं।
कौन सुनेगा..........।।
संयम देकर तुमने मुझको, अपने से क्यों दूर किया।
अपनो से तड़पते रहने को, तुमने क्यों मजबूर किया।।
दर्द विरह का किसको दिखाएँ, इसलिए चुप रहते हैं।
कौन सुनेगा..........।।
तुमसे दूर होकर गुरुवर, गम में गोते लगाते हैं।
दुनिया वाले जान न पाए, अधर मेरे मुस्कराते हैं।।
आँखों से आँसू बह न जाए, इसलिए चुप रहते हैं।
कौन सुनेगा..........।।

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं,
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं,

बाद आँसू बहाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को.............
मैं तो मन्दिर गया पूजा आरती की,
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया।
कभी माँ-बाप की सेवा की ही नहीं,
सिर्फ पूजा की करने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को...........
मैं तो मन्दिर गया पूजा आरती की,
गुरुवाणी को सुनकर ख्याल आ गया।
जैन कुल में हुआ जैनी बन ना सका,
सिर्फ जैनी कहाने से क्या फायदा।
कभी प्यासे को.............
मैं काशी बनारस मथुरा गया,
गंगा नहाते हुए ये ख्याल आ गया।
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं,
सिर्फ गंगा नहाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे को............
मैंने दान किया मैंने जप तप किया,
दानकरते हुए ये ख्याल आ गया।
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं,
दान लाखों का लूँ तो क्या फायदा।

सोते सोते ही निकल गई

सोते सोते ही निकल गई सारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ढोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी।।
जिस दिन जन्म लिया पृथ्वी पर, तूने रुदन मचाया।
आँख तेरी खुलने न पायी, भूख-भूख चिल्लाया।।
खाते-खाते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ही.........।।
यौवन बीता आया बुढ़ापा, डग-मग डोले काया।
सब के सब रोगों ने आकर, डेरा खूब जमाया।।
रोगों भोगों में निकल गयी, सारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ही.........।।
जिस तन को तू अपना समझा, दे बैठा वह धोखा।
प्राण जाए और जल जाएगा, यह काठी का खोका।।
खोका ढोते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ही..........।।
जीवन भर पाप किया, और अन्त समय पछताये।
पैसा-पैसा करते-करते, पेटी बहुत भराये।।
रोगों भोगों में निकल गयी, सारी जिन्दगी।
बोझा ढोते ही.........।।

मनुष्य जनम अनमोल रे

मनुष्य जनम अनमोल रे, मिट्टी में मत घोल ले।
अभी तो मिला है, फिर न मिलेगा
कभी नहीं कभी नहीं, कभी नहीं।।टेक।।
तू सत्संग में जाया कर, गीत प्रभु के गाया कर
शाम सवेरे उठकर बन्दे, ध्यान प्रभु का लगाया कर
नहीं लगता कुछ मोल रे, मिट्टी में....
तू है बुलबुला पानी का, मत कर मान जवानी का
नेक कमाई कर ले बन्दे, पतानहीं जिन्दगानी का
सबसे मीठा बोल रे..... मिट्टी में.....
मतलब का संसार है, इसका नहीं ऐतवार है
संभल संभल कर चलना बन्दे, फूल नहीं अंगार है
मन की आँखें खोल रे.. मिट्टी में.....

ये दान पुण्यक का काम

तर्ज : श्री सिद्ध चक्र का पाठ
ये दान पुण्य का काम, काम हो भव में आन
धार तो प्राणी, क्यों करता आना कानी।।टेक।।
हो दान अगर तुम देवोगे, इस भव में आशीष लेवोगे
परलोक में मान बढ़ेगा, सुन ले प्राणी
क्यूँ करता आना कानी...

यौवन की भूल–भुलैया में, तेरे थे सुख की नैया में
नहीं ध्यान था दीन दुःखी का क्या गुजरानी
क्यूँ करता आना कानी...
जब था सब साधन ही घर में
तब था तू गोरख धन्धों में
अब मौत देख घबराया क्या उतरानी
क्यूँ करता आना कानी...
जो पुण्य काम कर जावोगे, उससे दूना तुम पावोगे
कर ले जल्दी ये काम, न आलस आनी
क्यूँ करता आना कानी...
जितना पुण्य तुम कर लोगे, उतने ही बन्धन भर लोगे
नहीं तो नरक तैयार मिलेगा पवन ये जानी
क्यूँ करता आना कानी...
ये दान पुण्य काम...।

देख तमाशा लकड़ी का

जीते लकड़ी मरते लकड़ी, अजब तमाशा लकड़ी का
दुनिया वाले तुम्हें बताएँ, यह जगवाशा लकड़ी का
जिस दिन तेरा जन्म हुआ था, पलंग बना था लकड़ी का
तुझे सुलाने को मँगवाया, एक पालना लकड़ी का
खेल खिलौने थे लकड़ी के, हाथी घोड़ा लकड़ी का

पकड़-पकड़ कर खड़ा हुआ, जब वो था रहलुवा का
तुझे पढ़ाने शिक्षक जी ने, डर दिखलाया लकड़ी का
पढ़-लिखकर जब ब्याहन चाला, रेत का डिब्बा लकड़ी का
हाथ में कंगन लकड़ी का था, और श्रीफल भी लकड़ी का
तोरन जिस पर मारा था वो, बिदा पाटला लकड़ी का
भाँवर तेरी पड़ी माही-जब खम्भ खड़ा था लकड़ी का
ब्याह कर जब घर को लौटा, दाव भूल गया लकड़ी का
खत्म हुई दुनिया की झंझट, टूटा जाला मकड़ी का
तीन चीज का फिकर हुआ जब, नौन तेल और लकड़ी का
वृद्ध हुआ जब चालन लागा, पकड़ सहारा लकड़ी का
चार जने मिल मरघट लाये, बना जनाजा लकड़ी का
धू-धू करके चिता जलायी, बना चबूतरा लकड़ी का
जीते लकड़ी मरते लकड़ी, अब तमाशा लकड़ी का

वृद्धाश्रम में एक वृद्ध माँ

मन्दिरों में जाके, दुआ माँगते हैं हम।
तब जाके होता कहीं बच्चे का जन्म।।
जन्म के प्रलय की पीड़ा को सहें।
ममता की कहानी को किससे कहें।।
सारे गम ऊँच नीच सह जाते हैं।
बन्धनों में बँधकर रह जाते हैं।।
पर क्यों ये बन्धनों को तोड़ देते हैं।
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।।
पाल पोसकर इनहें बड़ा करें हम।
बड़ा कर पैरों पर खड़ा करें हम।।
कभी कोई अहसास होने नहीं दे।
खुद रोएँ पर इन्हें रोने नहीं दें।।
इनके लिए तो करें जान कुर्बान।
अपनी ये आन-बान-शान कुर्बान।।
खुशियों को जिन्दगी से जोड़ देते हैं।
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।।
छोटे होते हैं तो मीठा बोलते हैं ये।
मम्मी, कहके जुबान खोलते हैं।।
धीरे-धीरे जैसे-जैसे होते हैं जवान।
चेहरे से जाने लगती है मुस्कान।।
क्रूरता के भाव मुख पर आने लगते।
अपना ये असर दिखाने लगते।।

रथ को कुपथ पर मोड़ देते हैं।
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।।
जिस दिन देख ले शादी की भव्यता।
मर मिट जाती बची खुची सभ्यता।।
पत्नी को मानते हैं परमात्मा।
और भूल जाते हैं ये, माँ की आत्मा।।
सोचते नहीं हैं, नहीं करते विचार।
माता और पिता, दोनों लगते हैं भार।।
जिम्मेदारियों से मुख मोड़ लेते हैं।
आश्रमों में लाके, हमें छोड़ देते हैं।।
खाँसते भी थूकते भी डरते हैं हम।
कहते हैं घर गन्दा करते हैं हम।।
साँस से हमारी अब आती दुर्गन्ध।
इसीलिए किया है हमारा ये प्रबन्ध।।
हम असहाय किस काम के रहे।
माता और पिता बस नाम के रहे।।
बुढ़ापे की वैशाखी को तोड़ देते हैं।
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।।
सोचो जब उम्र के भी तान तनेंगे।
उम्र और देह में जो युद्ध ठनेंगे।।
नश्वर शरीर युद्ध हार जाएगा।

तुमको भी कोई यूँ विसार जाएगा।।
यानि आप कर्मों के सन्ताप बनोगे।
आप भी तो कभी माँ–बाप बनोगे।।
काल चक्र सबको निचोड़ देते हैं।
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।।

ऐ मेरे समाज के लोगो

ऐ मेरी समाज के लोगो, एक बात तुम्हें बतलानी।
हम चलें हैं गलत राहों पर, कुछ सोच न हमने मानी।।
आयी है समाज में अपने, अब तो कुरीतियाँ भारी।
है दहेज प्रमुख इन सब में, ये सबसे बड़ी बीमारी।।
जिंदा अगर जो रहना है, ये रोग मिटाना होगा।
गिरते समाज का ढाँचा अब तुम्हें बचाना होगा।।
ये रोग रहा जो अपने में, कोई बाकी ना रहे निशानी।
हम चले हैं.................

कन्या है जनम जब लेती, एक मातम सा छा जाता है।
काँसे के थाल बजे क्या, लोहा भी नहीं बज पाता।।
शादी का समय जब आता, माँ बाप फिरे बेचारे।
वर कैसे मिले कन्या को, चिन्ता में जलें बेचारे।।
बैठे हैं कलेजा थामे, हुई कन्या बड़ी सियानी।
हम चले हैं.................

ऐ लड़के बेचने वालो, तुम्हें गैरत ने ललकारा।
चाँदी के कुछ टुकड़ों पर, बिगड़ा है ईमान तुम्हारा।।
गर माँग न पूरी होती, लड़की में अवगुण बतलाते।
हो जाती सुशील वही कन्या, मनचाही जो कीमत पाते।।
धिक्कार तुम्हारा जीवन है, ये कैसी है बेईमानी।
हम चले हैं..................

हुई ऐसी बहुत सी बहना, हमें कहते भी लज्जा आए।
जो दहेज ले गयीं थोड़ा, ससुराल में है दुख पाए।।
आत्महत्या की ठानी, और गले में फन्दा डाला।
या तेल छिड़क कपड़ों पर, ये जिस्म राख कर डाला।।
है मौत को गले लगाया, और खत्म हुई जिन्दगानी।
हम चले हैं..................

जो अब भी ना सँभले, क्या होगा हाल तुम्हारा।
मिट जाओगे सफा हस्ती से, कोई लेगा ना नाम तुम्हारा।।
तब कौम है उन्नति पद पर, पाताल में हो तुम जाते।
अंजाम ना कुछ भी सोचा, किंचित भी नहीं घबराते।।
कागज तक पर ना होगी, कोई लिखी तुम्हारी कहानी।
हम चले हैं गलत राहों पर, कुछ सोच ना हमने मानी।।
ऐ मेरी समाज के लोगों एक बात तुम्हें बतलानी।
गर्भ में बेटी मार रहे हो, दुल्हन कहाँ से लाओगे।
रक्षा बनधन पर रहेगी कलाई सूनी तो, बहिन कहाँ से लाओगे।।

किसी के काम जो आये

किसी के काम जो आए, उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए, उसे इन्सान कहते हैं।।
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है।।
जो मुश्किलों में न घबराए, उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम............

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रोकर।।
जो गिरकर भी सँभल जाए, उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम............

अगर गलती रुलाती है तो यह राह भी दिखाती है।
बसर गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है।।
जो गलती करके पछताए, उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम............

अकेले ही जा खा-खा कर, सदा गुजारा न करते हैं।
यों भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।।
पथिक जो बाँट कर खाए उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम............

धीरे-धीरे मुझे जलाया

ऐ री लकड़ी धीरे-धीरे तू मुझे जलाना।
याद आ रहा है मुझको, मेरा बीता हुआ जमाना।।
जीवन जिसमें खोया अब तक, वह पल में मिट जाएगा।
जैसे ईंट में रेत लगा दी, झर झर के गिर जाएगा।।
वन के मिट्टी खूब उड़ूँगा, हवा में न मिल जाना।
ऐ री लकड़ी.........।।

मुझे छोड़ने जो आये हैं, जल्दी वापिस जाएँगे।
देख तोल जी भरके इनको, फिर न ये मिल पाएँगे।।
जीवन के मेले में जाकर-भूल मुझे ये जाएँगे।
अपना कहने वाले ये, जब बेगाना बन जाएँगे।।
कैसे कहूँ उनसे अभी तो, याद मुझे भी कर लेना।
ऐ री लकड़ी..........।।

आज तो भेद-भाव के पर्दे, कैसे मुझसे उठाये हैं।
जीवन में जो मुझसे जलते, वो ही जलाने आये हैं।।
किस से अब दुश्मनी करेंगे, यही सोच के आये हैं।
इसीलिए इनकी आँखों में, आँसू अब ढल जाये हैं।।
देख इन्हें शर्मिंदा हूँ मैं, बैर पड़ेगा भुलाना।
ऐ री लकड़ी........।।

जनमा है जो

तर्ज : छुक छुक रेल चली है जीवन की

जन्मा है जो, उसको इक दिन मरना है।
मृत्यु से फिर इतना भी क्यों डरना है।।
ज्ञानी की मृत्यु भी सुख है, अज्ञानी को दुःख-2।
जन्मा............

जनम हुआ जब तेरा, सबने उत्सव खूब मनाया था।
चाचा मामा भैया तुमसे, रिश्ता खूब सजाया था।।
रिश्ते नाते धरे रह गये, साँस गयी जब रुक-2।
जन्मा............

बेटी तो है मेरी डॉक्टर, बेटा मेरा इंजीनियर।
कह कह सीना चौड़ा करता, बेटा मेरा कलेक्टर बियर।।
साथ न देते बेटा-बेटी, कमर गयी जब झुक-2।
जन्मा............

भगवान की भक्ति करने से, जो मानव कतराता है।
इन्द्रिय भोगों में रमकर के, फूला नहीं समाता है।।
काया होती क्षीण न रहती, अन्त समय सुध-बुध-2।
जन्मा............

धन वैभव पाकर तू भैय्या, इतना क्यों इतराता है।
पुण्य उदय से मिली सम्पदा, अब क्यों पाप कमाता है।।
साथ न जाए फूटी कौड़ी, अर्थी जाए उठ-2।
जन्मा............

बड़े-बड़े जमा खर्च चलाता

मेरे पारस के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।
मेरे पारस के दरबार में, सब लोगों का खाता।।टेक।।
बड़ा कड़ा कानून प्रभु का, बड़ी-बड़ी मर्यादा।
किसी को कौड़ी कम नहीं देते, किसी को दमड़ी ज्यादा।।
इसीलिए तो इस दुनिया में, सबका न्याय चुकाता।
प्रभु पारस.....।।1।।
नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी।
उसे अपने लेन-देन की, रीत बड़ी है बाँकी।।
पुण्य का बेड़ा पार हुआ और, पाप की नाव डूब जाती।
प्रभु पारस..............।।2।।
अच्छी करनी करो प्रभु की, करमन करियों काला।
तुम्हें देख रहा है पारस, लाखों आँखों वाला।।
चतुर तो चुप रह जाता है और, मूर्ख शोर मचाता।
प्रभु पारस...........।।3।।
सबका न्याय प्रभु जी करते इस आसन पर डँट के।
प्रभु का फैसला कभी न बदले लाखों कोई सिर पटके।।
इसीलिए तो इस दुनियाँ में सबका न्याय चलाता।
प्रभु पारस.......।।4।।

जिनवाणी स्तुति

माता तू दया करके, कर्मों से छुड़ा देना।
इतनी सी विनय तुम से, चरणों में जगह देना।।टेक।।
माता आज मैं भटका हूँ, माया के अंधेरे में।
कोई नहीं मेरा है, इस कर्म के रेले में।।
कोई नहीं मेरा है तुम धीर बंधा देना।
इतनी सी विनय........

जीवन के चौराहे पर मैं सोच रहा कब से।
जाऊँ तो किधर जाऊँ, यह पूछ रहा तुमसे।।
पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह दिखा देना।
इतनी सी विनय........

लाखों को उबारा है, हमको भी उबारों तुम।
मझधार में हैं नैया उसको पार लगा दो तुम।।
मझधार में है नैया भव पार लगा देना।
इतनी सी विनय........

मुक्तक

अन्याय चाहे कितना भी करो, इन्साफ एक दिन होकर ही रहेगा।
कोयला चाहे छुप-छुप कर भी खाओ, मुँह काला होकर ही रहेगा।।
कुदरत के दबार में, अंधेर नहीं पर देरी है।
आखिर दूध का दूध और,पानी का पानी होकर ही रहेगा।।

भजन

दरबार में विशद जी के, दुःख दर्द मिटाये जाते हैं।
गर्दिश में सताये लोग यहाँ, सीने से लगाये जाते हैं।।
ये महफिल है दीवानों की, हर भक्त यहाँ दीवाना है।
भर भर प्याले यहाँ अमृत के, हर रोज पिलाये जाते हैं।।
दरबार में विशद जी के......

मत घबराओ ओ जग वालों, इस दर पे शीश झुकाने से।
इस दर पर शीश झुकाने से, भव बन्धन सब कट जाते हैं।।
दरबार में विशद जी के......

जो नित उठ सुमिरन करते हैं, और ध्यान इन्हीं का धरते हैं।
परमानन्द सुख पार जाते हैं, और मोक्ष महल को जाते हैं।।
दरबार में विशद जी के.......

मुक्तक

संसार में पतित था गुरु ने उठाया।
अज्ञान का तिमिर था गुरु ने हटाया।।
मुनिराज हैं तरण तारण ज्ञानधारी।
श्री विशद जी गुरु जय हो तुम्हारी।।

मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरुवर तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे वैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने।

चाहे मौत गले को हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे संकट ने ही मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर चित्त न मेरा डग मग हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे अग्नि में ही उतना हो, चाहे काटों पर भी चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणें में।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
यही काम बस आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरुवर तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

भजन

आशाओं का हुआ खात्मा, दिली तमन्ना धरी रही।
बस परदेशी हुआ रवाना प्यारी काया पड़ी रही।।टेक।।
करना करना आठों पहर ही, मूरख कूक लगाता है।
मरना मरना कभी नहीं, लफ्ज पवां पर लाता है।।
पर सबही मरने वाले हैं, झंडी न किसी की खड़ी रही।।
आशाओं का हुआ....
इक पंडित जी पत्रा लेकर, गणित हिसाब लगाते थे।
समय काल तेजी मंदी की, होनहार बतलाते थे।।
आया काल चले पंडित जी, पत्री कर में धरी रही।
आशाओं का हुआ....

एक वकील ऑफिस में बैठे, सोच रहे अपने दिल।
फलां दफा पर बहस करूँगा, पाइंट मेरा बड़ा प्रबल।।
इधर कटा वारंट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही।
आशाओं का हुआ....
एक साहब बैठे दुकान पर, जमा खर्च खुद जोड़ रहे।
इतना लेना इतना देना, बड़े गौर से खोज रहे।।
काल वली की लगी चोट जब, कलम कान में लगी रही।।
आशाओं का हुआ....
इलाज करने इक राजा का, डॉक्टर जी तैयार हुए।
विविध दवा औजार साथ ले, मोटरकार सवार हुए।।
आया वक्त उलट गई मोटर, दवा बैग में भरी रही।
आशाओं का हुआ....
जेंटिलमैन घूमने को, हर रोज शाम को जाता था।
चार पाँच थे दोस्त साथ में, बातें बड़ी बनाता था।।
लगी जो ठोकर गिरे बाबूजी, छड़ी हाथ में लगी रही।
आशाओं का हुआ....
हाँ क्या क्या करूँ मैं, इस दुनिया की अजब गति।
भैय्या आना और जाना है, फर्क नहीं है एक रत्ती।।
सम्यक प्राप्त किया है जिसने, बस उस ही की खरी रही।
आशाओं का हुआ खातमा, दिली तमन्ना धरी रही।।

मुक्तक

धन वैभव के जिन्हें भाये न आलय हैं।
चारित्र के जो सच्चे हिमालय हैं।।
मंदिर की मूर्तियाँ तो मौन रहतीं हैं दोस्तो।
ये दिगम्बर सन्त चलते फिरते जिनालय हैं।।

तन नहीं छूता कोई, चेतन निकल जाने के बाद।
फेंक देते फूल ज्यों, खुशबू निकल जाने के बाद।।
आज जो करते किलोले, खेलते हैं साथ में।
कल डरेंगे देख तन, निरजीव हो जाने के बाद।।

बात भी करते नहीं जो, आज धन के ऐंठ में।
वें माँगते आये नजर, तकदीर फिर जाने के बाद।।
पाँव भी धरती पे जिसने हैं कभी रखे नहीं।
वन में भटकते वे फिरे आपत्ति आ जाने के बाद।।

भाग जाता हंस भी, निरजल सरोवर देखकर।
छोड़ देते वृक्ष पक्षी, पत्र झड़ जाने के बाद।।
लोग ऐसे मतलबी फिर, क्यों करें विश्वास हम।
बालक डरता आग से, इक बार जल जाने के बाद।।

सांस का पिंजरा किसी दिन टूट जायेगा।
हर मुसाफिर राह में ही छूट जायेगा।।
इसलिए जिंदगी की कीमत समझो दोस्तो।
क्या पता जीवन का घड़ा कब छूट जायेगा।।

भजन

सदा सन्तोष कर प्राणी, अगर सुख से रहना चाहे।
घटा दे मन की तृष्णा को, अगर अपना भला चाहे।।
आग में जिस कदर ईंधन, पड़ेगा ज्योति ऊँची हो।
बढ़ा मत लोभ की तृष्णा, अगर दुःख से बचना चाहे।।
वही धनवान है जग में, लोभ जिसके नहीं मन में।
वह निर्धन रंक होता है, जो पर धन को हरना चाहे।।
दुखी रहते हैं वे निश दिन, जो आरत ध्यान करते हैं।
न कर लालच अगर, आजाद, रहने का मजा चाहे।।
बिना माँगे मिले मोती, न्याय मत दुख दुनियाँ में।
भीख माँगे नहीं मिलती, अगर कोई लिया चाहे।।
सदा सन्तोष कर.......

कहा मानते ओ मेरे भैया

तप त्याग संयम शील जीवन का सार होता है।
इन सब के बिना जीवन सारा बेकार होता है।।
मुक्ति की मंजिल उन्हीं को मिलती है दोस्तो।
जिसे सचमुच अपने गुरु से प्यार होता है।।
जो सिद्ध हुये हैं उनकी जरा याद करो
ओ जैन धर्म के लोगों, जरा याद करो वो कहानी।
जो सिद्ध हुए हैं उनकी, जरा याद करो जिन्दगानी।।टेक।

बढ़ गये असीम को पाने, वह मुक्ति के परवाने।
था भेष दिगम्बर धारा, संतों ने इसी बहाने।।
हुआ धन्य है उनका जीवन, और धन्य भी हुई जवानी।
जो सिद्ध हुये......

त्यागा है मोह जहाँ से, त्यागा है सारा जमाना।
सब राग रंग भी त्यागा, त्यागा है गान बजाना।।
कई लोगों ने था रोका, पर बात एक ना मानी।
जो सिद्ध हुये......

तुम मत भूलो सन्तों ने, पर्वत पर ध्यान लगाया।
तप करके ध्यान अग्नि में, था केवल ज्ञान जगाया।।
शुभ वीतरागता द्वारा ही, बने हैं केवलज्ञानी।
जो सिद्ध हुये......

जब अन्त समय आया तो, कर्मों का किया सफाया।
फिर मुक्ति वधु पाने से, कोई भी रोक न पाया।।
बन गये विशद धरती पर, विराग की श्रेष्ठ निशानी।
जो सिद्ध हुये......

है प्रति आतम में क्षमता, बन सकता वह भगवान।
यह पा सकता है भाई, मुक्ति जाकर के मधुवन।।
विशद जीवन की गढ़ लो, तुम सुन्दर एक कहानी।
जो सिद्ध हुये हैं उनकी, जरा याद करो जिन्दगानी।।

गुरुदेव दया करके

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।। गुरुदेव....
करुणा निधि नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम।
सोये हुये भव्यों को, हे नाथ जगाओ तुम।।
मेरी नाव भवर डोले, उस पार लगा देना। गुरुदेव....
तुम सुख के सागर हो, दुखियों के सहारे हो।
इस तन में समाये हो, हमें प्राणों से प्यारे हो।।
नित माला जपूँ तेरी, नहीं दिल से भुला देना। गुरुदेव....
पापी हूँ कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ।
घरवार छोड़कर मैं, जीवन में अकेला हूँ।।
मैं दुःख से व्याकुल हूँ, मेरे दुःख को भगा देना। गुरुदेव....
मैं तेरा सेवक हूँ, तेरे चरणों का चेला हूँ।
नहीं नाथ भुला देना, इस जग में अकेला हूँ।।
तेरे दर का भिखारी हूँ, मेरे दोष मिटा देना। गुरुदेव....

जीवन के किसी भी पल में

तर्ज : ये मेरे वतन के लोगों

जीवन के किसी भी पल में, वैराग्य उपज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है।।टेक।।
कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी।

बिन कारण दीक्षा लेता, वो पूर्व जनम का त्यागी।।
निर्ग्रंथ साधु ही इतने, सद्गुण से सज सकता है।
संसार में रहकर.......
आत्मा तो अजर अमर है, हम आयु गिने इस तन की।
वैसा ही जीवन बनता, जैसी धारा चिंतन की।।
जो पर को समझ न पाया, वह स्वयं समझ सकता है।
संसार में रहकर.......
शास्त्रों में सुने थे जैसे, वैसे ही देखे मुनिवर।
तेजस्वी परम तपस्वी, उपकारी निर्ग्रंथ सागर।।
इनकी मृदु वाणी सुनकर, हर प्राणी सुधर सकता है।
संसार में रहकर.......

गुरुवर तेरे चरणों की

गुरुवर तेरे चरणों की, हमें धूल जो मिल जाये।
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये।।टेक।।
मेरा मन बड़ा चंचल है, इसे कैसे मैं समझाऊँ।
जितना मैं समझाऊँ, उतना ही मचल जाये।।
गुरुवर तेरे.....
मेरी नाव भंवर में है, उसे पार लगा देना।
तेरे एक इशारे से, मेरी नाव उबर जाये।।
गुरुवर तेरे.....

नजरों से जो गिर जाये, मुश्किल है संभल पाना।
नजरों से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना।।
गुरुवर तेरे.....
बस एक तमन्ना है, तुम सामने हो मेरे।
तुम सामने हो मेरे, चाहे प्राण निकल जाये।।
गुरुवर तेरे.....
गुरुवर तेरे चरणों की, हमें धूल जो मिल जाये।
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये।।
गुरुवर तेरे.....

बाजे कुण्डलपुर में बधाई

बाजे कुण्डलपुर में बधाई, कि नगरी में वीर जन्मे महावीर जी।
जागे भाग्य हैं त्रिशला माँ के, कि त्रिभुवन के नाथ जन्में महावीर जी।।
बाजे कुण्डलपुर....
शुभ घड़ी जन्म की आयी, कि स्वर्गों से देव आये महावीर जी।
बाजे कुण्डलपुर....
तेरा न्हवन करें मेरू पर, कि इन्द्र जल भर लाये महावीर जी।
बाजे कुण्डलपुर....
तुझे देवियाँ झुलावें पलना, कि मन में मगन होके महारीव जी।
बाजे कुण्डलपुर....
तेरे पिता लुटावें मोहरें, कि खजाने सारे खुल जायेंगे महावीर जी।

बाजे कुण्डलपुर....
हम देर्श तेरे आये, कि पाप सारे कट जायेंगे महावीर जी।
बाजे कुण्डलपुर....

एक तरफ से अरथी

एक तरफ से अरथी आई, एक तरफ से होली।
दोनों सखियाँ मिलीं राह में, करने लगी ठिठोली।।टेक।।
चार इधर हैं चार उधर हैं, दोनों संग बराती।
एक राह मरघट को जाती, एक महल को जाती।।
दोनों के ऊपर बिखरे हैं, फूल मखाने रोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली।।1।।
इधर मरण है उधर वरण है, दो पहलू जीवन के।
एक तरफ है अन्त दूसरी, तरफ महल सपनों के।।
छूटा साथी इधर एक का, उधर मिला हम जोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली।।2।।
एक अंधेरा एक उजेला, है पर्याय विनाशी।
किन्तु आत्मा ध्रौव्य रूप है, है अक्षय अविनाशी।।
आनाजाना लगा हुआ है, जिनवाणी की बोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली।।3।।
जिसकी डोली आज उठी है, कल अरथी उठ जाये।
ऐसा कोई नहीं जगत में, जिसको मौत न आये।।

अतः बढ़ो संयम के पथ पर, ले जीवन की डोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली।।4।।
अरथी वाला जले आग में, जले राग में डोली।
इस प्रकार दोनों ही जलते, आग राग की होली।।
सुखी सदा वे रहें जिन्होंने, समता केशर घोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली।।5।।
एक रुला अपनों को आई, आई एक हँसाने।
उजड़ गया संसार एक का, आई एक बसाने।।
सुख दुःख देती सदा जीव को, जिन कृत कर्म की टोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली।।6।।

जुदाई आपकी गुरुवर

जुदाई आपकी गुरुवर, नहीं पल भर सुहाती है।
छवि मन आपकी गुरुवर, नहीं अब और भाती है।।टेक।।
अनादिकाल से हमने, नहीं निज धर्म पहचाना।
कौन आया कहाँ से है, नहीं निज रूप को जाना।।
मानकर वस्तु पर अपनी, आत्म मन में लुभाती है।
जुदाई आपकी गुरुवर......।।
प्रभो हम भूल अपनो से, फँसे हैं मोह के फन्दे।
कषायों को सगा माना, बने मिथ्यात्व में अंधे।।
आप वाणी सुनी जब से, परणति पर पे न जाती है।

जुदाई आपकी गुरुवर......।।
नाथ दर्शन किये जब से, रुचि निज ओर जागी है।
प्रतीति आत्म अनुभूति, स्वभाविक प्रीति जागी है।।
विभो भव भोग पर चर्चा, हेय ही हेय भाती है।
जुदाई आपकी गुरुवर......।।
किया उपकार मम् गुरुवर, जरा सा और कर देना।
भावना मुक्ति पाने की, मुझे मुनि दीक्षा भी दे देना।।
रहें नित लीन निजगुण में, यही मन में समाती है।
जुदाई आपकी गुरुवर......।।

कभी तो ये गुरुवर

कभी तो ये गुरुवर, माँझी बन जाते हैं-2।
कभी तो ये गुरुवर, साथी बन जाते हैं-2।।
उँगली पकड़ मेरी, रास्ता दिखाते हैं-2 तो बोलो ना।।
कभी तो ये गुरुवर.....।।
जो ठुकरा दिया तुमने, हम किससे बोलेंगे-2।
दर तेरे खड़े होकर छुप-छुप के रोलेंगे...ऽऽऽ तो बोलो ना।।
कभी तो ये गुरुवर.....।।
मेरे इस जीवन की, बस एक तमन्ना है-2।
तुम सामने हो मेरे, और प्राण निकल जाये।।
कभी तो ये गुरुवर.....।।

गुरुदेव की महिमा को, हम मिलके गायेंगे–2।
इस चातुर्मास को, हम सफल बनायेंगे।।
कभी तो ये गुरुवर.....।।
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन–रात बरसती है–2।
एक बूँद जो मिल जाये, किस्मत ही बदल जाए।।
कभी तो ये गुरुवर.....।।
आँखों में बसाया है, तुझे दिल से गाया है।
मेरी हर धड़कन में, बस तू ही समाया है।।
कभी तो ये गुरुवर.....।।
ठोकर लगी मुझको, पत्थर नुकीला था–2।
पर चोट ना आयी, गुरुवर ने सम्हाला था।।
कभी तो ये गुरुवर.....।।

मेरे सर पर रख दो

मेरे सर पर रख दो गुरुवर, अपने ये दोनों हाथ।
देना है तो दीजिये, जन्म–जन्म का साथ।।
सुना है अपने शरणागत को अपने गले लगाते हो।
ऐसा मैंने क्या माँगा, जो देने से घबराते हो।।
चाहे कुछ भी करो, हे गुरुवर–2 बस थामे रहना हाथ।
देना हैं तो दीजिए......।।
गम की धूप से एुलस रहे हैं, प्यार की छाया कर दे तू।

बिन माँणी के नाव चले न, अब पतवार पकड़ ले तू।।
मेरा रास्ता रोशन कर दो, छाई अँधियारी रात।
देना हैं तो दीजिए......।।
भव भव में हम भटक रहे हैं, अपने गले लगाते तू।
जीना था बेकार हमारा, अपनी शरण बुलाते तू।।
मेरा जीवन सरल बना दो, अब करना न इन्कार।
देना हैं तो दीजिए......।।

जब कोई नहीं आता

जब कोई नहीं आता, मेरे गुरुवर आते हैं।
मेरे दुख के दिनों मे वो, बड़े काम आते हैं।।
वो इतने बड़े होकर, दीनों से प्यार करें-2
अपने भक्तों को ये, पल में स्वीकार करें
ये बिन बोले सबको, पहचान लेते हैं
मेरे दुख के दिनों में......।।
मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं होती-2
किसी और की अब तो, दरकार नहीं होती
वे डरते नहीं रस्ते सुनसान आते हैं
मेरे दुख के दिनों में......।।
कोई याद करे उनको, दुख हल्का हो जाये-2
कोई भक्ति करे उनकी उन जैसा बन जाये

वे भक्तों का कहना-2 झट मान जाते हैं
मेरे दुख के दिनों में......।।

कौन सुनेगा किसको सुनायें

कौन सुनेगा किसको सुनायें, इसीलिये चुप रहते हैं।
हमसे अपने रूठ न जाए, इसीलिए चुप रहते हैं।।
अति संघर्ष भरे जीवन से, दिल ये अब घबराया है।
गैरों की क्या कहें हमें तो, अपनों ने ही गिराया है।।
राज ये दिल का-2 खुल न जाए
इसीलिए चुप रहते हैं।
मेरी जीवन वीणा में तार दुःखों का जोड़ दिया।
आया था तेरे पास में तुमने, मुख क्यों अपना मोड़ लिया।।
टूटी ये वीणा-2, कैसे गाए
इसीलिए चुप रहते हैं।।
संयम देकर तुमने मुझको, अपने से क्यों दूर किया।
गम से तड़पते रहने को, तुमने क्यों मजबूर किया।।
दर्द विरह का-2 किसको दिखायें
इसीलिए चुप रहते हैं।।
तुमसे दूर होकर गुरुवर, गम में गोते लगाते हैं।
दुनिया वाले जान न पाए, अधर मेरे मुस्कराते हैं।।
आँखों से आँसू-2 बह न जाए

इसीलिए चुप रहते हैं।।

इस योग्य हम कहीं हैं

इस योग्य हम कहीं हैं, गुरुवर तुम्हें रिझायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये।।
जब से जन्म लिया है, विषयों ने हमको घेरा है।
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पे डेरा है।।
सद्‌बुद्धि को अहम ने हरदम रखा दबाये।
इस योग्य......

निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं, स्वार्थी हैं।
तेरा ध्यान जब लगायें, माया पुकारती है।।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त न हो पाये।
इस योग्य......

जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है।
एक दूसरे के सुख से, सबको बड़ी जलन है।।
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ न पाये।
इस योग्य......

जब कुछ न कर पाये, तब तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं सह लेंगे सब सजाये।।
अब ज्ञान हमको देवे, कुछ और हम न चाहें।
इस योग्य......

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं
बाद आँसू बहाने से क्या फायदा
कभी प्यासे को.....
मैं तो मन्दिर गया, पूजा आरती की
पूजा करते हुए ये, ख्याल आ गया
कभी माँ-बाप की, सेवा की ही नहीं
सिर्फ पूजा ही करने से क्या फायदा
कभी प्यासे को.....
मैं तो मन्दिर गया, पूजा आरती की
गुरुवाणी को सुनकर, ख्याल आ गया
जैन कुल में हुआ, जैनी बन न सका
सिर्फ जैनी कहाने, से क्या फायदा
कभी प्यासे को.....
मैं काशी बनारस मथुरा गया
गंगा नहाते हुये, ये ख्याल आ गया
तन को धोया मगर, मन को धोया नहीं
सिर्फ गंगा नहाने से क्या फायदा
कभी प्यासे को.....

मैंने दान किया मैंने जप तप किया
दान करते हुए, ये ख्याल आ गया
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं
दान लाखों का कर लूँ तो क्या फायदा
कभी प्यासे को.....

सजधज कर जिस दिन

सजधज कर जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी।
न सोना काम आयेगा, न चाँदी आयेगी।। सजधज...
छोटा सा तू इतने बड़े अरमान हैं तेरे।
मिट्टी का तू सोने के सब, सामान हैं तेरे।।
मिट्टी की काया मिट्टी में हो ऽऽ।
मिट्टी की काया मिट्टी में, जिस दिन समायेगी।।
न सोना काम.......
पर खोल के पंछी तू पिंजरा, तोड़ के उड़ जा।
माया महल के सारे बंधन, तोड़ के उड़ जा।।
कण-कण में तेरी जिन्दगानी हो ऽ ऽ ऽ।
कण-कण में तेरी जिन्दगानी मुस्कुरायेगी।।
न सोना काम.......
मोह माया को तू छोड़ दे प्रभु नाम को जप ले।
मतलब के सब साथी हैं ये, तू ध्यान में रख ले।।

लालच में तेरी जिन्दगानी बीत जायेगी।
न सोना काम.........।।

ये धर्म है आतम ज्ञानी का

ये धर्म है आतम ज्ञानी का, सीमंधर महावीर स्वामी का
इस धर्म का भैय्या हो ऽऽ, इस धर्म का भैय्या क्या कहना।
ये धर्म है वीरों का गहाना....।
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय
यहाँ णमोकार का चिन्तन है, यहाँ आगम सार का मंथन है
यहाँ रहते हैं ज्ञानी हो ऽ ऽ ऽ, यहाँ रहते हैं ज्ञानी मस्ती में
मस्ती है रब की हस्ती में, जय हो, जय हो, जय हो..
यहाँ पद्मावती धरणेन्द्र हुए, इनके सुमिरन से धन्य हुए
हुई निर्मल काया हो ऽऽऽ, हुई निर्मल काया भक्ति में
जय हो, जय हो, जय हो....
यहाँ जिनवाणी सी माता है, भक्तामर स्तोत्र की गाथा है
यहाँ सत्य अहिंसा हो ऽऽऽ, यहाँ सत्य अहिंसा संयम है
संयम ही साधु जीवन है, जय हो जय हो जाय हो....

मंत्र नवकार

मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा, ये है वो जहाज हो ऽ ऽ ऽ
ये है वो जहाज, जिसने लाखों को तारा, मंत्र णमोकार हमें.......
अरिहंतों को नमन हमारे, अशुभ करम अरि हनन करे-2

सिद्धों के सुमरन से आत्मा, सिद्ध क्षेत्र को गमन को-2
भव-भव में हो ऽ ऽ ऽ, भव-भव में नहीं भ्रमे दुबारा
मंत्र णमोकार हमें....
आचार्यों के आचारों से, निर्मल निज आचार करे
उपाध्याय का ध्यान धरें हम, संवर का सत्कार करें
सर्वसाधु को हो ऽऽऽ, सर्वसाधु को नमन हमारा
मंत्र णमोकार हमें.....
सोते उठते चलते फिरते, इसी मंत्र का जाप करो-2
आप कमाओ, पाप पुण्य को, क्षय भी अपने आप करो-2
इसी महामंत्र का हो ऽऽऽ, इसी महामंत्र का ले लो सहारा
मंत्र णमोकार हमें.....
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं,णमो लोए सव्व साहूणं।
मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा..

कैसे अदा करेंगे

तर्ज : चूड़ी मजा न देगी
कैसे अदा करेंगे, उपकार हम तुम्हारे।
हम तो बने सितारे, बस आपके सहारे।।
तन को रचा हमारे, माता-पिता ने मेरे।
जीवन सम्हारा तुमने, भर ज्ञान उर हमारे।।

कैसे अदा.....

तुम देवता से बढ़कर, मेरे लिये हो ईश्वर
चरणों में शीश मेरा, हे ईश जी हमारे
जब तक हैं जमी पर, विस्मृत न कर सकेंगे
पथ के प्रदीप मेरे, गुरुदेव हो हमारे
कैसे अदा.....

तुमसे मिला है सब कुछ, तुमको क्या भेंट दूँ मैं
सूरज के आगे जुगनू की, बात क्या करूँ मैं
जीवन सजाने वाले, बस इतनी आरजू है
नजरें न मोड़ लेना, कभी दूर से हमारे
कैसे अदा.....

गुरु हमें दिल से बनाना चाहिए

तर्ज : चप्पा चप्पा चरखा चले

गुरु हमें दिल से बनाना चाहिए
उनके गुणों को ही गाना चाहिये
कोई कुछ कहे फिर आकर हमें
बातों में किसी की नहीं आना चाहिये। गुरु हमें....

गुरु तो गुरु हैं गुरु शिष्य नहीं हैं
शिष्य को कभी भी वो अशिष्ट नहीं है
गुरु महिमा को गर जानना तुम्हें

तो शिष्य को गुरु की याद आनी चाहिये। गुरु हमें....
रास्ता बताने वाले गुरु हैं महान
गुरु बिन शिष्य बेजान हैं वीरान
गुरु की कृपा को गर पाना है दिले
तो चरणों में सिर को झुकाना चाहिये। गुरु हमें....
अपने को छोड़ दिया गुरु के चरन
उसको किया है मुक्ति रमा ने वरन
गुरु के ही दिल में बनाना हो जगह
तो शिष्य भाव खुद में लाना चहिये। गुरु हमें....
कमल का फूल गुरु शिष्य के लिये
भव का फूल गुरु शिष्य के लिये
गुरु जैसा ज्ञान गर पाना है तुम्हें
तो गुरु के चरण में ही आना चाहिये। गुरु हमें....
गुरु ने ही आइना बताया है हमें
आइना में क्या है ये दिखाया है हमें
अक्स देख कालिमा हटाना हो अगर
तो गुरु को ही अपना बनाना चाहिये। गुरु हमें....
गुरु का आशीष जिसे मिल गया है
उसका हृदय यहाँ खिल गया है
मरण समाधि गर करना तुम्हें
तो छोड़ ख्याति पूजा गुरु ध्याना चाहिये। गुरु हमें....

ढोल बजा के

ढोल बजा के बोल गुरुवर मेरे हैं....2
ताली बजा के बोल गुरुवर मेरे हैं...2
मेरे हैं मेरे हैं...3
ढोल बजा के बोल....
कोई कहे मेरे कोई कहे तेरे....2
कोई कहे पतले कोई कहे मोटे
गुरुवर गोल मटोल गुरुवर मेरे हैं।
ढोल बजा के बोल....
कोई कहे महँगे कोइ कहे सस्ते....2
गुरुवर हैं अनमोल गुरुवर मेरे हैं
ढोल बजा के बोल....
कोई कहे पूरब कोई कहे पश्चिम
कोई कहे उत्तर कोई कहे दक्षिण
गुरुवर चित्त चकोर गुरुवर मेरे हैं
ढोल बजा के बोल.....
कोई कहे सोना कोई कहे चाँदी
कोई कहे हीरा कोई कहे मोती
गुरुवर हैं बेमोल गुरुवर मेरे हैं

ढोल बजा के बोल..

(तर्ज : प्रभु के रंग में)
रंग मा रंग मा रंग मा रे
प्रभु थारा ही रंग मा रंग गयो रे।।टेक।।
आया मंगल दिन मंगल अवसर
भक्ति में थारी हूँ नाच रहो रे। प्रभु थारे...
गाओ रे गाना आतमराम का-2
आतम देव बुलाए रहो रे। प्रभु थारे....
आतम देव को अन्तर में देखा-2
सुख सरोवर उछल रहो रे। प्रभु थारे.....
भाव भरी हम भावना ये भाए
आप समान बनाय लियो रे। प्रभु थारे.....

मीठो मीठो बोल

तर्ज : धीर धीरे बोल
मीठो-मीठो बोल थारो कांई बिगड़े-2
आ जीवन या दम नहीं
कब निकले प्राण मालूम नहीं
मीठो-मीठो....
सोच समझ ले स्वारथ का ये संसार।
लाख जतन कर छूटे न घर बार।
तू जाग जा तू मान जा, पहचान जा।

संसार किसी का घर नहीं।
कब निकले प्राण मालूम नहीं।
मीठो–मीठो....
युग–युग से गुरु कहते बार–बार।
एक बार तू कर ले मन में विचार।
तू जाग जा तू मान जा, पहचान जा।
संसार किसी का घर नहीं।
कब निकले प्राण मालूम नहीं।
मीठो–मीठो....

आगे–आगे अपनी

आगे–आगे अपनी ही अर्थी के मैं गाता चलूँ
सिद्ध नाम सत्य है अरहंत नाम सत्य है
पीछे–पीछे दूर तक दिख रही जो भीड़ है
पंछी शाख से उड़ा खाली पड़ा नीड़ है
सृष्टि सारी देख ली पर्याय ही अनित्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....
जिसको मेरे सुखों दुखों से कुछ नहीं था वास्ता
उनके ही कांधों पर मेरा कट रहा है रास्ता
आँख जब मूँदी तो कोई शत्रु है न मित्र है
सिद्ध नाम सत्य है.....

डोरियों से मैं नहीं, बँधा मेरा संस्कार था
एक कफन पर ही मेरा, रह गया अधिकार था
तुम उसे उतारने, जा रहे यह सत्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....
आपके अनुराग को, आज क्या हो गया।
जिस क्षण चिता पर चढ़ा, महान कैसे हो गया
जो अनित्य वो ही नित्य, नित्य ही अनित्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....
मैं अरूपी गंध दूर, उड़ गई थी फूल से
लहर भी चली गई थी, दूर मृत्यु कुल से
सत्य देख हँस रहा कि, जल रहा असत्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....
मैं तुम्हारे वंश से, भटका हुआ हूँ देवता
आत्म तत्त्व छोड़कर, मैं जगत को देखता
यह अनादि काल, की भूल का ही कृत्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....

उड़ चला पंछी

उड़ चला पंछी रे, हरी भरी डाल से-2
रोको रे रोको कोई, मुनि को विहार से
उड़ चला पंछी....
सोचा कभी न हमने, आके जगाओगे

आके जगा के हमको, यूँ ही छोड़ जाओगे
दान देना जीवन का, फिर से पधार के
रोको रे रोको.....
सरगम की ताने टूटी रूठी हुई है सांसें
आके मनाओ गुरुवर, रो रही हैं आँखें
दीप जलाओ सम्यक का, दीवाली मनाय के
रोको रे रोको.....
पास जो रह के तेरे, भजन मैंने गाये हैं
जीवन में उतने मैंने, पुण्य कमाये हैं
पुण्य की वर्षा करें, नगर में पधार के
रोको रे रोको.....
कम्पित है मन की बगिया, हरियाली आज है
पतझड़ न आ जाये, सूखा वृक्ष आज है
कर्मों का पुण्य नदी है, जाये गुरु आज रे
रोको रे रोको.....

भगवान तुझे

भगवान तुझे मैं खत लिखता, पर पता तेरा मालूम नहीं।
रो-रो लिखता, हँस-हँस लिखता, पर पता तेरा मालूम नहीं।।टेक।।
मैंने चंदा से पूछा सूरज से, और पूछा गगन से तारों से।
तारों ने कहा आकाश में है, पर पता तेरा मालूम नहीं।। भगवान..

मैंने पूछा बाग के माली से, और पूछा वृक्ष की डाली से।
डाली ने कहा माटी में है, पर पता तेरा मालूम नहीं। भगवान..
मैंने संतों से पूछा गुरुओं से, ओर पूछा ज्ञानियों और ध्यानियों से।
सबने कहा कण-कण में है, पर पता तेरा मालूम नहीं। भगवान..
मैंने गंगा से पूछा यमुना से, और पूछा गहरे सागर से।
सागर ने कहा पानी में है, पर पता तेरा मालूम नहीं। भगवान...
मैंने मीणा से पूछा गूजर से, और पूछा वहाँ के ग्वालों से।
ग्वाले ने कहा टीले में है, पर पता तेरा मालूम नहीं। भगवान...

सांवरिया पारसनाथ

सांवरिया पारसनाथ, शिखर पर भले विराजे जी
टोंक टोंक पर ध्वजा विराजे, झालर घण्टा बाजे
घण्टे की घननाद घनाघन, अनहत बाजा बाजे जी हो
सांवलिया पारसनाथ.....
दूर दूर से यात्री आये, मन में ले लेकर चाव
अष्ट द्रव्य से पूजा कीनी, मनवांछित फल पावे जी
सांवलिया पारसनाथ.....
काली काली भिलनी आये, जिनकी लम्बी चोटी
जिसके मन में दया धर्म नहीं, उसकी किस्मत खोटी
सांवलिया पारसनाथ.....
ऊँचा नीचा पर्वत सोहे, जहाँ भीलों का वासा
उसी जगह से प्रभु मोक्ष गये, वहाँ से लिया निवासा

सांवलिया पारसनाथ.....

सोते सोते ही निकल गयी

सोते सोते ही निकल गयी, सारी जिन्दगी।
बोझा ढोते–ढोते निकल गयी सारी जिन्दगी।।
जिस दिन जन्म लिया पृथ्वी पर तूने रुदन मचाया
आँख तेरी खुलने न पाई, भूख भूख चिल्लाया
खाते खाते ही निकल गई सारी जिन्दगी
बोझा ढोते–ढोते ही.....
यौवन बीता आया बुढ़ापा डगमग डोले काया
सब के सब रोगों ने आकर डेरा खूब जमाया
रोगों भोगों में निकल गई सारी जिन्दगी
बोझा ढोते–ढोते ही.....
जिस तन को तू अपना समझा दे बैठा वह धोखा
प्राण जाए और जल जाएगा यह काठी का खोका
खोका ढोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी
बोझा ढोते–ढोते ही.....
जीवन भर नहीं धर्म किया और अंत समय पछताया
पैसा–पैसा करते पेटी बहुत भराया
भोगों–भोगों में निकल गई सारी जिन्दगी
बोझा ढोते–ढोते ही.....

गुरुवर आज

गुरुवर आज मेरी कुटिया में आए हैं
चलते फिरते हो.....2 तीरथ पाये हैं
गुरुवर आज.........
अत्रो अत्रो तिष्ठो तिष्ठो कह पड़ गाये हैं
भूमि शुद्ध मुनि को बताये हैं
श्रावक चन्दन चौक पुराये है।
गुरुवर आज.........
नग्न दिगम्बर गुरुवर प्यारे है
जैन धरम का एक ही सहारे है
ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये है
गुरुवर आज.........
श्रावक जल से चरण पखारे हैं
गन्धोदक से भाग्य संवारे हैं
इन भोजन से ग्रास बनाये हैं
गुरुवर आज.........
हाथ कमण्डल बगल में पीछी है
गुरुवर पर सारी दुनिया रीझी है
आहार कराके नर नारी हर्षाये हैं
गुरुवर आज.........

आया कहाँ से

आया कहाँ से कहाँ है जाना, ढूँढ़ ले ठिकाना चेतन–2

एक दिन गौरा तन ये तेरा, मिट्टी में मिल जायेगा
कुटुम्ब कबीला खड़ा रहेगा, कोई बचा नहीं पायेगा
नहीं चलेगा, कोई बहाना–2
ढूँढ़ ले............
जब तक तन में सांस है चलती, सब तुझको अपनायेंगे–2
जब न रहेंगे प्राण ये तन में, देख तुझे घबरायेंगे–2
कहीं तो तुझको पड़ेगा जाना–2
ढूँढ़ ले............
दौलत के दीवानो सुन लो, कुछ भी साथ न जाएगा–2
धन दौलत और रूप खजाना, यही धरा रहा जाएगा–2
आया अकेला, अकेला ही जाना–2
ढूँढ़ ले............
आत्म ध्यान लगाले चेतन, दुःख तेरा मिट जाएगा
सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र से, भव सागर तर जाएगा
सच्चे सुख का है ये खजाना–2
ढूँढ़ ले............

जब से गुरु दर्श मिला

जब से गुरु दर्श मिला, मन ये मेरा खिला खिला
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे, मेरी तो पतंग उड़ गई रे
फासले मिटा दो आज सारे
हो गये गुरु जी हम तुम्हारे–2

अंग अंग में उमंग, डोल रही संग–संग
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे....
तुम ही हो समयसार मेरे
तुम ही नियमसार मेरे–2
मन का पंछी बोल रहा, संग मेरे डोल रहा
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे....
आज ये हवाएँ क्यों बहकतीं
आज ये फिजायें क्यों महकतीं–2
आज है ये फिर उमंग, नाच रे संग संग
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे.....

मुक्तक

तुम्हारी मेहरबानी से मंजिल पा रहा हूँ।
भटकनों को छोड़ कर अपने में आ रहा हूँ।।
तुम्हारे उपकारों को कैसे भूल सकता हूँ।
आपके आशीर्वाद से सब कुछ पा रहा हूँ।।

मन की तरंगे मार लो

मन की तरंगे मार ले, बस हो गया भजन
आदत बुरी सुधार ले, बस हो गया भजन
रहता है झोपड़ी में, महलों की चाह है
यह चाह ही तेरे लिये, कांटों की राह है
इस चाह को तू मार ले, बस हो गया भजन

आदत....

ये तेरा है ये मेरा है, ये भाव है बुरा
जा सबको अपना मान ले, मानुष बने खरा
मन की कषाय मार ले, बस हो गया भजन
आदत....

पर में तू खोजना नहीं, निज धर्म को सदा
हृदय जो तेरे पास है, तुझसे नहीं जुदा
अपने को आप जान ले, बस हो गया भजन
आदत....

भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का

भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का।
मजा कहा नहीं जाए इस कंगाली का।।
बच्चा हो या बच्ची उसे निदिया आए अच्छी।
पास न होवे लँगोटी, उसे चिन्ता हो फिर किसकी।।
न भय रखवाली का। मजा कहाँ....।।

छोड़े जो परिवारा, नहीं हो ममता उसे धन की
तजे परिग्रह सारा, फिर चाह मिटे सब मन की
न भय रखवाली का। कहाँ....।।

धन्य दिगम्बर साधु, जो नग्न अवस्था रहते
खड़े-खड़े इक बारा, अँजुलि में भोजन करते
न भय रखवाली का। कहाँ....।।

तज के सारी दुविधा, जो निज आतम को ध्यायें
धन्य जन्म है उनका, जो शिव आनंद को पावें
न भय रखवाली का। कहाँ....।।

दिल न दुखाना

माता–पिता का दिल न दुखाना, बड़ा भले ही बन जाना।
उनका भारी कर्ज भुलाकर, पड़े न पीछे पछताना।।
पहली साँस भरी जब तूने, वे ही तेरे पास रहे।
उनकी अंतिम साँस निकलते, तू भी उनके साथ रहे।।
पहले पन्द्रह वर्षों तक तो, भार उठाया सब तेरा।
उनके अंतिम वर्षों में तू, अधम अगर जो मुँह फेरा।।
माता–पिता का......
माता पिता की छाँव गँवाकर, बालक सूना हो जाता।
उसकी पीड़ा वही समझता, जिसके नहीं पिता माता।।
एक अनाथ अभागा बालक, बचपन का सुख क्या जाने।
किसको बोले माँ बेचारा? किसे पिता अपना माने?
माता–पिता का......
बंगला गाड़ी बीबी बच्चे नहीं कठिन इनको पाना।
माता पिता फिर मिलना मुश्किल, कभी नहीं धोखा खाना।।
तुझको जिनने अपना माना, तू भी उनको अपनाना।
किसी नये रिश्ते के कारण, यह रिश्ता मत ठुकराना।।
माता–पिता का......

अपने मुँह का कौर त्याग कर, जिसने तुझको है पाला।
सुधा पिलाने वाले उनको, देना मत विष का प्याला।।
तुझको पाकर खुशियाँ बाँटी, उनका घर मत बँटवाना।
जिनने गले लगाया उनके, गले न फंदा बन जाना
माता-पिता का......
याद जरा कर हाथ पकड़कर, तुझे पढ़ाने ले जाना।
विद्यालय में भरती करके, तुझको शिक्षा दिलवाना।।
सपने में भी कभी न तुझको, अनाथ आश्रम दिखलाना।
तू भी ऐसे माता-पिता को, वृद्धाश्रम न भिजवाना।।
माता-पिता का......
तेरे जन्म दिवस आने पर, भारी उत्सव रचवाना।
त्यौहारों में सुन्दर-सुन्दर, कपड़े तुझको पहनाना।।
फिर मनमाना खर्च उठाकर, तेरे मन को बहलाना।
ऐसे माता-पिता को तुझसे, पड़े नहीं धोका खाना।।
माता-पिता का......
तेरी खातिर दिये जलाये, उनका जिया जलाना ना।
आस लगाकर तुझको पाया, तू भी उन्हें गँवाना ना।।
फूल बिछाने वालों के पथ, काँटे कभी बिछाना ना।
हाथ थामने वालों को तू, धक्का कभी लगाना ना।।
माता-पिता का......
तेरी तड़पन में जो तड़पे, उनको तू मत तड़पाना।

दिया कष्ट में तुझे सहारा, उनपे जुल्म न तू ढाना।।
बर्तन बेच पढ़ाया जिनने, उनसे तू मत इतराना।
भले विदेशों में जाकर तू, बड़ा आदमी कहलाना।।
माता–पिता का......
मुँह मीठा करने वालों पर, तू कड़वाहट मत लाना।
तेरे माता पिता बनकर के, उनको पड़े न पछताना।।
उनकी आँखें भर आती, जब प्यारी बेटी घर छोड़े।
और हृदय भर आता, जब प्यारा बेटा मुँह मोड़े।।
माता–पिता का......
दीन दुखी की सेवा करना, मंदिर मस्जिद बनवाना।
गौशाला को चंदा देना, पंछी को देना दाना।।
सारा कोरा आडंबर है, कलियुग का ताना बाना।
तेरे कारण माता–पिता को, अगर पड़े रोना गाना।।
माता–पिता का......
जीते जी तो शोक कराना, शोक सभा फिर करवाना।
कर प्रहार उनके सपनों पर, हार चित्र को पहनाना।।
फिर उनकी यादों में कोई, मोटी पुस्तक छपवाना।
बेटे के नाते पर होगा, तेरा कालिख पुतवाना।।
माता–पिता का......
माता–पिता की सेवा करके, तू बच्चों को दिखलाना।
वे भी तेरा ध्यान रखेंगे, नहीं पड़ेगा सिखलाना।।

पूरब की यह रीत निभा ले, वरना होगा पछताना।
जैसा बीज उगायेगा तू, वैसा फल तुझको पाना।।
माता-पिता का......

दोहा

जाति लाभ कुल रूप तप, बल विद्या अधिकार।
इनका गर्व न कीजिये, ये मद अष्ट प्रकार।।

दुष्ट पैसा

ठन ठनाठन ठन पे सारी दुनिया डोले रे
तू क्या बोले? बाबू? तेरा पैसा बोले रे।।टेक।।
पैसे से ईमान खरीदा, पैसे से भगवान।
पैसे के कारण ही प्यारे! कहलाता इन्सान।।
बिना रुपैया कोई न पूछे मीठा बोले रे।
तू क्या बोले? बाबू......
पैसे के ही कारण प्यारे? चलता सबका चारा
बिन पैसे के भूखा, मरता है गरीब बेचारा
बिना रुपया कोई न पूछे, मीठा बोले रे
तू क्या बोले? बाबू......
पैसे के ही कारण, भाई बन्धु हैं सारे
पैसे के झगड़े के कारण, सब न्यारे न्यारे
बिना रुपैया बाप न बोले, न्यारा हो ले रे
तू क्या बोले? बाबू......

पैसे से ही मास्टर पूछे, पैसे से ही डॉक्टर
बिना पैसे के रोगी बाहर, मरता है सड़कों पर
बिना रुपये वकील बाबू, आँख न खोले रे
तू क्या बोले? बाबू.....
पैसे को कहती है दुनिया, परमेश्वर है प्यारा
पैसे के नीचे दब जाता, अत्याचार हमारा
नोट के आगे नेताजी का सर भी डोले रे

काजू खायें...

काजू खाये, किसमिस और मखाना।
हाय राम, अच्छा ये बहाना।।टेक।।
नमक त्याग करके, जो हमने न खाया।
बस थोड़ा-सा हलवा, घी का बनाया।
जरा अपने मन को समझाना।
हाय राम अच्छा ये बहाना, काजू खाये....।।1।।
शक्कर त्याग करके, जो हलवा न खाया।
बस थोड़ा सा दूध का, छेना बनाया।
इन्द्रियों पे काबू न पाना, काजू खाये.....।।2।।
खटाई त्याग करके, जो हमने नहीं खायी।
बस थोड़ी सी काजू की, चटनी बनाई।
मुश्किल है बस, इस दिल को समझाााना।
हाय राम अच्छा ये बहाना, काजू खाये....।।3।।

रोटी त्याग करके, जो हमने न खाई।
बस थोड़ी सी केले की, टिकिया बनाई।।
मुश्किल ये, भावों को समझाना।
हाय राम अच्छा ये बहाना, काजू खाये.....।।4।।

ऊँचे ऊँचे शिखरों

ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है तीरथ हमारा।
तीरथ हमारा, ये जग से न्यारा।
मधुवन माहि बरसे रे, अमृत की तो धारा।
अमृत की धारा, हो ये अमृत की धारा।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....।।1।।
भाव सहित बन्दे जो कोई।
ताहि नरक पशुगति ना होई।
उनके लिए खुल जाये रे, सीधा स्वर्ग का द्वार।
स्वर्ग का द्वारा हो ये स्वर्ग का द्वारा।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....।।2।।
जो भी तीर्थंकर ने वचन उचारे
कोटि-कोटि मुनि मोक्ष पधारे
उच्च परम पद पावे रे न जन्में दुबारा
ना जन्मे दुबारा, ना जन्में दुबारा
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....।।3।।
हरे-हरे वृक्षों की झूमें डाली

समोशरण को ये रचना निराली।
पर्वत पर जो बहता है, यह झरना तो प्यारा।
झरना तो प्यारा, ये झरना तो प्यारा।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....।।4।।
नवयुवक मंडल ये शरण में आकर
सारे जिनालय में ढोक लगाकर।
कर लो स्वीकार प्रभु जी ये नमन हमारा।
नमन नमन नमन हमारा।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....।।5।।

मोक्ष के प्रेमी हमने

मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे
मखमल पर सोने वाले, भूमि पर पड़ते देखे
सरसों के दाने जिनके, विस्तर पर चुभते देखे
काया की सुध नाहीं, गीदड़ तन भखते देखे।।
मोक्ष.....
अर्जुन व भीम जिनके बल का न पार था,
आतम उन्नति के कारण, अग्नि पर जलते देखे।।
मोक्ष....
पारसनाथ स्वामि तद भव मोक्षगामी
कर्मों ने नाहीं छोड़ा, पत्थर तक पड़ते देखे।।
मोक्ष....

सेठ सुदर्शन प्यारा, रानी ने फंदा डाला
शील को नाहीं छोड़ा, शूली पर चढ़ते देखे।।
मोक्ष....
बुद्धों का जोर था जब, अकलंक देव देखे
धर्म को नाहीं छोड़ा, मस्तक तक कटते देखे।।
मोक्ष....
भोगों को त्याग प्राणी, जीवन ये जाए बीता
तृष्णा न हुई पूरी, अर्थी पर चढ़ते देखे
संसारी प्राणी हमने, विषयों में फँसते देखे।।
मोक्ष....

ये मध्य लोक के लोगों

तर्ज : ऐ मेरे वतन के लोगों....

ये मध्य लोक के लोगों, जरा याद करो जिनवाणी
ये समय है निकला जाये, जैसे अंजुली का पानी-2
जब नरक गति में गया तो, वहाँ अन्न मिला न पानी।
कढ़ाई में तला गया तू, जब आई याद पुरानी।
अब पाप करम को छोड़ो, सुधर जाये तेरी जिन्दगानी
ये समय.....
तिर्यंच गति में गया तो, छेदन भेदन की कहानी
डण्डे मार पड़ी तो, बोझा रखा मणो भारी
अब मायाचारी को छोड़ो, सुधर जाये तेरी जिन्दगानी

ये समय.....

तूने देवगति भी पाई तो, भोगों की दिन रात कहानी
जब माला गई मुरझाई, तो आई अकल ठिकानी
अब सम्यक दर्शन धारो, सुधर जाये तेरी जिन्दगानी
ये समय.....

अब मनुश्य जन्म पाया तो, विषय भोगों में बीती जवानी
पूजा दान से विमुख हुआ तू, बह गया आँख का पानी
अब गुरु शरण में आओ, सुधर जाये तेरी जिन्दगानी
ये समय.....

जहाँ नेमि के चरण

जहाँ नेमि के चरण पड़े, गिरनार की धरती है।
वो प्रेम मूर्ति राजुलउ उस पथ पर चलती है।।
उस कोमल काया पर, हल्दी का लेप चढ़ा
मेंहदी भी रुचिर लगी, गले मंगलसूत्र पड़ा
पर मांग न भर पाई, यह बात खलती है
जहाँ नेमि.....

सुन पशुओं का कृन्दन, तुमने तोड़े बंधन
जागा वैराग्य तभी, धारा प्रभु पथ पावन
उस परम वैरागन को, फिर प्रीत उमड़ती है
जहाँ नेमि.....

राजुल की आँखों से, झर-झर झरता पानी

अंतस में घाव भरे, प्रभु दर्श की दीवानी
मन मंदिर में जिसकी, तस्वीर उमड़ती है
जहाँ नेमि.....
नेमि जिस ओर चले, वही मेरा ठिकाना है
जीवन की यात्रा का, वो पथ अंजाना है
लख चरण चलूँ प्रभू के, राजुल कब रुकती है
जहाँ नेमि.....
तन मन का मुरझाया
प्रभु नाम जपने से, नव जीवन मिलता है
तन मन का मुरझाया, उपावन खिलता है
अंतर के कोने में एक, दीपक जलता है-2
श्रीपाल प्रभु गुण गाकर, हाँ गाकर
तूफा में भी पार हुये वो सागर, हाँ सागर
तन मन का......
चंदन बाला दर्शन से, दर्शन से
देखो पल में दूर हुए बंधन से, बंधन से
तन मन का......
हो सर्प अगर विष वाला, हाँ विष वाला
कर लो मन में, ध्यान बने जयमाला, हाँ जयमाला
तन मन का......
सब छोड़ जगत की माया, हाँ माया

ले लो मन में वीर शरण की छाया, हाँ छाया

तन मन का......

संसार समुद्र है गहरा, हाँ गहरा

कर्मों का लगा है पहरा, हाँ पहरा

तन मन का......

भव ताप सभी टल जावें, हाँ टल जावें।

सुमरन से संताप सभी टल जाये, हाँ टल जावें।।

तन मन का......

इतनी शक्ति हमें देना

इतनी शक्ति हमें देना भगवन्, मन का विश्वास कमजोर हो न।

हम चले मोक्षमार्ग पे, हमसे भूल कर भी कोई भूल हो न।।

दूर अज्ञान के ही अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।

हर बुराई से बचते रहे हम जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।।

बैर हो न किसी का किसी से भावना मन में बदले की हो न।

हम चले......।।

हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचे किया क्या है अर्पण।

फूल खुशियों के बाँटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुवन।।

अपनी करुणा का जल तू बहा के, कर दे पावन हरेक मन का कोना।

हम चले........।।

हर तरफ जुल्म है बेवसी है, सहमा–2 सा हर आदमी है।
पाप का बोझ बढ़ता ही जाये, जाने कैसे ये धरती थमी है।।
बोझ ममता का तू ये उठा ले, तेरी रचना का ये अंत हो ना।
हम चले.......।।
हम अंधेरे में है रोशनी दे, खो न दे खुद को ही दुश्मनी में।
हम सजा पाये अपने किये की, मौत भी हो तो सह ले खुशी से।।
कल जो गुजरा है कल न फिर गुजरे, आने वाला वो कल ऐसा हो न।
हम चले......।।

आसरा इस जहां

आसरा इस जहां में मिले न मिले,
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिये।
चाँद तारे फलक में दिखे न दिखे
मुझको तेरा नजारा सदा चाहिये।।
आसरा इस....।।
यहाँ खुशियाँ है कम और ज्यादा हैं गम,
हर तरफ देखो बस भरम ही भरम।
मेरी चाहत की दुनियाँ बसे न बसे,
मुझको दिल में बसेरा सदा चाहिये।।
आसरा इस....।।
मेरी धीमी है चाल और पथ है विशाल,

हर कदम पर मुसीबत है अब तो सम्हाल।
पैर मेरे थके हैं चले न चले,
मुझको तेरा इशारा सदा चाहिये।।
आसरा इस....।।
कभी वैराग है, कभी अनुराग है,
जहाँ बदले हैं, खाली वही बाग है।
मेरी महफिल मैं समां जले न जले,
मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिये।
आसरा इस....।।

मुझे ऐसा वर दे दो

मुझे ऐसा वर दे दो, गुणगान करूँ तेरा।
इस बालक के सिर पर गुरु हाथ रहे तेरा।।टेक।।
सेवा नित तेरी करूँ, तेरे द्वार पे आऊँ मैं।
चरणों की धूलि को, नित शीश लगाऊँ में।।
चरणामृत पाकर के, नित कर्म करूँ मेरा।
इस बालक.........।।1।।
भक्ति और शक्ति दो, अभिमान को दूर करो।
नही द्वेष रहे मन में, रहे वास गुरु तेरा।।
मुझे ऐसा.........।।2।।
विश्वास हो ये मन में, तुम साथ ही हो मेरे।
तेरे ध्यान में सोऊँ मैं, सपनों में रहो मेरे।।

चरणों से लिपट जाऊँ, तुम ख्याल करो मेरा।

इस बालक..........।।3।।

मेरे यश कीर्ति को, गुरु मुझसे दूर करो।

इस मन मंदिर में तुम, भक्ति भरपूर करो।।

तेरी ज्योति जगे मन में, नित ध्यान धरूँ तेरा।

इस बालक.........।।4।।

भक्त तुम्हारी याद में

तर्ज : कलयुग बैठा मार कुण्डली..

जाने वाले एक संदेश, गुरुवर से तुम कह देना।

भक्त तुम्हारी याद में रोये, उसको दर्शन दे देना–2।।टेक।।

जिनको गुरुवर दर पे बुलावे, किस्मत वाले होते हैं।

जो उनसे कभी मिल पाते, छुप–छुप कर वो रोते हैं।।

जितनी परीक्षा ली है मेरी, और किसी की मत लेना।

भक्त ....।।1।।

तूने कौन सा पुण्य किया है, दर पे तुझे बुलाया है।

मैंने कौन सा पाप किया है, दिल से मुझे भुलाया है।।

एक बार मुझे दर पे बुला ले, इतनी कृपा कर कह देना।

भक्त ....।।2।।

मुझको ये विश्वास है दिल में, मेरा बुलावा आयेगा।

गुरुवर मुझको दर्शन देकर, अपने पास बिठाएगा।।

उनसे जाकर इतना कहना, मेरा भरोसा टूटे ना।

भक्त ....।।3।।

कहना उनसे मन मंदिर में, मैंने उन्हें बिठाया है।
गुरु रूप में वीर प्रभु को, अब तो मैंने पाया है।।
आसा केवल एक यही है, मोक्ष मार्ग दिखला देना।

भक्त ....।।4।।

नहीं चाहिये दिल दुखाना

तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी देने वाले....

नहीं चाहिये दिल दुखाना किसी का
सदा न रहा है, सदा न रहेगा जमाना किसी का–2
आएगा बुलावा तो जाना पड़ेगा,
सिर आखिर तुझको झुकाना पड़ेगा
वहाँ न चला है, वहाँ न चलेगा, बहाना किसी का
नहीं चाहिये........।।
सोहरत तुम्हारी रह जायेगी ये, दौलत यहीं पर रह जायेगी ये।
नहीं साथ जाता, नहीं जायेगा ये खजाना किसी का।
नहीं चाहिये........।।
पहिले तो तुम अपने आपको सुधारो,
हक नहीं तुमको बुराई औरों की निकालो
बुरा है जहाँ में, बुरा है जहाँ में, बुराई बताना।
नहीं चाहिये........।।
दुनियाँ का गुलशन सजा ही रहेगा,

ये तो जहाँ में लगा ही रहेगा।
आना किसी का जग में, जाना किसी का।
नहीं चाहिये........।।

तुमको तपना होगा

सूरज तपे तपे रे माटी, दीपक जले जले रे बाती
तुझको तपना होगा, मोह तजना होगा।।टेक।।
तप ही तो माटी को गागर बनाये।
गागर में सागर सहज ही समाये।।
माटी का अर्पण, समर्पण जब होगा।
मुक्ति का अर्पण, वरण तब होगा।।
तुमको...........।।
तप अग्नि के तप से, तू हो जा रे कुन्दन।
तप से ही मिटते हैं, जन्मों के बंधन।।
तप ही तो मुक्ति का अंतिम जतन है।
तुमको...........।।
तप यानि इच्छाओं को शांत करना।
तप यानि आत्मा को निर्मल बनाना।।
तप ही तो आत्मा का सही कथन है।
तुमको...........।।
तप में ही तो आतम का सत्य समाया।
तप ही ने जीव को मोक्ष दिलाया।।

विराग ने विशद सागर बनाया
संत को संत शिरोमणि बनाया।
तप ही तो आत्मा का सही जतन है।
तुमको...........।।

श्रद्धा हमारी भाषा

तर्ज : रहा गर्दियों में मेरे
श्रद्धा हमारी भाषा, निष्ठा हमारा नारा।
गुरुदेव की शरण में, भव का मिले किनारा-2।।
हम गुरु के शिष्य ऐसे, जैसे दिये में बाती।
जलते रहेंगे हर दम, चाहे हो तूफा पानी।।
श्रद्धा हमारी....।।
गुरुवर हमारे ऐसे, जैसे महावीर भगवन्।
श्री कुन्द कुन्द स्वामी, जैसा पवित्र जीवन।।
श्रद्धा हमारी....।।
चरणों का स्पर्श पाकर, हो जाती माटी कुन्दन।
पारस हो आप गुरुवर, हमको बना दो कुन्दन।।
श्रद्धा हमारी....।।
दुखियों का दुख हरते, हरदम खड़े रहेंगे।
हर आँच में जलेंगे, कर्मों से हम लड़ेगे।।
श्रद्धा हमारी....।।
शुद्धोपयोगी गुरुवर, बस एक प्रार्थना है।

बन जाये आप जैसे, ना कुछ और चाहना है।।
श्रद्धा हमारी....।।

कभी धूप तो कभी छांव

सुख दुख दोनों रहते जिसमें जीवन है तो छांव।
कभी धूप तो कभी छांव-2।।
ऊपर वाला पांसा फेंके, नीचे चलते दांव।
कभी धूप तो कभी छांव।।
भले भी दिन आते जगत में, बुरे भी दिन आते
कड़वे मीठे फल करम के, यहाँ सभी पाते
कभी सीधे कभी उल्टे पड़ते, अजब समय के पांव
कभी धूप तो कभी छांव।।
क्या खुशियाँ क्या गम, ये मिलते सब बारी-बारी
मालिक की मर्जी पे, चलती ये दुनियाँ सारी
ध्यान से खेना जग नदियाँ में, वन्दे अपनी नींव।
कभी धूप तो कभी छांव।।

भोले भाले गुरुवर

तर्ज : छोटी छोटी गैया छोटे छोटे ग्वाल
भोले भाले गुरुवर की धीमी-धीमी चाल।
बोल है अनमोल गुरुवर, वाणी है विशाल-2।।
नाही कोई वस्त्र ओढ़े ना ही कोई छाल।
ज्ञान ध्यान तप से काटें कर्मों के जाल।।

भोले भाले.......
सृजनों के बन्धु है, कर्मों के काल।
कर्मों से लड़ने को, पीट रहे ताल।।
भोले भाले.......
गुरुवर की पूजन को भर लाये थाल।
बार-बार चरणों में, करते नत भाल।।
भोले भाले.........
रत्नत्रय के धारी हैं, सिन्धु विशाल।
चरणों में आये, हम छोड़ के जंजाल।।
भोले भाले........

आधुनिक बेटा

नई सदी से मिल रही, दर्द भरी सौगात।
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात।।
अब तो अपना खून भी, करने लगा कमाल।
बोझ समझ माँ-बाप को, घर से रहा निकाल।।
पानी आँखों का मरा, मरी शर्म और लाज।
कहे बहू अब सास से, घर में मेरा राज।।
भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास।
बहन पराई हो गई, साली खासमखास।।
मन्दिर में पूजा करे, घर में करे क्लेश।
बापू तो बोझा लगे, पत्थर लगे गणेश।।

बचे कहाँ अब शेष हैं, दया धरम ईमान।
पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग।
मर जाते फुटपाथ पर, भूखे प्यासे लोग।।
फैला है पाखण्ड का, अन्धकार सब ओर।
पापी करते जागरण, मचा मचा कर शोर।।
पहन मुखौटा धरम का, करते दिन भर पाप।
भण्डारे करते फिरे, घर में भूखा बाप।।

रंग लाग्यो महावीर

रंग लाग्यो महावीर, थारो रंग लाग्यो।
लाग्यो लाग्यो महावीर, थारो रंग लाग्यो।।
थारा दर्शन करवाने म्हारो, भाव जाग्यो,
थारा दर्शन मां सुख अपार, महावीर थारो रंग लाग्यो।।
थारा अभिषेक करवानो महारो भाव जाग्यां,
थारा अभिषेक मां आनन्द अपार, महावीर थारां रंग लाग्यो।।
थारी पूजन करवानो म्हारो भाव जाग्यो,
थारी पूजन की महिमा अपार, महावीर थारों रंग लाग्यो।।
थारी भक्ति करवानो म्हारो भाव जाग्यो
थारी भक्ति मां हर्ष अपार, महावीर थारो रंग लाग्यो।।
थारा रथ निकलवाने म्हारो भाव जाग्यो,
रथ यात्रा मां धर्म प्रभाव, महावीर थारो रंग लाग्यो।।
थारी वाणी सुनवांना म्हारो भाव जाग्यो,

थारी वाणी मां आत्म प्रभाव, महावीर थारो रंग लाग्यो।।

यह धरम है आतम ज्ञानी का

यह धरम है आतम ज्ञानी का, सीमंधर महावीर स्वामी का।
इस धरम का भैया क्या कहना, यह धर्म है वीरों का गहना।।
जय हो जय हो जय हो जय हो जय हो जय।।
यहाँ समयसार का चिन्तन है, यहाँ नियमसार का मंथन है।
यहाँ रहते हैं ज्ञानी मस्ती में, मस्ती है स्व की अस्ति में।।
जय हो......
अस्ति में मस्ती ज्ञानी की, यह बात है भेद विज्ञानी की।
यहाँ झरते हैं झरने आनन्द के, आनन्द ही आनन्द आतम में।।
जय हो......
यहाँ बाहुबली से ध्यानी हुये, यहाँ कुन्द कुन्द से ज्ञानी हुये।
यहाँ वीर प्रभु ने ये बोला, है जैनधर्म ही अनमोला।।
जय हो......

धन्य धन्य आज घड़ी

धन्य धन्य आज घड़ी, कैसी सुखकार है।
सिद्धों का दरबार है, ये सिद्धों का दरबार है।।
खुशियाँ अपार आज, हर दिल में छांई हैं।
दर्शन के हेतु देखो, जनता अकुलाई है।।
चारों ओर देख लो, भीड़ बेशुमार है।
सिद्धों का ....।।

भक्ति से नृत्य गान, कोई है कर रहे।
आत्म सुबोध कर, पापों से डर रहे।।
पल पल पुण्य का, भरे भण्डार है।
सिद्धों का ....।।
जय जय के नांद से, गूंजा आकाश है।
छूटेंगे पाप सब, निश्चय यह आज है।।
देख लो विशद खुला, आज मुक्ति द्वार है।
सिद्धों का ....।।

जिनवाणी मैय्या से

जिनवाणी मैय्या से, बोले आतम लाला,
मैं तो हूँ गोरा मैय्या, हुआ कैसे काला।
बोली जिनवाणी माता, भूल करी भारी,
आत्म अनात्मा में, की है रिश्तेदारी।।
मान कृष्ण लेश्या ने-2, अपना जादू डाला, ओ....
मिथ्या कृष्ण लेश्या ने, अपना जादू डाला, इसीलिये काला।
जिनवाणी............।।
सुमति शुक्ल रानी से, नेहा करे-2
कुमत कृष्ण रानी से, नेहा तजो रे,
काले रंग वाली ने अपना रंग डाला, इसीलिये काला।
जिनवाणी..............।।
सम्यक्त्व साबुन नीर, ज्ञान को बना ले,

चारित्र के घाट पर तू, आ के नहा ले,
अपने को रत्नत्रय से–2, गोरा कर डाला, फिर क्यूँ काला।

रोम रोम निकले

रोम रोम से निकले जिनवर नाम तुम्हारा–2।
ऐसा दो वरदान कि फिर ना पाऊँ जन्म दुबारा।।
रोम रोम से ......
छोड़ ना पाऊँ प्रभुजी, पाँच ठगों का डेरा।
किस विधि पाऊँ, प्रभु जी आखिर दर्शन तेरा।।
भटक ना जाये, ये बालक प्रभुजी, देना आन सहारा।
रोम रोम से ......
दिल से निशदिन प्रभुजी, ज्योति जलाऊँ तेरी?
कब तक मन की होगी, पूरी आशा मेरी।।
इन नैनो से मेरी ज्योति का, देखूँ अजब नजारा।
रोम रोम से ......
कोई ना खाली जाये, तेरे दर से प्रभुजी।
अपनी दया का हाथ तू, सर पर रख दे प्रभुजी।।
तेरे दर पर आये हैं, पाने दीदार तुम्हारा।
रोम रोम से ......
जिन मन्दिर में आओ, जिनवर दर्शन पाओ।
अर्न्तमुख मुद्रा को देखा, आतम दर्शन पाओ।।
जिन दर्शन से निज दर्शन ही, यही लक्ष्य हमारा।

रोम रोम से ......
सब मिल प्रभु गुण गाओ, जीवन सफल बनाये।
आतम ज्योति जगाओ, रत्नत्रय प्रगटाओ।।
जन्म-जन्म तक ना भूलूगा, यह उपकार तुम्हारा।
रोम रोम से ......।।

आज चली प्रभु सवारी

आज चली प्रभु सवारी है, जिनेश्वर की ये सवारी है।
लगता है जैसे ये सिद्ध सवारी है।।
आज चली........
वक्त है खूबसूरत, बड़ा शुभ आज मुहुरत।
देखो क्या खूब सजे हैं, बाबा की मोहनी मूरत।
विराजे प्रभुजी रथ में, भक्त मिल नाचे सारे,
हुए हैं प्रभु के दर्शन, रंगे हैं वीर रंग में, हो.....
इसने ही तो हर संकट में दुनिया तारी है।।
आज चली........
खुशी में सब मिल गाये, इन्द्र ने नृत्य सजाये।
मिल के सब बैण्ड बाजा, मधुर ये तान सुनाये।
लहर केशरिया लाये, सभी के मन हर्षाये,
हाथों में दीप जलाये, दर्श को मन ललचाये।।
आज चली........

भजन

पुद्गल का क्या विश्वासा, जैसे पानी बीच पताशा।
जैसे चमत्कार बिजली का, जैसे इन्द्र धनुष अकाशा।।
झूठा तन धन झूठा यौवन, झूठा है घर वासा।
झूठा ठाठ ठूनों दुनियाँ में, झूठा महल निवासा।।
पुद्गल...........
इक दिन ऐसा होगा लोगों, जंगल होगा वासा।
इस तन ऊपर हल फिर जावेंगे, पशु चरेंगे घासा।।
पुद्गल...........
एक बार श्री जिनवर का, भज ले नाम जरा सा।
श्री गुरु कहे छन एक न भूलो, जब लग घट में सांसा।।
पुद्गल...........

दिगम्बर वेष न्यारा

निर्ग्रंथों का मार्ग, हमको प्राणों से भी प्यारा है-2
दिगम्बर वंश न्यारा है।।
शुद्धात्मा में ही जब लीन होने को, किसी का मन मचलाता है।
तीन कषायों का, तब राग परिणति से, सहज ही पलटता है।
वस्त्र का धागा-2 नहीं फिर उनने तन पर धारा है।
दिगम्बर........
पंच-इन्द्रिय का, विस्तार नहीं जिससे, वह देह ही परिग्रह है।
तन में नहीं तन्मय, है दृष्टि में चिन्मय, शुद्धात्मा ही ग्रह है।।
पर्यायों से पार-2, त्रिकाली ध्रुव का सदा सहारा है।

दिगम्बर........

मूलगुण पालन, जिसका सहज जीवन, निरन्तर स्वयं वंदन।
एक ध्रुव सामान्य, में ही सदा रमते, रत्नत्रय आभूषण।।
निर्विकल्प अनुभव-2, से ही जिन ने निज को शृंगारा है।
दिगम्बर........

आनंद के झरने, प्रदेशों में, निज ध्यान जब धरते हैं।
मोह रिपु क्षण में, तब भस्म हो जाता, श्रेणी जब चढ़ते हैं।।
अन्तर्मुहूर्त में-2, जिनने अनन्त चतुष्टय धारा है।
दिगम्बर........

मन्त्र जपो नवकार

मन्त्र जपो नवकार मनवा, मन्त्र जपो नवकार।
नव पदों के अडसठ अक्षर-2, है सुख के आधार मनवा।।
अरिहन्तों का सुमिरन करले, सिद्ध प्रभु को मन में धर ले,
आचार्य सुखकार मनवा, मन्त्र जपो नवकार,
उपाध्याय को मन में बसा ले, सर्व साधु को शीश नवा ले,
होवे भव से पार, मनवा मंत्र जपो नवकार।
रोग शोक को दूर भगावे, जन्म जरा मृत्यु दोष मिटावे,
सुखी रहे परिवार मनवा, मन्त्र जपो नवकार,
धन हीन सुख संपत्ति पावे , मन वांछित हर काम बनावे,
भव दुख भंजन हार मनवा, मन्त्र जपो नवकार।।

मेरे घर के सामने

मेरे घर के सामने नाथ, तेरा मंदिर बन जाये।
जब खिड़की खोलूँ, तो तेरा दर्शन हो जाये–2।।
जब आरती हो तेरी, मुझे घंटी सुनाई दे,
मुझे रोज सवेरे बाबा, तेरी सूरत दिखाई दे,
सब भजन करे मिलकर, रस कानों में घुल जाये।।
मेरे घर के...........
आते जाते बाबा तुझको, मैं प्रणाम करूँ,
जो मेरे लायक हो, कुछ ऐसा काम करूँ,
तेरी सेवा करने से मेरी, किस्मत खुल जाये।
मेरे घर के...........
तेरी महिमा गाऊँगा, तुझे भूल ना पाऊँगा,
हर शाम सुबह, तेरी माला फेरूँगा
बस प्रभु मेरा तुमसे, यह परिचय हो जाये।
मेरे घर के...........

जिया कब तक उलझेगा

जिया कब तक उलझेगा संसार विकल्पों में।
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में।।
उड़ उड़ कर ये चेतन गति में जाता है।
रागों में लिप्त सदा भव दुःख पाता है।।
ये जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में।
जिया कब तक....................।।

तू कौन कहाँ का है, और क्या है नाम तेरा।
आया किस घर से है, जाना किस गाँव अरे।।
अंतर मुख हो जा तू, सुख और अविकल्पों में।
यह तन तो पुद्गल है, दो दिन का ठाठ अरे।।
कितने भव......
पल भर को भी न कभी, निज आतम ध्याता है।
निज तो न सुहाता है, पर ही मन भाता है।।
यह जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में।
जिया कब तक......
निज आत्म स्वयं लखे, तत्त्वों का कर निर्णय।
मिथ्यात्व छूट जाये, समकित प्रगटै निश्चय।
निज परिणति रमण करे, हो निश्चय रत्नत्रय।
निर्वाण मिले निश्चित, छूटै यह भव दुःखमय।
सुख ज्ञान अनन्त मिले, चिन्मय की गलियों में।।
जिया कब तक......
शुभ अशुभ विभाव तर्ज है, हेय अरे आस्रव।
संवर का साधन ले, चेतन का ले अनुभव।।
शुद्धात्मा का चिन्तन, आनन्द अतुत अनुभव।
कर्मों की पग ध्वनि का, मिट जायेगा कलरव।।
तू सिद्ध स्वयं होगा, पुरुषार्थ स्व कल्पों में।
जिया कब तक.......

यदि अवसर चूका तो भव-भव पछतायेगा।
यह नर भव कठिन महान किस गति में जायेगा।
नर तन भी पाया तो, जिन कुल नहीं पायेगा।
अनगिनत जन्मों में, अनगिनत विकल्पों में।।
कितने भव.....

शाकाहार

तर्ज : आओ बच्चों....

पहुँचा देना स्वर ये कोई, दिल्ली की सरकार तक।
लोकसभा में जाने वाले, नेताओं की कार तक।
रोको मांस निर्यात, रोको मांस निर्यात।।
पशुओं को यदि तुम ना देते, चॉकलेट और गोलियाँ,
और नहीं देने बछड़ों को, प्यारी प्यारी लोरियाँ,
अरे उनको पलने तो दो तुम, केवल सूखी घास पर,
और नीर भी पीने दो तुम, उनको उनकी प्यास पर।।
पहुँचा देना.....
भक्षक जैसे कृत्य करो ना, तुम रक्षक के देश में,
खुलने दो मत वध शाला अब, वीर प्रभु के देश में,
विष्णु के अवतार कन्हैया के उस भारत देश में,
गोकुल में गायें चराई, ग्वालों जैसे भेष में।।
पहुँचा देना......
कहाँ सब मिल नेताओं से, भारत माँ के लाल से,

द्रव्य कमाने की मत सोचो, जीवित पशु की खाल से,
आदमी अच्छे इन पशुओं के एक तुम्ही भगवान से,
शंखनाद तुम आज गुंजा दो, संस्कृति के ही प्यार से।
पहुँचा देना......
कृष्णकी मैय्या, शिव के नंदी, आदिनाथ के बैल को,
काट काटकर बेच रहे हो, मानव के अवशेष को,
अगर यही विनाश रहेगा, जारी अपने देश में,
मिट जायेगी ये सरकार जो, बेचे मांस विदेश में।
पहुँचा देना......
धरती पर भूकम्प आयेगा, चप्पा-चप्पा डोलेगा,
पशुओं का संहार तुम पर, नरक के द्वार खोलेगा,
आगे आकर तुरंत साथियों बंद करो इस निर्यात को,
जीवन देकर हम पशुओं को, रोके इस आधार को।
पहुँचा देना......

क्या तन मांजनारे

क्या तन मांजना रे, इक दिन मिट्टी में मिल जाना।
मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन, मिट्टी का सिरहाना।।
इस तन को तू रोज सजावे, खूब खिलावे, खूब पिलावे।
निशदिन इसकी सेवा करके, सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहिनावे।
अन्त समय में साथ जायेगा, इस भ्रम में न आना।।
क्या तन.....

काल अनन्त गये अब तक, बस इससे प्रीति करो है।
लेकिन इसमें महक रहे, ज्ञायक की शरण न ली है।
ये नहीं मुझमें मैं नहीं इसमें, भेद विज्ञान लगाना।।
क्या तन....
इसी देह को छोड़ सिद्ध प्रभु ने, शाश्वत सुख पाया।
अपने में अपनापन करके, निज वैभव प्रगटाया।
नहीं तोड़ना इस तन को बस, इससे राग हटाना।
क्या तन.....
अब तो स्वानुभूति उर लाओ, ज्ञातादृष्टा सिद्ध बन जाओ।
भेद ज्ञान से सिद्ध हुये है, जीव अनन्तानन्त हुये है।
भेद ज्ञान बिन कभी न होता, मिथ्या भ्रम क्षयकारा।।
क्या तन....

विदाई

तर्ज : बाबुल की दुआएँ

गुरुवर न जाओ छोड़ हमें, तुम बिन कैसे रह पायेंगे।
इस विरह व्यथा को हे गुरुवर, हम सब कैसे सह पायेंगे।।
पाकर सानिध्य तुम्हारा प्रभु, हमको आनन्द अपार मिला।
श्री मुख मण्डल को देख देख, मेरा सपना साकार हुआ।।
सत्संग की बहती धारा में, हम सब भूल ये तुम जाओगे।
इस विरह............
गुरु विशद सागर गुण गाने से, मेरे नैन नीर भर आते हैं।

अब न जाओ मेरे गुरुवर, कैसे तुम बिन रह पायेंगे।
इस विरह........
भक्ति हो मेरे इस तन में, हो भक्ति भाव मेरे मन में।
भक्ति की धारा रग रग में, भक्ति हो पूरे जीवन में।
हम आस लगाये बैठे हैं, प्रभु यह वर तुम से पायेंगे।
इस विरह.....
करुणामय करुणा के सागर, करुणा कर दो हम हैं बालक।
यह आरजू हमारी तुम से है, जल्दी आना मेरे प्रतिपालक।
हम नैन बिछाये बैठे हैं, तुम याद बहुत ही आओगे।।
इस विरह.....

जुआ और चोरी से

जुआ और चोरी से, कि रिश्वत खोरी से।
रहो हमेशा ही दूर, ये रस्ते हैं पाप के।।
जुआ और चोरी से.........
मत कर हिंसा किसी की और झूठ कभी मत बोलो,
और छोड़ो बेईमानी निज अन्तर अखियाँ खोलो,
जाना न रे, नजदीक तुम, कम तोल माप के।।
जुआ और.......
मांस सुरा का खाना और पीना बिल्कुल छोड़ो,
करो शील का पालन, पर नार से नाता तोड़ो,
मन में न आये कभी छल, द्वन्द्व आपके।।

जुआ और.....

इस जनम में ना

इस जनम में ना सही, पर भव में मिलता है,
अपने-अपने कर्मों का, फल सबको मिलता है।
देखो दो हैं भाई, इस दुनियाँ के मेले में
इक दर दर का भिखारी, दूजा महलों में
एक से पैदा हुये, पर भाग्य बदलता है।। अपने अपने....
एक पत्थर है जिसकी पूजा करते है,
एक पत्थर है जिस पर हम चलते हैं,
पर्वत और चट्टान, से इक सा निकलता।। अपने अपने....
एक से दो फूल है, माली के बगीचे में,
एक चढ़ता देवता को, एक चढ़ता अर्थी में
एक सी खुशबू लिये, एक सा खिलता है।। अपने अपने..

मेरे मन के आंगन में

ओ पूनम के चन्दा गुरुवर तुमको अपना मानूँ।
मेरे मन के आंगन में, इस बार खिलो तो जानू।।
हृदय जलाया ज्ञान का दीपक, दूर किया अंधियारा।
रत्नत्रय का बाना पहना, पंच महाव्रत धारा।। मेरे मन...
वन पर्वत और मन्दराओं में, ध्यान मग्न रहते हो,
भीड़ लगी रहेगी भक्तों की, आप घिरे रहते हो।
नैन दर्श बिन हुये बावरे, प्रीत की रीत न जानूँ,

सब को छोड़ अकेले में, तुम मुझे मिलो तो जानूँ।। मेरे मन..
कई बार भेजा न्योता, मेरे इन होठों ने,
तुम कंचन की एक कसौटी, में तो हूँ खोटों में,
सदियों से बीमार हृदय का, रोग नहीं पहचानूँ,
तुम ही हो औषधि विषय की, मुझे मिलो तो जानू। मेरे मन.

देख तेरे पर्याय की हालत

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत

देख तेरे पर्याय की हालत, क्या हो गई भगवान,
कि तू तो गुण अनन्त की खान। कि तुझ में वैभव भरा महान।
चिदानन्द चैतन्यराज क्यों, अपने से अनजान,
कि तूँ तो गुण अनन्त की खान, कि तुझमें वैभव भरा महान।
बड़ा पुण्य अवसर यह आया, श्री जिनवर का दर्शन पाया,
जिनने निज को निज में ध्याया, शाश्वत सुखमय वैभव पाया,
इसलिये श्री जिन कहते हें, कर लो भेद विज्ञान।। कि तूँ..
तन चेतन को भिन्न पिछानों, रत्नत्रय की महिमा जानो,
निज को निज पर को पर मानो, राग भाव से मुक्ति न मानो,
सप्त तत्त्व की यही प्रतीति, होगी मुक्ति महान।। कि तूँ..
अपने में अपना मन लाओ, निर्ग्रन्थों का पथ अपनाओ,
निज स्वभाव में ही जम जाओ, निर्मल सम्यक चारित्र पाओ
सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रमय मुक्ति मार्ग पहिचान।। कि तूँ.

जीवन है पानी की बूँद

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे,
होनी अनहोनी, औ ऽऽ, होनी अनहोनी कब क्या घट जाये रे।
जिसको मानाहै अपना, अपना ही तो है सपना,
जिसके लिये माया जोड़ी, वो क्या तेरा है अपना,
तेरा ही बेटा, हाँ ऽऽ, तेरा ही बेटा, तुझको आग लगाये रे।।
जीवन....
चन्द दिनों का जीवन है, इसमें देखो सुख कम है।
जनम सभी को मालूम है, लेकिन मौत से गाफिल है।
जाने इस तन से, औ ऽऽ, जाने इस तन से, पंछी कब उड़ जाये रे।।
महावीर के चरणों में, जिनवाणी के आंचल में,
पाप तज पूजा कर ले, दाम ना लागे दामन में,
तपी दोपहरी, औ ऽऽ, तपती दोपहरी, सावन बन जाये रे।।
जीवन....
जितना भी कर जाओगे, उतनाही फल पाओगे,
नीम के तरु में, हाँ ऽऽ, नीम के तरु में, आम कहाँ से पाओगे।
जीवन...
संयम तूने लिया नहीं, भोगों को भी तजा नहीं,
निज शरीर की ममता को, मन से तूने तजा नहीं,
मोक्ष के पग पर, औ ऽऽ, मोक्ष के पग पर, कैसे कदम बढ़ाये रे।
दम का क्या भरोसा है, जाने कब निकल जाये,

मुट्ठी बांध के आने वाले, हाथ पसारे जायेगा,
धन दौलत जागीर से, औ ऽऽ, तूने क्या पाया, क्या पायेगा।
जीवन....
आयेगी आयेगी आयेगी
लायेगी लायेगी लायेगी, भक्ति हमारी रंग लायेगी।
छायेगी छायेगी छायेगी, चहूँ दिशा छवि तेरी छायेगी।।
तुम देर ना करना आने में, ना करना दर्श दिखाने में।
भक्तों ने तुम्हें पुकारा है, भक्ति के इसी बहाने से।।
तुम्हें ध्याता रहूँ, गुनगुनाता रहूँ, मेरी नैया है तेरे हवाले।
लायेगी....
दुनिया में ना कोई गुनगुनाता है, बस तेरा ही एक सहारा है।
कश्ती भी टूटी फूटी है, पर कितनी दूर किनारा है।।
आवाज यहाँ, तेरे चरणों की, धूली से टकरायेगी।।
लायेगी.....
ओ साथी रे, तेरे बिना
ओ प्राणी रे, धर्म बिना भी क्या जीना,
पूजन में, भक्ति में, व्रत में और संयम में, चारित्र बिना कुछ कहीना
रागद्वेष में पड़कर मानव, व्यथा ही जनम गंवाये,
क्रोध मानको छोड़ दे मानव, सच्चा भक्त कहलाये,
भक्ति बिना तेरी, मुक्ति बिना तेरी, सब आराधना।।

धर्म बिना....

तू ना किसी का, कोई ना तुम्हारा, झूठा है सब जग सारा,
ये संसार है नकली सोना, देख इसे ना मोहित होना,
मिथ्यात्व छूटेगा, कर्म ये टूटेगा, भव से भी छूटे कभी ना।।
धर्म बिना...

जीव अमर है, चिन्मय शाश्वत्, अजर अमर है इसकी लाली।
जनम मरण के झकझोरों में, टूट ना सकती है यह डाली,
तिल तिल तू जल करके, कल्पना को कर करके,
आश की प्यास बुझी ना। धर्म बिना....

भजन

छोड़ो पर की बातें, पर की बात पुरानी,
निजआतम से शुरु करेंगे, हम तो नई कहानी, हम आतम ज्ञानी।
आओ आतम की, आनन्द की, खान बनाये,
रत्नत्रय से सजा हुआ भगवान दिखाये,
निज आतम ही परमातम है, सुख की वही है कहानी..
मत कर हैरानी, तप देना दानी।। हम आतम ज्ञानी..
कर्म और पापों की झंझट अब तो छोड़ो,
निज की दृष्टि में, मुक्ति से नाता जोड़ो,
समयसार है, नियमसार है, और है माँ जिनवाणी।।
हम आतम....

निज प्रभुता को भूल जगत में अब तक रोये,

जिन शासन पाकर यह अवसर अब क्यों खोये,
गुण अनन्त है, सुख अनंत है, आनंदमय जिन्दगानी।
हम आतम.....
जिन मंदिर में जाकर, आतम ध्यान लगाये,
निज में निज को ध्याकर, परमात्म हो जाये,
यही रीति है, यही नीति है, अंतिम लक्ष्य बखानी।।
हम आतम.....

मैं क्या करूँ नाथ

मैं क्या करूँ नाथ, मुझे कर्मों ने घेरा-2
धर्म पढ़ूँ तो मैं पढ़ नही पाऊँ, सर तो पचाऊँ नाथ फिर भूल जाऊँ।।
हटाओ जी अज्ञान, मुझे कर्मों ने घेरा।। मैं क्या....
सामायिक करूँ तो मुझसे बैठा नहीं जाये,
पैर कमर दुःखे नाथ जिया घबराये,
मैं चाहूँ जी आराम, मुझे कर्मों ने घेरा।। मैं क्या....
माला फेरूँ तो मन घूमने को जाये,
इसको संभालूँ नाथ नींद आ जाये,
कैसे जपूँ तेरा नाम, मुझे कर्मों ने घेरा।। मैं क्या...
उपवास न होवे मुझसे, नीरस ना होवे,
एकासना करूँ तो शाम, भूख लग जाये,
छूटे नहीं स्वाद, मुझे कर्मों ने घेरा।। मैं क्या...

पाप ना छूटे मुझसे पुण्य ना होवे, देने के नाम पर मन दुःखी होवे,
गुरुवर दो आशीष, मुझे कर्मों ने घेरा।। मैं क्या....

भजन

कोठी मजा न देगी, बंगला मजा न देगा,
संयम बिना ज्ञानी ये, जीवन मजा न देगा।
नर तन और पुण्य पाके, कहीं भटक न जाना चेतन,
विषयों में भटक गये तो, बन जाओगे अचेतन
भक्ति बगैर प्राणी, सुख साधन मजा न देगा।। कोठी मजा..
ये सोना और चाँदी, हीरे और मोती,
सब पुण्य के सहारे, जिन भक्ति है संजोती,
षट कर्म के बिना तो, कोई साधन मजा न देगा।। कोठी मजा...
जिनवर की भक्ति करले, भव सिन्धु पार करले,
अब भी जरा संभल ले, संयम को प्राप्त करले,
इसके बगैर ज्ञानी, शिव साधन मजा न देगा।। कोठी मजा...

भजन

मनहर तेरी मूरतिया मस्त हुआ मन मेरा,
तेरा दरश पाया पाया, तेरा दरश पाया, हो...
प्यारा-प्यारा सिंहासन अति, भा रहा भा रहा।
उस पर रूप अनूप तिहारा, छा रहा छा रहा।
पद्मासन अति सोहे रे, नैना निरख अति, चित्त ललचाया-2।।
हो....

प्रभु भक्ति से भव के दुख, मिट जाते हैं, जाते हैं।
पापी तक भी भवसागर, तिर जाते हैं, जाते हैं।
मेरी खोई निधि मुझको मिल गई, मिल गई।
उसको पाकर मन की कलियाँ खिल गईं, खिल गईं।
आशा होगी पूरी रे, आस लगाये सेवक, तेरे दर पे आया-2।।
हो......

जीयरा ओ जीयरा

जीयरा ओ जीयरा, जीयरा तू उड़ के जाओ सम्मेद शिखर में,
भाव सहित वन्दन करो पार्श्व चरण में।।
आज सिद्धों से अपनी बात होके रहेगी,
शुद्ध आतम से मुलकात होके रहेगी,
रंग रहित, राग रहित, भेद रहित जो,
मोह रहित, लोभ रहित, शुद्ध बुद्ध जो। जीयरा ओ...
अहो शाश्वत ये सिद्ध धाम तीर्थराज है,
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्य राज है,
शुरु करे आज यहाँ आत्म साधना,
चतुर्गति में हो कभी जनम मरण ना।। जीयरा ओ.....

ममता की पतवार

ममता की पतवार न तोड़ी, आखिर को दम तोड़ दिया।
एक अनजाने राही ने, शिवपुर का मारग छोड़ दिया।।
नर्क में जिसने भावना भायी, मानुष तन को पाने की।

भेष दिगम्बर धारण करके, मुक्ति पद को पाने की।।
लेकिन देखो आज ये हालात, ममता के दीवाने की।
चेतन होकर जड़ द्रव्यों से, कैसे नाता जोड़ लिया।।
एक अनजाने....
ममता के बन्धन में पड़कर, क्या युग युग तक सोना है।
मोह अरी का सचमुच इस पर, हो गया जादू टोना है।।
चेतन क्या नरतन को पाकर, अब भी यू ही खोना है।
मन का रथ क्यों शिवमार्ग से, कुमार्ग में मोड़ दिया।।
एक अनजाने......
मत खोना दुनियाँ में आकर, ये बस्ती अनजानी है।
जायेगा हर आने वाला, जग की रीति पुरानी है।।
जीवन बन जाता यहाँ पंकज, सब की एक कहानी है।
चेतन निज स्वयं में देखा तो, दुःख का दामन तोड़ दिया।।
एक अनजाने.....

भजन

आगाह अपनी मौत से, हर बशर नहीं।
सामान है सौ बरस का, पल की खबर नहीं।।
सज धज के जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी।
ना सोना काम आयेगा, ना चाँदी काम आयेगी।
पर खोल के पंछी तू पिंजड़ा, छोड़ के उड़ जा।
माया महल के सारे बन्धन, तोड़ के उड़ जा।

धड़कन में जिस दिन मौत तेरी गुन गुनायेगी।। ना सोना..
छोटा सा तू कितने बड़े, अरमान है तेरे।
मिट्टी का तू, सोने के सब समान है तेरे
मिट्टी की काया, मिट्टी में, जिस दिन समायेगी।। ना सोना.

वैराग्यमय

आगे आगे अपनी ही, अर्थी के मैं गाता चलूँ।
सिद्ध नाम सत्य है, अरिहन्त नाम सत्य है।।
पीछे–पीछे दूर तक, दिख रही जो भीड़ है।
पंछी साख से उड़ा, खाली पड़ा नीड़ है।।
सृष्टि सारी देख लो, पर्याय ही असत्य है।। सिद्ध नाम...
जिनका मेरे सुख दुःखों से, कुछ नहीं था वास्ता।
उनके ही कांधों पे मेरा, कट रहा था रास्ता।।
आँख जब मूँदी तो कोई, शत्रु है ना मित्र है।। सिद्ध नाम..
डोरियों से मैं नहीं, बंधा मेरा संस्कार था।
एक कफन पर ही मेरा, रह गया अधिकार था।।
तुम उसे उतारने, जा रहे यह सत्य है।। सिद्ध नाम..
आपके अनुराग को, आज ये क्या हो गया।
जिस क्षण चिता में चढ़ा, महान कैसे हो गया।।
जो अनित्य वो ही नित्य, नित्य ही अनित्य है। सिद्ध नाम..
मैं अयपी गंधदूर, उड़ गई थी फूल में।
लहर थी चली गईं, दूर मृत्यु कुल से।।

सत्य देख हंस रहा, कि जल रहा असत्य है। सिद्ध नाम..
मैं तुम्हारे वंश से, भटका हुआ हूँ देवता।
आत्म तत्त्व को छोड़कर, मैं जगत को देखता।।
ये अनादि काल की, भूल का ही कृत्य है। सिद्ध नाम..

दुनिया पैसा री पुजारी

माया पैसा री, हो ऽऽ माया पैसा री।
दुनियाँ पैसा री पुजारी, पूजा करते नर और नारी,
जग में पाप कमाये भारी, माया पैसा री।। टेक।।
पैसों माँ बाप ने प्यारो, नहीं तो बेटा लागे खारो,
उनने करके घर सूं न्यारो, माया पैसा री।
पैसों पास में पत्नी राजी, नहीं तो ताना देवे भारी,
म्हारा पियर में सुख भारी, माया पैसा री।।
पैसो छप्पन भोग कराये, नहीं तो भूखों ही सो जावे,
उसने कोई नहीं जगावे, माया पैसा री।।
पैसो बुढ़ा ने परणावे, पैसो कन्या ने बिकवाये,
नहीं तो कंवारी ही मर जावे, माया पैसा री।।

भाया कांई जमानो

भाया कांई जमानो आ गयो रे,
धरम करम और लाज शरम ने कलयुग खा गयो रे।।
धरम करम आचार उठाकर, होटल में धर दीना,
जाकर भक्ष, अभक्ष गटागट, मूंडा में धर लीना।। भाया..

मुख्य मुख्य लक्षण छोड़या, जैन धरम का आज,
बिन छाण्यो पाणी पी लेवे, जग न आवे लाज।। भाया...
भगवन दर्शन करके भोजन, करो शास्त्र की सीख,
पर कलयुग का टाबर टूबर, छोड़ चल्या या लीक।। भाया.
नहीं जिन पूजा, नहीं गुरु भक्ति, करे नहीं स्वाध्याय,
अरे बावला सोच जरा यो, जनम अकारथ जाय।। भाया..
निशि भोजन तो बहुत बुरो छै, जाणे सब आ बात,
नया जमाना वाला खावे, दिन हो चाहे रात।। भाया...
शास्त्र पुराण ने मुर्दा समझे, करे धरम की हास,
धार्मिक अध्ययन छोड़ पढ़े अब, नॉवेल और उपन्यास।। भाया..
नया जमाना वाला का गर, यही रहया बरहाल,
कौन करेला ठाकूर जी की, पूजा और प्रक्षाल।। भाया..
मन्दिर सूना रेवेला, ज्यूं मुरदा बिन समसाण,
ठाकुर जी खुद ही गावैला, अपना यश गुणगान।। भाया..
धन दौलत पाकर तू भाया, मस्ती में रहयो झूल,
अन्त समय में रोवेलो, जद याद आवेली भूल।। भाया..
जैन धरम अनमोल रतन छै, बार बार नहीं पाय,
इने पाकर व्यर्थ गमावे, सो मूरख कहलाया।। भाया..

चौमासा

चरणों में झुका है माथा, गुरुवर दे दो एक चौमासा।
गुड़गाँव नगर वालों की गुरुवर, एक यही अभिलाषा।। दे दो...।।

भूल हुई क्या हम से गुरुवर, कब हमने इन्कार किया।
देखो हम अपराधी हैं, हमने यह स्वीकार किया।।
लेकिन तुम हो क्षमा की मूरत, हम दीनन की आशा,
अब के कर लो चौमासा
कहीं न कहीं तो चरण रुकेंगे, चौमासे के लिये गुरुवर
हम क्या इतने दूरभागी हैं, तेरी दया न पाये गुरुवर
नगरी हमारी उपकृत कर दो। चरणों में....
संगत मे जो तेरी बीते, वो पल जीवन निधि बने,
करुणा नेत्र भाव बने, हम दुश्मन के मीत बने,
करमों के हन्ता बने अरहन्ता, ये ही वीर की भाषा रे।
चरणों......

चांदनपुर की धूल

चांदनपुर की धूल, सर लगाने आया हूँ।
अपने बड़े बाबा को मनाने आया हूँ।।
संकटों के डेरे प्रभु, चारों और मेरे है,
मेरी जिन्दगी में तो अन्धेरे ही अन्धेरे हैं,
आशाओं का सूरज मैं जगाने आया हूँ। अपने.....
तेरे दरबार में दया की बरसात है,
मेरी लाज बड़े बाबा तेरे ही तो हाथ है,
जीवन की पहेलियों को सुलझाने आया हूँ।। अपने...
हर प्रश्नों के यहाँ उत्तर मिल जाते हैं,

रोते रोते आते हैं और, हँसते हँसते जाते हैं।
आशाओं का सूरज मैं उगाने आया हूँ।। अपने .....

वीतरागी

तुम तो बने वीतरागी, हमको कब बनाओगे।
काम क्रोध माया लोभ से, हमको कब छुड़ाओगे।।
यू तो जिन्दगी अपनी, वासना में उलझी है,
साधना का उसे उपवन कब हमें दिखाओगे। तुम तो....
कामना की यह मेंहदी रंग क्या लायेगी,
अपने रंग में रंग कर, खुद सा कब बनाओगे। तुम तो....
सुनते हैं तेरे द्वार पे, खाली झोली भरती है,
मेरी भी तो खाली है, कब दया दिखाओगे। तुम तो....
चांद तारों सा तेरा उजला, उजाला है जीवन,
चाँदनी से तुम अपनी, कब हमें सहलाओगे।। तुम तो....

भजन

तर्ज : एक तेरा साथ हमको...
हे वीर, महावीर, तू ही माता, तू ही पिता है,
तू ही विधाता, जप लो सुबह और शाम।।
तू ही वीतरागी, तू ही सर्वज्ञी, तू ही तो तारण हार।।
हे वीर..
तू ही अरिहंता, तू ही सिद्ध भगवन्ता, यही मिला है हमें ज्ञान।
वीर शक्तिदाता, वीर मुक्तिदाता,

वीर बिन हमको, कोई नहीं भाता, जग में वीर महान।
हे वीर....
मूरत प्यारी, छवी प्यारी-2
वीर चरणों में ये दुनिया वारी, मिलता है यहाँ आराम।
हे वीर.....
वीर कणकण में, वीर तन मन में, जल में थल में,
वीर जन जन में, इन्हीं के ही रूप तमाम।
हे वीर.....
जो शरण से आता, खाली ना वो जाता,
तू ही है अरूपी, सत्य स्वरूपी, तू ही सुखमय मंगल धाम।
हे वीर....
तू ही अन्तर्यामी, सबका स्वामी, तेरे चरणों में चारों धाम।
हे वीर....
तू ही सुबह, तू ही शाम, तू ही जग दाता, विश्व विधाता
प्रभु तुझको करूँ प्रणाम। हे वीर...
तू ही बिगाड़े, तू ही संवारे, इस जग के सारे काम।
तू ही पावन, मनभावन, तू ही भक्तों का सूत्रधार,
जप लो सुबह शाम
तू ही जग कर्ता, तू ही जग भर्ता, तेरे आधीन रे तमाम।
जग में साचों तेरो नाम। हे वीर.....
तू ही अरिहनता, दिव्यनीयन्ता, तू ही आनन्दा,

परमानन्दा, तेरे नाम में आराम
तू ही ओमकारा, सर्जन हारा, तू ही आरम्भ,
तू ही वीराम तू ही दिव्वेषा, तू ही अजी लेषा,
तू ही सब जग का रे विश्राम। हे वीर.....
तू ही अविनाशी, पूरन प्रकाशी, तू ही हितकारी,
तू ही सुखकारी, तू ही बिगाड़े, तू ही संवारे,
इस जग के सारे काम। हे वीर.....

भजन

जिन शासन के भक्त हैं हम सब हमको जिस पर नाज है।
तीर्थंकर भगवान हमारे, मोक्ष महल के ताज हैं।।टेक।।
बुद्धी नहीं है हमको भगवन्, फिर भी महिमा गाते हैं।
चंचल है मन भारी मेरा, फिर भी तुमको ध्याते हैं।।
जिन शासन....।।
वीतराग मुद्रा के धारी, धर्म का ज्ञान कराते हैं।
दिव्य देशना देकर जग को, शिव की राह दिखाते हैं।।
जिन शासन....।।
अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, हम सबके सरताज हैं।
नत होकर के चरण कमल में, झुकता सकल समाज है।
जिन शासन....।।

डिग्गी वाले बाबा का

देहरे वाले बाबा के हम, दर्शन करने आये हैं।

बाबा दो आशीष हमें हम, तुम्हें मनाने आये हैं।।टेक।।
जो भी द्वार आपके आता, उसके दुख मिटाते हो।
सुख शान्ति सौभाग्य भव्य को, क्षण में अब दिलाते हो।।
सारे जग के प्राणी जग में, तुमरे गुण को गाते हैं।
बाबा दो.........।।1।।
काले-काले बाबा ने कई , चमत्कार दिखलाए हैं।
सुनकर महिमा आज यहाँ पर, हम भी दौड़े आए हैं।।
दर्श आपका हमने पाया, यह सौभाग्य हमारे हैं।
बाबा दो.........।।2।।
भक्त शरण में आए जो भी, उसके भाग्य संवारे है।
अंजन जैसे पापी जग के, नाथ आपने तारे हैं।।
भक्ति भाव से चरण कमल में, हम भी शीष झुकाएँ हैं।
बाबा दो.........।।3।।
जो भी तुमको मन से ध्याता, उसके कष्ट मिटाते हो।
रोग शोक ग्रस्त दुखियाँ प्राणी, उसको अभय दिलाते हो।।
महिमा सुनकर नाथ तुम्हारी, हम भी द्वारे आये हैं।
बाबा दो.........।।4।।
देहरे वाले बाबा के हम, दर्शन करने आये हैं।
बाबा दो आशीष हमें हम, तुम्हें मनाने आये हैं।।

मुक्तक

निहारे हैं जो भगवान को, उसे हम नैन कहते हैं।

पलट दे जो उजाले को, उसे हम रैन कहते हैं।।
जो बोले प्यार की बातें, उसे हम बैन कहते हैं।
जीत ले इन्द्रियों को जो, उसे हम जैन कहते हैं।।

शूल नहीं होते, तो सुमन सुन्दर नहीं होते।
आग नहीं होती तो, समुन्दर नहीं होते।।
हर बुराई ने, भलाई को छुपा रखा है।
पाप नहीं होते तो, ये मन्दिर नहीं होते।।

हँसना है तो ऐसे हँसो, हँसना बाकी न रहे।
रोना है तो इतने रोओ, रोना बाकी न रहे।।
आना है तो ऐसे आओ, जाना बाकी न रहे।
जाना है तो ऐसे जाओ, आना बाकी न रहे।।

नारी पूछे शूम से कैसे वदन मलीन।
कै तुमरो कुछ गिर गयो कै काहू को दीन।।
ना हमरो कछु गिर गयो ना काहू को दीन।
देतन देखो और को तासे बदन मलीन।।

भजन

जीवराज उड़ के जाओ, पावापुर में।

भाव सहित वंदन करो, वीर चरण में।।
जीयरा.... ओ जीयरा.... जीयरा ओ जीयरा।।टेक।।
आज सिद्धों से अपनी बात होके रहेगी।
शुद्ध आतम से मुलाकात, होके रहेगी।।
रंग रहित, राग रहित, भेद रहित जो।
मोह रहित क्षोभ रहित शुद्धबुद्ध जो।।1।।
ध्रुव अनुपम अचल गति, जिसने पाई है।
सारी उपमाएँ जिनसे, आज शरमाई है।।
अनंत ज्ञान अनंत सुख अनंत वीर्यमय।
अनंत सूक्ष्म नाम रहित अव्याबाधी है।।2।।
अहो शाश्वत सिद्धधाम तीर्थराज है।
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्यराज है।।
शुरु करे आज यहाँ, आत्म साधना।
चतुर्गती में हो कभी जनम मरण न।।3।।
जीयरा.... ओ जीयरा.... जीयरा.. ओ जीयरा।
जीवराज उड़ के जाओ पावापुर में।।
भाव सहित वंदन करो, वीर चरण में।
जीयरा.... ओ जीयरा.... जीयरा.. ओ जीयरा।

भजन

तर्ज : वीरा की वाणी में म्हारो मन डोलो...

प्रभु की भक्ति में म्हारो मन डोले।

करो–करो रे–2, प्रभु की पूजन होले–होले।।
प्रभु की भक्ति में म्हारो मन डोले।।1।।
थारा दर्शन के कारण मैं, बड़ी दूर से आया।
सुन–सुन थारी महिमा भैय्या, दौड़ा–दौड़ा आया।।
करो–करो रे–2, प्रभु की अर्चा होले–होले–2।
प्रभु की भक्ति में म्हारो मन डोले।।2।।
थारे रंग में रंगी चुनरिया, दूजा रंग नहीं भावे।
थारे रंग में ऐसा डूबा, सारी दुनिया आवे।।
गाओ–गाओ रे–2, प्रभु के गुण होले–होले–2।
प्रभु की भक्ति में म्हारो मन डोले।।3।।
जिनमंदिर में सब नर–नारी, थारा ही गुण गावे।
तन से मन से तेरी भक्ति, करके पुण्य कमावे।।
नाचो नाचो रे प्रभु के आगे, होले होले–2।
प्रभु की भक्ति में म्हारो मन डोले।।4।।

भजन

तर्ज : केशरिया–केशरिया

केशरिया–केशरिया आज हमारो रंग केशरिया।
केशरिया–केशरिया आज हमारो मन केशरिया।।टेक।।
हम केशरिया तुम केशरिया, इन्द्र इन्द्राणी है केशरिया।
हमारा कलशा है केशरिया, कलश का धागा है केशरिया।।1।।
पूजन की थाली केशरिया, थाली के चावल केशरिया।

थाली में चन्दन केशरिया, पूजन की पुस्तक केशरिया।।2।।
हमारे प्रभुजी हैं केशरिया, हमारे गुरुजी हैं केशरिया।
माँ जिनवाणी है केशरिया, देव शास्त्र गुरु हैं केशरिया।।3।।
कुन्द कुन्द आचार्य केशरिया, शान्ति सागर आचार्य केशरिया।
विराग सागर है केशरिया, विशद सागर है केशरिया।।4।।
केशरिया-केशरिया, आज हमारो रंग केशरिया।
केशरिया-केशरिया, आज हमारो मन केशरिया।।5।।

जन्म उत्सव

तर्ज : देखो सारी नगरिया...

देखे सारी नगरिया, बनी है दुल्हनिया
देखो जन्मे है वीर राजा
इन्द्र राजा बजाएगा बाजा-2।।टेक।।
बाजत बधाई देखो, सिद्धारथ दरबार में।
गूँज रही नगरी सारी, जिनकी जय-जयकार में।।
खुशियाँ हैं सारी तीनों लोकों में छाई।
कैसा मंगल है अवसर आया।।
इन्द्र राजा बजाएगा बाजा।।1।।
इन्द्र-इन्द्राणी मिल गाये मंगलाचार है
हरष-हरश सब नाचे नर-नार है।।
देवों ने आकर चँवर ढुराएँ।
कैसा मंगल है अवसर आया।।

इन्द्र राजा बजाएगा बाजा।।2।।
देखो सारी नगरिया बनी है दुल्हनियाँ
देखो जन्में है वीर राजा
इन्द्र राजा बजाएगा बाजा।।

णमोकार-णमोकार

णमोकार-णमोकार, महामंत्र णमोकार
नवग्रह, उसके रहे पक्ष में-2, जो जप ले इक बार
णमोकार-णमोकार
श्रावक इसको जप के, मुनि संत हो गये
संतों ने जपा तो, अरिहंत हो गये
अरिहंतों के लिये खुल गया-2, मोक्ष महल का द्वार
णमोकार-णमोकार
नाग और नागिन को पारस ने, पावक से बचाया
णमोकार उनको, उनकी ही, बोली में सुनाया
पद्मावती धरणेन्द्र हुए-2, वे करके चमत्कार
णमोकार-णमोकार
अंजन चोर ने जाप किया, आधा और अधूरा
ताड़म ताड़म कहने पर भी, फल मिला पूरा
मैना सुन्दरी के स्वामी की, काया हुई कुंदन
सेठ सुदर्शन को शूली से, प्राप्त हुआ सिंहासन
सोमा न किया जाप तो-2, विषधर नाग बना मणिहार

णमोकार-णमोकार

भजन

मंत्र जपो नवकार मनवा, मंत्र जपो नवकार
पाँच पदों के पैंतीस अक्षर-2
है सुख के आधार, मनवा, मंत्र जपो नवकार
अरिहंतों का सुमरण कर ले-2, सिद्ध प्रभु का नाम तू जप ले-2
आचार्य सुखकार मनवा, मंत्र जपो नवकार
उपाध्याय को मन में ध्याले-2, सर्व साधु को शीश नवा ले-2
हो जा भव से पार मनवा, मंत्र जपो नवकार
धनहीन सुख सम्पत्ति पावे-2, मन वांछित हर काम बनावे-2
सुखी रहे परिवार मनवा, मंत्र जपो नवकार
रोग शोक को दूर भगावे-2, जन्म जरामृत दोष मिटावे-2
भव दुख भंजन हार मनवा, मंत्र जपो नवकार।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं

मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा

मंत्र णमोकार, हमें प्राणों से प्यारा
है ये वो जहाज-2, जिसने लाखों को तारा,
मंत्र णमोकार, हमें प्राणों से प्यारा।
अरिहंतों को नमन हमारे, अशुभ कर्म का हनन करे-2
सिद्धों के सुमरन से आत्मा, सिद्ध क्षेत्र को गमन करे-2

भव-भव में हो, भव-भव में ना,
भ्रमण दोबारा, मंत्र णमोकार.....
आचार्यों के आचारों से, निर्मल निज आचार करे-2
उपाध्याय का ध्यान धरें हम, संबल का सत्कार करे-2
सर्व साधु को हो, सर्व साधु को नमन हमारा,
मंत्र णमोकार...
सोते उठते चलते-फिरते, इसी मंत्र का जाप करे-2
आप कमायें पाप तो उनका, क्षय भी अपने आप करे-2
इसी महामंत्र का हो, इसी महामंत्र का ले लो सहारा,
मंत्र णमोकार.....

रोम रोम से निकले

रोम-रोम से निकले वीरा, नाम तुम्हारा
वीरा नाम तुम्हारा-2 ऐसा दो वरदान-2
कि फिर ना पाऊँ जनम दुबारा.... रोम रोम से।
तोड़ ना पाऊँ मैं तो, पाँच ठगों का डेरा, हो-2
किस विधि आखिर पाऊँ, प्रभुजी दर्शन तेरा, हो-2
भटक न जाये ये बालक-2 प्रभु आकर देना सहारा
रोम रोम से.....
दिल से निशदिन प्रभुजी, ज्योति जगाऊँ तेरी, हो-2
कब तक मन की होगी, आशा पूरी मेरी, हो-2
इन नैनों से तेरी ज्योति का-2 देखूँ अजब नजारा

रोम रोम से..........
कोई न खाली जाये, तेरे दर से प्रभुजी, हो-2
अपनी दया का हाथ तू, सर पे रख दे प्रभुजी, हो-2
तेरे द्वार पर आये हैं-2 प्रभु पाने दरश तुम्हारा
रोम रोम से......

आदीश्वर झूले पालना

आदीश्वर झूले पालना, निक होले झोटा दीज्यो-2
निक होले झोटा दीज्यो, निक धीरे झोटा दीज्यो,
आदीश्वर झूले पालना....
कौन के घर तेरो जन्म भयो है-2
कौन ने जायो ललना, निक होले झोटा दीज्यो,
आदीश्वर झूले पालना....
नाभिराय घर जनम भयो है-2
माँ मरुदेवी जायो ललना, निक होले झोटा दीज्यो,
आदीश्वर झूले पालना....
काहे को प्रभु बनो रे पालना-2
काहे के लागे फुंदना, निक होले झोटा दीज्यो,
आदीश्वर झूले पालना....
अगर चंदन को बनो रे पालना-2
रेशम के लागे फुंदना, निक होले झोटा दीज्यो,
आदीश्वर झूले पालना....

चलो बुलावा आया है

चलो बुलावा है, बाबा ने बलाया है–2
जय बाबा की, जय बाबा की कहते जाओ
जय बाबा की, जय बाबा की
वीरा, अतिवीरा, श्रीवीरा, तेरा रूप निराला है–2
जिसके अंधेरा हो किस्मत मैं, उसके किया उजाला है–2
हो ओ....जिसके बने तुम संकट मोचक,
जिसने शीश झुकाया है
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है–2।।1।।
महावीरा के मन्दिर में–2
लोग मुरादें पाते हैं
वो रोते रोते आते हैं और हँसते हँसते जाते हैं–2
हो ओ... तूने कण–कण में, क्या अपनी
महिमा को दिखलाया है
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है–2
जय बाबा की....
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है–2।।2।।
दुखिया लाचार हूँ मैं बाबा, दरबार तेरे मैं आया हूँ–2
सब तुमको अर्पण करने मैं, दीप जलाने आया हूँ–2
हो ओ..... रोता आये, हँसता जाये
जो माँगा वो पाया है

चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है–2
जय बाबा की.....
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है–2

एकबार आओ जी महावीरा

एकबार आओ जी, महावीरा म्हारे पावणा–2
थाँकी घणी रे–2, करूँ मैं मनुहार,
घणा ही थाँका लाड़ करां–2
एक बार आओ जी.......
म्हाके घर आवोला, मन मन्दिर में बिठाऊंला–2,
पूजा कर थाँकी भगवन, थाँका ही गुण गाऊंला–2
अब तो दर्शन, अब तो दर्शन दो इक बार
घणा ही थाँका लाड़ करां–2
एक बार आओ जी...
थाँका दर्शन खातिर मैं तो, घणी दूर से आयो जी–2
अब तो दर्शन दे दो प्रभु जी, थाँका ही गुण गायो जी–2
म्हारी विनती, म्हारी विनती सुनो जी जिनराज
घणा ही थाँका लाड़ करां–2
एक बार आओ जी......
हिंसा झूठ चोरी थे, नाम निशान मिटाओ जी–2
सेवक थारा चरणा में अब, झुक–झुक शीश नवायो जी–2
म्हारी अर्जी, म्हारी अर्जी सुनो जी जिनराज

घणा ही थाँका लाड़ करां-2

एक बार आओ जी......

जय महावीर जय महावीर

जय महावीर-जय महावीर, चाँदनपुर के जय महावीर

महावीर की मूँगावर्णी, मूरत मनुहारी-2

कलशा ढालो रे, ढालो रे, ढालो नर नारी

ढालो रे......कलशा ढालो रे

कलशा ढालो, कमा लो रे, पुण्य भारी

चाँदनपुर के वीर की हो गई, उमर हजारी हजारों

कलशा ढालो रे....

न्हवन कराओ माता, त्रिशला के लाल को

त्रिशला के लाल को, सिद्धार्थ के गोपाल को

एक बरस का एक कलश, और आठ दिनों के आठ

एक हजार आठ कलशों से, न्हाये जग सम्राट

ढालो रे...

मोक्ष प्रवासी यूँ भीगे, ज्यूं, कोई संसारी

कलशा ढालो रे......

इतने बरस में पहली बार जी

जायेगा प्रभु का रथ, नदिया के पार जी

नव निर्मित वैशाली पहुँचे, वैशाली के लाल

पाण्डुक शिला पर महावीर का, है मंगल प्रक्षाल

ढालो रे......

पूर्ण हो चुकी राजकुंवर के स्वागत की तैयारी

कलशा ढालो रे....

सरस-दरश पर लो, वीर जिनचन्द का

ले लो आशीष मुनि, विद्यानन्द का

स्वर्ण कलश-नवरतन कलश, हर कलश का है कुछ मोल

पर जिसका अभिषेक करोगे, उसका मोल न तौल

सहस्र सदी महावीर महोत्सव, पर सब हैं बलिहारी

कलशा ढालो रे....

छोटा सा मन्दिर बनाएँगे

छोटा सा मन्दिर बनाएँगे, वीर गुण गाएँगे

वीर गुण गाएँगे, महावीर गुण गाएँगे....

हाथों में लेकर चाँदी के कलशे-2,

प्रभुजी का न्हवन कराएँगे।। वीर गुण....

हाथों में लेकर अष्ट द्रव्य की थाली-2,

प्रभु जी की पूजा कराएँगे। वीर गुण....

हाथों में लेकर चाँदी के दीपक-2,

प्रभु जी की आरती कराएँगे।। वीर गुण....

हाथों में लेकर झांज और मजीरे-2,

प्रभु जी का कीर्तन कराएँगे।। वीर गुण....

रंग लाग्यो महावीर

रंग लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो।।टेक।।
थारां दर्शन करवानु म्हारो भाव जाग्यो।
थारां दर्शन माँ सुख अपार।। महावीर थारो।।
थारी पूजन करवानू म्हारो भाव जाग्यो।
थारी पूजन माँ आनन्द अपार।। महावीर थारो।।
थारी भक्ति करवाना म्हारो भाव जाग्यो।
थारी भक्ति नी महिमा अपार।। महावीर थारो।।
थारी वाणी सुनवा नू म्हारो भाव जाग्यो।
थारी वाणी में अमृत अपार।। महावीर थारो।।

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर, एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया है।।
नहिं दुनिया में कोई मेरा है, आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा है, जग ने मुझको ठुकराया है।।
धन दौलत की कछु चाह नहीं, घरबार छूटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा है तेरे दर्शन की, दुनिया से चित्त घबराया है।।
मेरी बीच भँवर में नैया है, बस तू ही एक खिवैया है।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने, भवसिंधु से पार उतारा है।।
आपस में प्रीत व प्रेम नहीं, प्रभु तुम बिन हमको चैन नहीं।
अब तो आकर दर्शन दो, त्रिलोकीनाथ अकुलाया है।।
जिन धर्म फैलाने को भगवन, कर दिया है तन-मन-धन अर्पण।

पैदल यात्रा संघ अपनाओं, सेवा का भार उठाया है।।

पंखिड़ा तू उड़के जाना

पंखिड़ा तू उड़के जाना, कुण्डलपुर रे।
बड़े बाबा से कहना, तेरे भक्त आ रहे।। पंखिड़ा...
मेरे गाँव के पुजारी भाई, जल्दी आओ रे।
मेरे बाबा के अभिषेक को, जल ले आओ रे।।
पानी लाओ, कपड़ा लाओ, कलशा लाओ रे।
मेरे प्रभु के सुंदर सिर पे कलशा ढारो रे।। पंखिड़ा...
कुण्डलपुर के श्रावक भाई, जल्दी आओ रे।
मेरे बाबा की आरती करने आरती लाओ रे।।
बाति लाओ, घी भी लाओ, कपूर लाओ रे।
बड़े बाबा की मिलकर, सब आरती गाओ रे।। पंखिड़ा...

जहाँ नेमि के चरण पड़े

जहाँ नेमि के चरण पड़े, गिरनार की धरती है।
वो प्रेम पवित्र राजुल, उस पथ पर चलती है।।
उस कोमल काया पर, हल्दी सा रंग चढ़ा।
मेंहदी भी रची ना रची, ना मंगल सूत्र पड़ा।।
पर माँग न भर पाई, यह बात अखरती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े.....।।
सुन पशुओं का क्रन्दन, तोड़े सारे बंधन।
जागा वैराग्य तभी, धारा मुनि तन पावन।।

उस परम वैरागी को, चिर प्रीति उमड़ती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े.....।।
राजुल की आँखों से, झर–झर बहता पानी।
अन्तर में भान करे, प्रभु दर्श की दीवानी।।
मन मन्दिर में किसकी, प्रभु छवि उभरती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े.....।।
नेमि जिस ओर गये, वहीं मेरा ठिकाना है।
जीवनकी यात्रा का, वह पथ अंजाना है।।
नेमि जिस ओर गये, राजुल वहाँ चढ़ती है।
जहाँ नेमी के चरण पड़े.....।।

मधुवन के मन्दिरों में भगवान

मधुवन के मन्दिरों में भगवान बस रहा है।
पारस प्रभु के दर पे, सोना बरस रहा है।।
मधुवन के मंदिरों में.....
अध्यात्म का ये सोना, पारस ने खुद दिया है।
मुनियों ने इस धरा से, निर्वाण पद लिया है।।
सदियों से इस शिखर का, स्वर्णिम सुयश रहा है।
पारस प्रभु के दर पे.....।।
तीर्थंकरों के तप से, पर्वत हुआ है पावन।
कैवल्य रश्मियों से, जीवन हुआ है सावन।।
उस ज्ञानामृत के जल से, पर्वत सरस रहा है।

पारस प्रभु के दर पे.....।।
पर्वत के गर्भ में है, रत्नों का वह खजाना।
जब तक है चाँद-सूरज, होगा नहीं पुराना।।
जन्मा है जैन कुल में, तू क्यूँ तरस रहा है।
पारस प्रभु के दर पे.....।।
नागों को भी है पारस, राजेन्द्र सम बनायें।
उपसर्ग के समय जो, धरणेन्द्र बनके आये।।
ऐसे ही इस धरा पर, निर्वाण पद लिया है।
मधुवन के मन्दिरों में...........।।

साँवरिया पारसनाथ शिखर पर

साँवरिया पारसनाथ शिखर पर भला विराजो जी
भल विराजो जी, ओ बाबा देखो भला विराजो जी...
साँवरिया परसनाथ, शिखर पर भला विराजो जी
वैभव काशी का ठुकराया, राजपाट तोहे बाँध न पाया
तू सम्मेद शिखर पर मुक्ति पाने आया
वे पर्वत तेरे भाया-2, जहाँ भीलो का वासा जी
साँवरिया....
टोंक-टोंक पर ध्वजा विराजे, झांझर घंटा बाजे
चरण कमल जिनवर के, कूट-कूट पर साजे
दूर-दूर से यात्री आवे-2, आनंद मंगल छाया जी
साँवरिया....

झर–झर बहता शीतल नाला,
शान्त करे भव–भव की ज्वाला
तीर्थ नहीं कोई जग में, इतने जिनवर वाला
वंदन करते पूरण होती–2, भक्तजनों की आशा जी
साँवरिया....
हमको अपनी भक्ति का वर दो,
समताभाव से अंतस भर दो
हे पारसमणी भगवन हमको कंचन कर दो
दो आशीष मिट जाये हमारा–2, जन्म जन्म का वासा जी
साँवरिया....

पारस प्यारा लाग्यो

पारस प्यारा लाग्यो, जिनेश्वर प्यारा लाग्यो
थांकी बाकड़ली झाड़या में, रस्तों भूल्यो जी म्हारा पारस जी,
मैं भूल्यो जी म्हारा पारस जी, मैं रस्तों कइयाँ पावाला।
पारस प्यारा लाग्यो......
अब डर लागै छै म्हाने, हर बार पुकारा थाने–2
थारा पर्वत रा जंगल में, सिंह धडूकै जी म्हारा पारस जी
धडूकै जी म्हारा पारस जी, मैं रस्तों कइयां पावाला।
पारस प्यारा लाग्यो......
थे राग द्वेष ने त्यागा, मैं आया भाग्या–भाग्या–2
थांका पर्वत रा भाटा री, ठोकर लागी जी म्हारा पारस जी,

लागी जी म्हारा पारस जी, मैं रस्तो कइयां पावाला।
पारस प्यारा लाग्यो......
मैं जयपुर शहर सूं चाल्या, थांका ऊँचा देखा माल्या-2
थांकी पेड़्या-पेड़्या चढ़्यो प्यारो, लागे जी म्हारा पारस जी,
लागे जी म्हारा पारस जी, मैं रस्तो कइयां पावाला।
पारस प्यारा लाग्यो......
थांका विशाल दर्शन पाया, मैं तन-मन मैं हर्षाया
थांकी चंवरी की शोभा तो प्यारी, लागे जी म्हारा पारस जी
लागे जी म्हारा पारस जी, मैं रस्तो कइयां पावाला।
पारस प्यारा लाग्यो......

हे प्रभु तव अर्चना

हे प्रभु तव अर्चना में भेंट अर्पण क्या करें।
ये है, तन मन और जीवन अब समर्पण क्या करें।।टेक।।
भव की कलियाँ संजोकर, यह पुजारी आया है।
द्रव्य की थाली नहीं, यह दिल में अरमां लाया है।
दे दिया सर्वस्व तुझको, और अर्पण क्या करें।। हे प्रभु..
दिल है एक केशर की प्याली, भाव की केशर भरी।
ज्ञान की ज्योति जलाकर, आरती तेरी करी।
मोह माया त्यागकर हम, आज तव विनती करें।। हे प्रभु..
मैं पुजारी तेरा जिनवर तू है मेरा आशियाँ।
त्याग कर सारे जहाँ को, आ गया तेरे यहाँ।

तार दे इस भव से प्रभुजी, आज सब विनती करें।। हे प्रभु..

भगवान मेरी नैया

भगवान मेरी नैया, भव पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।।टेक।।
हम दीन दुःखी निर्बल, तेरा नाम रटे प्रतिपल।
यह सोच दर्श दोगे, प्रभु आज नहीं तो कल।
जो बाग लगाया है, फूलों से सजा देना।। अब तक...
तुम शान्ति सुधाकर हो, तुम ज्ञान दिवाकर हो।
मम हंस चुगे मोती, तुम मानसरोवर हो।
दो बूँद सुधा रस की, हमको भी पिला देना।। अब तक..
रोकोगे भला कब तक, दर्शन को मुझे तुमसे।
चरणों से लिपट जाऊँ, वृक्षों से लता जैसे।
अब द्वार खड़ा तेरे, मुझे राह दिखा देना।। अब तक....

नाम है तेरा तारण हारा

नाम तुम्हारा तारण हारा, कब तेरा दर्शन होगा।
जिनकी प्रतिमा इतनी सुन्दर, वो कितना सुन्दर होगा।।टेक।।
तुमने तारे लाखों प्राणी, ये संतों की वाणी है।
तेरी छवि पर मेरे भगवन, ये दुनिया दीवानी है।
भाव से तेरी पूजा रचाऊँ, जीवन में मंगल होगा।। नाम है..
सुरनर मुनिवर जिनके चरणों में, निशदिन शीश झुकाते हैं।
जो गाते हैं, प्रभु की महिमा, वो सब कुछ पा जाते हैं।

अपने कष्ट मिटाने को, तेरे चरणों में नमन होगा।। नाम है..
मन की मुरादें लेकर स्वामी, तेरी शरण में आये हैं।
हे जिनवर हम तेरे बालक, तेरे ही गुण गाये हैं।
भव से पार उतरने को, तेरे गीतों का सरगम होगा। नाम है..
थोड़ा ध्यान लगा
थोड़ा ध्यान लगा
थोड़ा ध्यान लगा कि गुरुवर, दौड़े-दौड़े आयेंगे
तुझे गले से लगायेंगे.....
अखियाँ मन की खोल
अखियाँ मन की खोल की तुझको, दर्शन वो करायेंगे...
हैं आदिनाथ जी वो, हैं महावीर भी वो, वही भगवान हैं
मुक्ति की राहों पर, चलना सिखाते वो, धर्म की शान हैं
प्रेम से पुकार....
प्रेम से पुकार, तेरे कर्म वो जलायेंगे...
कृपा की छाया में, बिठायेंगे तुमको, जहाँ तुम जाओगे
उनकी दया दृष्टि, जब-जब पड़ेगी तो, ये भव तिर जाओगे
ऐसा है विश्वास....
ऐसा है विश्वास कि मन में, ज्योति वो जलायेंगे....
ऋषियों ने मुनियों ने, गुरु शिष्य महिमा का, किया गुणगान है
गुरुवर के चरणों में, झुकती सकल सृष्टि झुके भगवान है
महिमा है अपार...

महिमा है अपार, सच की राह वो दिखायेंगे....

वैरागी, ओ सर्वस्व त्यागी

वैरागी, ओ सर्वस्व त्यागी, तुझे हम मिलके मनायेंगे
तेरे आँगन भक्ति भाव की-2, गंगा बहायेंगे
वैरागी, ओ सर्वस्व त्यागी.....
नदिया के पावन नीर में तेरे, भक्तों ने केसर घोली
कंचन कलशों की धार से, खेलेंगे तेरे संग होली
जरा अखियाँ तो खोल, कुछ मुख से तो बोल
हे अगम अडोल, यूँ न भक्ति को तौल, दे दरस अनमोल
तेरे रंग में डूबि के हम, तुझे रंग में डुबायेंगे
वैरागी, ओ सर्वस्व त्यागी.....
श्रवण बेलगोला की धरती, है किनती बड़भागी
दर्शन हेतु यहाँ आते हैं, प्रभु तेरे अनुरागी
जिसने पद रज शीश लगाई, उसकी किस्मत जागी
देव दयालु तू देता है, रिद्धि सिद्धि बिन माँगी
सुखदायक गोमटेश, गणनायक गोमटेश
प्रभु हम भी निर्वाण की पूँजी, तुझसे पायेंगे
वैरागी, ओ सर्वस्व त्यागी........
ओ ऋषभदेव के लाड़ले, पोदनपुर के महाराजा
ओ लाल सुनन्दा मात के, प्रतिमा से बाहर आ जा
तेरा चारित्र महान्, गुण रत्नों की खान

माँगे यही वरदान, जन कल्याण, जय-जय बाहुबली भगवान
हम प्रतिमा वाले का दर्शन, करके जायेंगे
वैरागी, ओ सर्वस्व त्यागी......

काम कोई भी कर नहीं पाया

काम कोई भी कर नहीं पाया, घूम लिया संसार में।
आखिर मेरा काम हुआ, प्रभु के ही दरबार में।।
क्या कहना दरबार का, ये साँचा दरबार है।
शीश झुका के देख जरा, फिर तो बेड़ा पार है।
तेरा संकट दूर करेंगे-2, बाबा पहली बार में।
आखिर मेरा काम हुआ.....
जब-जब मैंने नाम लिया, तब-तब मेरा काम किया।
जब-जब नैया डोली है, प्रभु ने आकर थाम लिया।।
बारह महीने मनती दिवाली-2, अब मेरे परिवार में
आखिर मेरा काम हुआ.....
अब चिन्ता की बात नहीं, खूँटी तान के सोता हूँ
जब भी कोई आफत आये, इनके आगे रोता हूँ
प्रभु का पहरा लगने लागा है-2, अब मेरे परिवार में
आखिर मेरा काम हुआ.....
इसके पाँव पकड़ ले तू, काम तेरा बन जायेगा
इनकी कृपा बनी रही तो, बैठा मौज उड़ायेगा
मनवा रे क्यूँ भटक रहा है-2, जगह-जगह बेकार में

आखिर मेरा काम हुआ.....

घट घट जीवन ज्योति जगा दो

घट-घट जीवन ज्योति जगा दो,
मंगलमय मुनिराज, करूँ मैं वंदना, करूँ मैं वंदना।।
मन वीणा के मधुर स्वरों में,
हर पल गाऊँ गान, करूँ मैं वंदना, करूँ मैं वंदना।।
ओ मेरे गुरुजी, पूजा करूँ मैं भक्ति भाव से,
पलकों के आसन पै, तुमको बिठाऊँ बड़े चाव से,
शांत भाव छवि मन को भाये, हृदय कमल मुस्काये।
करूँ मैं वंदना, करूँ मैं वंदना... घट-घट जीवन
ओ मेरे गुरुवर, नैया पड़ी है, मझधार जी
आप बिना गुरु कौन, लगावे इसे पार जी
छोड़ आपको कित मैं जाऊँ, चरण शरण मिल जाये।
करूँ मैं वंदना, करूँ मैं वंदना.. घट-घट जीवन
ओ अरे गुरुवर जी, सुन लेना अब तो पुकार तुम
अपना बना के गुरुजी, कर देना बेड़ा पार तुम
जैन समाज के भक्त ये सारे, भक्ति सुधा बरसायें
करूँ मैं वंदना, करूँ मैं वंदना... घट-घट जीवन

मेरा आपकी कृपा से

मेरा आपकी कृपा से, सब काम हो रहा है।
करते हो तुम गुरुवर, मेरा नाम हो रहा है।

मेरा आपकी कृपा से.......
पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है।।
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है।।
करते हो तुम गुरुवर.........
तुम साथ हो तो मेरे, किस चीज की कमी है।
किसी और की मुझे अब, दरकार ही नहीं है।।
गुरुवर तेरी दया से, सब आसान हो रहा है।
करते हो तुम गुरुवर.........
मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरे पास कैसे आऊँ।
टूटी हुई वीणा से, गुणगान कैसे गाऊँ।
तेरी प्रेरणा से ही ये कमाल हो रहा है।
करते हो तुम गुरुवर.........

ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है

ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा–2
तीर्थ हमारा, ये जग से न्यारा–2
मधुवन मांही बरसे रे, अमृत की ये धारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा–2
भाव सहित वंदे जो कोई–2,
ताही नरक पशु गति ना होई–2
उनके लिए खुल जाए रे, सीधा स्वर्ग का द्वारा–2

स्वर्ग का द्वारा हो स्वर्ग का द्वारा
उनके लिए खुल जाए रे, सीधा स्वर्ग का द्वारा
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा
जहाँ तीर्थंकर ने, वचन उचारे–2
कोटि–कोटि मुनि मोक्ष पधारे–2
पूज्य परम पद पायो रे, जन्में न दुबारा–2
जन्में न दुबारा वो, जन्में न दुबारा–2
पूज्य परम पद पायो रे, जन्में न दुबारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा
हरे हरे वृक्षों की झूमे डाली–2
समवशरण की रचना निराली–2
पर्वत राज पे शीतल झरना, बहता सुप्यारा–2
बहता सुप्यारा, ये बहता सुप्यारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा
सारे जिनालयों में, ढोक लगाकर–2
कर लो जी स्वीकार प्रभु, ये वन्दन हमारा–2
वन्दन हमारा ये वन्दन हमारा–2
कर लो जी स्वीकार प्रभु, ये वन्दन हमारा–2
ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है, ये तीर्थ हमारा–2

जब तेरी डोली निकाली जायेगी

जब तेरी डोली निकाली जायेगी,

बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।टेक।।
उन हकीमों से यूँ कह दो बोलकर,
जो दवा करते किताबें खोलकर।
ये दावा हरगिज न खाली जायेगी,
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।1।।
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया,
मरते दम लुकमान भी यूँ कह गया।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायेगी,
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।2।।
ये मुसाफिर क्यों पसरता है यहाँ,
यह किराये का मिला तुझको मकां।
कोठरी खाली करा ली जायेगी,
बिन मुहूरत के उठा ली जायगी।।3।।
चेत कर ओ भाई तुम प्रभु को भजो,
मोह रूपी नींद से जल्दी जगो।
आत्मा परमात्मा हो जायेगी,
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।4।।

इतना तो करना स्वामी

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले।
हो सिद्ध सिद्ध मुख में जब प्राण तन से निकले।।टेक।।
सम्मेद शिखर का थल हो, तीर्थंकरों का स्थल हो।

वहाँ ध्यान मेरा अटल हो, जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो...........
नेमी प्रभु का वट हो सिर सोहता मुकुट हो
वैराग्य अति प्रगट हो जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो...........
चम्पपुरी का वन हो जहाँ वासुपूज्य चरण हो
उनके चरण में मन हो जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो...........
कैलाश पावापुरी हो गिरनार सोनागिर हो
सबके चरण में सिर हो जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो...........
णमोकार मंत्र मुख हो जिनवाणी का भी सुख हो
फिर नेक भी ना दुख हो जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो...........
जब प्राण कण्ठ आवे कोई रोग ना सतावे
प्रभु दर्श को दिखावे जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो...........
सम्यक्त्व ज्ञान चारित युक्त आत्मा हो
मिथ्यात्व छूट जावे जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो...........
मेरा ज्ञान में ही मन हो मेरी ध्यान में लगन हो।

हो मैल कुछ ना दिल में जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो..........
समता सुधा को पीकर छोडूँ मैं रागद्वेष
मन शील से रंगा हो जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो..........
इच्छा क्षुधा की होवे जो चाह उस घड़ी में
उनका भी त्याग कर दूँ जब प्राण तन से निकले।।
इतना तो..........
हे नाथ अर्ज करता विनती पे ध्यान दीजै
होवे समाधि पूरी जब प्राण तन निकले।।
इतना तो..........
जब प्राण तन से निकले, सोहं सोहं ही मुख में
जब प्राण तन से निकले, अरहंत सिद्ध मुख में।।
इतना तो..........

म्हारा पदम प्रभुजी

म्हारा पदम प्रभुजी की सुन्दर, मूरत म्हारे मन भाईजी।
वैसाख शुक्लापंचमी तिथि आई, प्रकटे त्रिभुवन राई जी।।टेक।।
रत्न जड़ित सिंहासन सोहे, जहाँ पर आप विराज्याजी।
तीन छत्र थाकां सिर पर सोहे, चौसठ चंवर ढुराया जी।।
म्हारे मन......
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनायाजी।

अष्ट द्रव्य ले थाल सजाकर, पूजा भाव रचाया जी।।
म्हारे मन......
सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि का नीर बनायाजी।
मैना सती ने तुमको ध्याया, पति का कुष्ठ मिटायाजी।।
म्हारे मन......
फैली प्रभु की महिमा भारी, आते नित नरनारी जी।
पुण्य उदय मेरा जो आया, दर्शन कर पाप नसायाजी।।
म्हारे मन......

जरा सो कहणों

जरा सो कहणों म्हारो मान ले तू वीर भज ले।।टेर।।
मुटठी बांध्या आयो रे जगत में हाथ पसांर्या जासी।
दया धर्म री कले कमाई आही आड़ी आसी।।1।।
जरा सो......
मोह माया में झूम रहयो, तू कर रह्यो थारी म्हारी।
ज्ञान धर्म री बात कैवे जद्, लागे थाने खारी।।2।।
जरा सो......
जवानी री अकडाई में, तू टेड़ो टेड़ो चाले।
पर इतनी नहीं छै मालूम, थारे कांई होसी कालै।।3।।
जरा सो......
छोटी-मोटी बणी हवेल्यां, अठे पड़ी रह जासी।
दो गज कफन रो टूकड़ो थारो, आखिर साथ निभासी।।4।।

जरा सो......

तू छै पावणो चार दिना रो, भूल मति ना भाई।
काल काकाजी आवेला, थारो कंठ पकड़ ले जासी।।5।।
जरा सो......

दयालु प्रभु से

दयालु प्रभु से दया माँगते हैं,
अपने दुःखों की दवा माँगते हैं।
नहीं कोई हमसा, अधम और पापी
सत् कर्म हमने ना, किए हैं कदापि
किए नाथ हमने, हैं अपराध भारी
उनकी हृदय से हम, क्षमा माँगते हैं।।
दयालु प्रभु से...........
दुनिया के भोगों की, ना कुछ कामना
स्वर्ग के सुखों की, न कोई चाहना
यहि एक आशा है, बन जाएँ तुम से,
भक्त हम पैसा ना, टका माँगते हैं।।
दयालु प्रभु से..........
प्रभु तेरी भक्ति में, मन ये मगन हो
निज आतम चिंतन की, हर दम लगन हो
मिले सत् समागम, करे आतम चिंतन
वरदान भगवान, सदा माँगते हैं।।

दयालु प्रभु से.......

भजन

आज तो बधाई राजा, नाभि के दरबार जी।
नाभि के दरबार राजा, नाभि के दरबार जी।।
आज तो....
मरूदेवी ने बेटो जायो, जायो ऋषभ कुमार जी।
आयोध्या में उत्सव कीनो, घर–घर मंगलाचार जी।।
आज तो......
घनन घनन घन घंटा बाजे, देव करे जयकार जी।
इन्द्राणी मिल चौक पुरायो, भर–भर मोतियन थाल जी।।
आज तो..........
हाथी दीना घोड़ा दीना, दीना रतन भंडार जी।
नगर सरीखा पट्टन दीना, दीना सब सिंगार जी।।
आज तो.......
तीन लोक के दिनकर, प्रकटे मंगलाचार जी।
जन्मोत्सव की खुशी मनाकर, होवे हर्ष अपार जी।।
आज तो.............

बड़े बाबा झूलें अखियन में

बड़े बाबा झूलें अखियन में, बड़े बाबा झूले अखियन में।
अखियन में मोरे नयनन में–2, बड़े बाबा झूले अखियन में।।
अखियन देखे एक गाँव को, गंभीरी तट ठंठी छाँव को,

एक टीले पर गाय जो जाती, सारा दूध स्वयं दुह जाती।
ग्वाले ने टीला खुदवाया, ग्वाले के कुछ समझ न आया,
महावीर का दर्शन पाया, बाबा का मन्दिर बनवाया।
मनवांछित फल सबने पाया
मोरे मन में ऐसी आये-2, जाय बसूं चाँदनपुर में,
बड़े बाबा.....
इक सेनापति चामुण्डराय, पर्वत पर मन्दिर बनवाय,
बाहुबली का दिगम्बर भेष, बारह वर्ष में हो अभिषेक।
सत्तावन फुट प्रतिमा भारी, अद्भुत रूप से मंगलकारी,
मन बोले कि कलश चढ़ाऊँ, मद को त्यागूँ, पाप नशाऊँ।
मोरे मन में ऐसी आये-2, जाय बसूँ गोमटगिरि में,
बड़े बाबा...
सिद्ध क्षेत्र ये शिखर हमारा, पूजनीय कण-कण सारा,
बीस तीर्थंकर मोक्ष पधारे, हजारों मुनि सिद्ध सिधारे।
गौतम स्वामी गणधर स्वामी, और सभी तीर्थंकर नामी,
मन बोले कि यात्रा जाऊँ, भव जीवन के पाप नशाऊँ
मोरे मन में ऐसी आये-2, जाय बसूं सम्मेद शिखर में।
बड़े बाबा...........
बुन्देलखण्ड में एक गाँव है, कुण्डलपुर श्री जिसका नाम है,
सिद्धक्षेत्र की शोभा भारी, बड़े बाबा की मूरत प्यारी।
एक बार दर्शन जो पाता, बार-बार दर्शन को आता,

इसकी महिमा सबसे न्यारी, पूरण होती इच्छा सारी।
मोरे मन में ऐसी आये-2, जाय बसूं कुण्डलपुर में,
बड़े बाबा.............

ओ जगत के शांति दाता

ओ जगत के शांति दाता, शांति जिनेश्वर, जय हो तेरी।
किसको मैं, अपना कहूँ, कोई नजर आता नहीं।।
इस जहां में आप बिन, कोई मुझे भाता नहीं।
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता, शांति जिनेश्वर जय हो तेरी।।
ओ जगत के.........
तेरी ज्योति से जहाँ में, ज्ञान का दीपक जला।
तेरी अमृत वाणी से ही, राह मुक्ति का मिला।।
शीश चरणों में झुकाता, शांति जिनेश्वर जय हो तेरी।
ओ जगत के.........
मोह माया में फंसा, तुमको भी पहचाना नहीं।
ज्ञान है न ध्यान दिल में, धर्म को जाना नहीं।।
दो सहारा मुक्ति दाता, शांति जिनेश्वर जय हो तेरी।
ओ जगत के.........
बन के सेवक हम खड़े हैं, स्वामी तेरी राह में।
हो कृपा तेरी तो बेड़ा, पार हो संसार में।।
तेरे गुण हम सब हैं गावे, शांति जिनेश्वर जय हो तेरी।
ओ जगत के.........

रंगमा रंगमा रंगमा रे

रंगमा रंगमा रंगमा रे, प्रभु थारा ही रंग में रंग गयो रे-2
आया मंगल दिन, मंगल अवसर-2
भक्ति में थारी में नाच रह्यो रे,
प्रभु थारा ही रंग में रंग गया रे
रंगमा रंगमा..........
गाओ रे गाना आतमराम का-2
आतमदेव बुलाव रह्यो रे,
प्रभु थारा ही रंग में रंग गयो रे
रंगमा रंगमा..........
आतमदेव को अंतर में देखा-2
सुख सरोवर उछाल रह्यो रे,
प्रभु थारा ही रंग में रंग गयो रे
रंगमा रंगमा..........
भाव भरी हम भावना ये भायें-2
आप समान बनाय लीज्यो रे,
प्रभु थारा ही रंग में रंग गयो रे
रंगमा रंगमा..........

नाथ तेरी पूजा

नाथ तेरी पूजा को फल पायो,
मेरे यो निश्चय अब आयो।।टेक।।

मेंढ़क कमल पांखुड़ी ले मुख तो, वीर जिनेश्वर धायो।
श्रेणिक गज के पगतल मुवो, तुरत स्वर्गपद पायो।।
नाथ तेरी..........
मैना सुन्दरी शुभ मन सेती, सिद्धचक्र गुण गायो।
अपने पति को कोढ़ गमायो, गन्धोदक फल पायो।।
नाथ तेरी..........
अष्टापद में भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो।
अष्टद्रव्य से पूजा प्रभुजी, अवधिज्ञान दरशायो।।
नाथ तेरी..........
अंजन जैसे पापी तारे, मेरो मन हुलसायी।
महिमा मोटी नाथ तुम्हारी, मुक्तिपुरी सुख पायो।।
नाथ तेरी..........

मैली चादर ओढ़ के

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ।
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शर्माऊँ।।
मैली चादर.....
तूने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया,
आकर के संसार में मैंने, इसको दाग लगाया,
जन्म-जन्म की मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊँ।
मैली चादर.....
निर्मल वाणी पाकर तुमसे, नाम न तेरा गाया,

नैन मूंदकर हे परमेश्वर, कभी न तुमको ध्याया,
मन वीणा की तारें टूटी, अब क्या गीत सुनाऊँ।
मैली चादर.....
इन पैरों से चलकर तेरे, मन्दिर कभी न आया,
जहाँ-जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश झुकाया,
हे जिनवर मैं हार के आया, अब क्या हार चढ़ाऊँ।
मैली चादर.....

यूँ ही आता रहा

यूँ ही आता रहा, यूँ ही जाता रहा
लख चक्कर चौरासी के खाता रहा-2
खेल में तेरी बचपन कहानी गई,
जोश में होश खोकर जवानी गई।
बाद में गर जिया, बूढ़ा होकर जिया,
जैसे बुझता दिया टिम टिमाता रहा,
यूँ ही आता रहा.........
जब सांसों का धन खत्म होने लगा,
तब कहा मन ने पगले ये सांसों का धन
काहे विषयों कषायों में खोता रहा,
लाख चक्कर चौरासी के खाता रहा
यूँ ही आता रहा.........
संग में तेरे मोटर और बग्घी कहाँ

और नोटों की जोड़ी वो गड्डी कहाँ
ओढ़कर के कफन चल दिया तेरा तन
हाथ खाली रहे जग बुलाता रहा
यूँ ही आता रहा.........
लकड़ियों से चिता को सजाया गया
और ले जाके उस पर लिटाया गया
आग ऐसी लगी आसमां तक गई
आग के ढेर में तन समाता गया
यूँ ही आता रहा.........
गुरु वचन उर धरो, सच्ची श्रद्धा करो,
नित्य दर्शन करो, शुद्ध भोजन करो,
त्याग मिथ्यात्व का भी तुम करो,
ध्यान वैराग्य धर आत्म चिंतन करो
इस तरह जिन्दगी जो बिताता रहा
जग के चक्कर से छुटकारा पाता रहा
यूँ ही आता रहा.........

जीवन है पानी की बूँद

जीवन है पानी की बूँद, कब गिर जाये रे ऽऽ
होनी अनहोनी हो हो, कब क्या घट जाये रे ऽऽ
साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा-लेटा
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास ना आवेगा बेटा

ख्वाबों में तू क्यें हो हो-2, क्यों आनन्द मनाये रे।
जीवन है पानी..........
अर्द्धमृतक सम वृद्धापन, झुकी कमर सुकड़न-2
गोदी में पोता पोती, खोज रहा बचपन-2
यौवन बीते जीवन को हो-हो-2, तू गीत सुनाये रे।
जीवन है पानी..........
हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो रही मस्तानी
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में है ठानी
बेटा बहू सोचे हो-हो-2, डोकरा कब मर जाये रे।
जीवन है पानी..........
चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी बेटा है
चिल्लाता है पानी को, कोई ना पानी देता है
भूखा प्यासा ही हो-हो-2, एक दिन मर जाये रे।
जीवन है पानी..........
जीवन बीता अरगट में, पुण्य पाप की करवट में
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में
तेरा ही बेटा हो-हो-2, तेरा कफन सजाये रे।
जीवन है पानी..........
सिर पर जिसे बिठाया है गोदी में भी खिलाया है
लाड़ प्यार से पाला है सुख की नींद सुलाया है
तेरा ही बेटा हो-हो-2, तुझे आग लगाये रे।

जीवन है पानी..........

जिसकी चिंता कर करके, अपना चैन गंवाता है

देहरी के बाहर हो-हो-2, वो साथ ना जाये रे।

जीवन है पानी..........

शादी करने आये नेमि जी

शादी करने आये नेमीजी, काँकड़ डोरा तोड़ दिया।

तोरण पर आकर प्रभु ने, रथ का मुखड़ा मोड़ दिया।।

देवी देवता देखन आये, मन ही मन मुस्कान रहे।

भोज होगा पशुओं का, देखें तीर्थंकर कैसे सहे।।

रो-रोकर अपनी भाषा में, पशु प्रभु से बात करें।

पशुओं की पुकार सुनी तो, जग से नाता तोड़ लिया।।

तोरण........

पूछा राजुल ने जिनवर, मेरा दोष बता जाओ।

प्रीत लगाकर प्रियतम जी, मत मुझ दुखिया को ठुकराओ।।

तोरण से रथ क्यों मोड़ा है, हे नाथ मुझे समझा जाओ।

क्या कमी है मुझमें जो ये, प्यार भरा दिल तोड़ दिया।।

तोरण..........

प्रेमी बनकर प्रेम से

प्रेमी बनकर प्रेम से, ईश्वर के गुण गाया कर।

मन मन्दिर में गाफिला, झाडू रोज लगाया कर।।टेक।।

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता काम रहा।

इसी तरह बरबाद तू बन्दे होता अपने आप रहा।।
प्रातःकाल नित प्रेम से, सत संगति में जाया कर।
मन मन्दिर में गाफिला.........
दुखिया तेरे पास पड़ा फिर, तूने मौज उड़ायी तो क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तूने रोटी खाई तो क्या।।
पहले सब से पूछ कर, पीछे भोग लगाया कर।
मन मन्दिर में गाफिला.........
नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जनम-जनम के शुभ करमों का, होता जब तक मेल नहीं।।
नर तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर।
मन मन्दिर में गाफिला ....
देख दया उस परमेश्वर की, वेद का जिसने ज्ञान दिया।
सोच समझ ले अपने मन में, कितना है कल्याण किया।।
प्रातःकाल नित प्रेम से, सत संगति में जाया कर।
मन मन्दिर में गाफिला ....

जिस भजन में प्रभु

जिस भजन में प्रभु का नाम न हो,
उस भजन को गाना ना चाहिए-2
जिस घर में कोई सत्कार न हो,
उस घरमें जाना ना चाहिए-2
चाहे बेटा कितना ही प्यारा हो,

उसे सिर पर चढ़ाना ना चाहिए
चाहे बेटी–2 कितनी ही लाड़ली हो,
उसे घर घर घुमाना ना चाहिए।
जिस भजन..........
जिस माँ ने हमको जन्म दिया,
दिल उसका दुखाना ना चाहिए–2
जिस पिता ने हमको पाला है,
उसे कभी सताना ना चाहिए।
जिस भजन ....
चाहे पत्नी कितनी प्यारी हो,
उसे राज बताना न चाहिए
चाहे भैया–2 कितना बैरी हो,
उससे राज छुपाना ना चाहिए।
जिस भजन ....
चाहे कितनी अमीरी आ जाए,
अभिमान दिखाना ना चाहिए–2
चाहे कितनी–2 गरीबी आ जाए,
भगवान को भुलाना ना चाहिए।
जिस भजन ....

चल दिया छोड़ दरबार

चल दिया छोड़ घरबार, कुटुम्ब परिवार।

धार मुनि बाना समझाया वीर न माना।।टेक।।
माता अति रुदन मचाती है, यों बार–बार समझाती है।
बेटा कुछ दिन पीछे वन को जाना।। समझाया।।
बोले माता क्यों रोती है, जो होनहार सो होती है।
उठ गया मेरा इस घर से पानी दाना।।समझाया।।
सिद्धार्थ नृप समझाते यों, बेटा तुम वन को जाते क्यों।
क्या घर में है कुछ कमी हमें बतलाना।। समझाया।।
मेरी है वृद्ध आवस्था ये घर की करे कौन व्यवस्था रे।
ले राजपाट तू सब पर हुक्म चलाना।। समझाया।।
मेरा घर से कुछ काम नहीं, पल भर लूँगा आराम नहीं।
इस सोते हुए जगत को मुझे जगाना।। समझाया।।
यहाँ खून से होली खिलती है, हिंसा की ज्वाला जलती है।
यह दृश्य देखकर मेरा हृदय अकुलाया।। समझाया।।
पशुओं पर खंजर चलते हैं, लाखों यज्ञों में जलते हैं।
कहते हैं इनको मिल जायेगा स्वर्ग विमाना।। समझाया।।
हिंसा में धर्म बताते हैं, वेदों को खोल दिखाते हैं।
वेअक्लों की अक्ल ठिकाने लाना।। समझाया।।
मक्खन अघ के बादल छाये हैं, भू नभ सुमेरू थर्राये हैं।
मैं कैसे भोगूँ भोग पड़ा मस्ताना।। समझाया।।

मनहर तेरी मूरतियाँ

मनहर तेरी मूरतियाँ, मस्त हुआ मन मेरा,

तेरा दर्श पाया पाया, तेरा दर्श पाया।
प्यारा प्यारा सिंहासन अति भा रहा, भा रहा,
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा, छा रहा।
पद्मासन अति सोह रे, नैना निरख अति,
चित्त ललचाया, चाया तेरा दर्श पाया।
प्रभु भक्ति से भव के दुःख मिट जाते हैं, जाते हैं,
पापी तक भी भवसागर से तिर जाते हैं जाते हैं।
शिव पद वो ही पाये रे, चरण शराण में तोरे,
जो जीव आया, पाया, तेरा दर्श पाया।
साँच कहूँ कोई निधि मुझको मिल गई, मिल गई,
उसको पाकर मन की अँखियाँ, खुल गईं, खुल गईं।
आशा पूरी होगी रे, आस लगाये सेवक,
तेरे दर पे आया, आया तेरा दर्श पाया।

हर दम है तैयार तू

हर दम है तैयार तू, पाप कमाने के लिए।
कुछ तो समय निकाल, प्रभु गुण गाने के लिए।।
माँ के गर्भ काल में कॉल किया था, नाम जपूँगा मैं तेरा।
इस झूठी दुनिया में आकर, नाम भूल गया मैं तेरा।
ऋषि मुनि सब आते हैं, समझाने के लिए।।1।।
जब तक तेल दीये में बाती, जगमग-जगमग हो रहा।
जल गया तेल बुझ गयी बाती, ले चल ले चल हो रहा।

चार जने मिल आते हैं, ले जाने के लिए।।2।।
हाड़ जले जैसे सूखी लकड़ी, केश जले जैसे घास रे।
कंचन जैसी काया जल गयी, कोई न आया पास रे।
अपने पराये रोते हैं दिखलाने के लिए।।3।।

जिया कब तक उलझेगा

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में।
कितने भव बीत गये, संकल्प विकल्पों में।।
जिया कब तक.....
कभी जन्म का दुःख झेला, कभी मरण का दुःख पाया।
कभी रोग बुढ़ापे से, पीड़ित हुई यह काया।
पहचान लक्ष्य अब तो, क्यों खोया विकल्पों में।
जिया कब तक.....
भटका चऊ गतियों में, भव भ्रमण अनंत किये,
सुख पाने के खातिर, क्या-क्या नहीं पाप किये।
पापों के फल मिलते, आसूँ और आहों में।।
जिया कब तक.....
विषयों का सुख पाकर, तप संयम को भूला,
ले डूबेगा तुझको, जिस सुख मैं तू फूला।
ये जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में।।
जिया कब तक.....
गौतम से प्रभु कहते, दुर्लभ यह जन्म मिला,

अब ओर न प्रमाद करो, मन को कर लो उजला।
ये कदम न रुक पाये, मुक्ति की राहों में।
जिया कब तक.....

आतम के पंक्षी रे

आतम के पंक्षी रे, तेरा रूप ना जाने कोए
तू ज्ञान स्वभावी रे, तेरा दर्श ना जाने कोए
कह ना सके तू, आत्म कहानी,
रोगों से उलझी, तेरी जवानी रे
मोह ने तेरी कथा लिखी, कर्मों में कलम डुबाय
आतम के पंक्षी रे............
चुपके मिटने वाले रखना,
छिपाके अमृत के प्याले रे
ये संसार असार है पगले,
यहाँ कोई न अपना होय,
तेरा रूप न जाने कोए
आतम के पंक्षी रे.......

विशद सागर नाम हमको

विशद सागर नाम हमको, प्राणों से भी प्यारा है-2।
एक वक्त का भोजन करते, एक वक्त का पानी।।
आ जाये अन्तराय तो भैया, ना भोजन ना पानी।
विशद सागर नाम मेरे, जीने का सहारा है।।

विशद सागर.......

हाथ कमण्डल पीछी लेकर, ईर्या पथ से चलते हैं।

जहाँ जहाँ जाये मुनिवर, ज्ञान के दीपक जलते हैं।।

ऐसे गुरु के चरण कमल में, सौ सौ नमन हमारा है।

विशद सागर....

मनुष्य जनम अनमोल रे

मनुष्य जन्म अनमोल रे, माटी में ना रोल रे,

अब जो मिला है, फिर ना मिलेगा, कभी नहीं, कभी नहीं..

तू सत्संग में जाया कर, गीत प्रभू के गाया कर

शाम-सबेरे बैठ के वन्दे, प्रभू का ध्यान लगाया कर

ना लागे कुछ मोल रे, मिट्टी में.....

तू बुलबुला है पानी का, मत कर मान जवानी का

सोच समझ कर चलना रे वन्दे, पता नहीं जिन्दगानी का

हाँ पता नहीं जिन्दगानी का

सबसे मीठा बोल रे, मिट्टी में ना रोल रे, अब जो मिला..

मतलब का संसार है, इसका ना कोई ऐतवार

संभल संभल कदम रखो ये, फूल नहीं अंगार है,

जिन्दगी बड़ी अनमोल रे, मिट्टी में ना रोल रे......

अब जो मिला है फिर ना मिलेगा, कभी नहीं, कभी नहीं-2।।

मन की आँखें खोल रे मिट्टी में ना रोल रे

अब जो मिला है फिर ना मिलेगा

कभी नहीं कभी नहीं कभ नहीं.......

जय जिनेन्द्र

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिये।
जय जिनेन्द्र बोल कर समस्त पाप धो लिये।।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलते हैं देवता।
अधो मध्य ऊर्ध्वलोक जय जिनेन्द्र बोलता
आप भी जय बोलकर मुख अपना खोलिये।
जय जिनेन्द्र....
भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी है देव जो।
कल्पवासी देवता भी पूजते हैं आपको,
त्रिकाल काल एक स्वर से आप भी जय बोलिये
जय जिनेन्द्र ....
वीतराग के समोशरण में है तिर्यंच भी
भक्ति भाव से सुने दिव्य ध्वनि नाथ की
वे भी वहाँ सबके साथ जय जिनेन्द्र बोलते
जय जिनेन्द्र ....
जिनेन्द्र दिव्य ज्ञान की कथा है जैन भारती
श्रवणकरें जो भव्य जीव, नित उचारे आरती
भारती भी नित वचन से जय जिनेन्द्र बोलती
जय जिनेन्द्र ....
जिनेन्द्र नाम के समान हो वचन ना अन्यथा

श्रवण करें समस्त जीव हर रहे व्यथा-व्यथा
रोग शोक टालने को जय जिनेन्द्र बोलिये।
जय जिनेन्द्र..........

जिन धर्म मार्ग पर चलिए

जिन धर्म मार्ग पर चलिए, नर जीवन में जो सार है।
श्रावक कुल सफल बनाओ, मिलता नहीं बारम्बार है।।
काल अनन्त निगोद बिताया, जनम मरण ही कर पाया।
वर्ष सैकड़ों रहा नारकी, चैन ना एक पल का पाया।।
नरको में सही जो मार है, वर्णन करना दुश्वार है।
श्रावक कुल.......
कितनी बार पशु गति पाई, भव बन्धन दुख खूब सहे।
कीट पतंगा असैनी होकर, वर्ष हजारों मूक रहे।।
क्या इन गतियों से ही प्यार है, या आतम के हित का विचार है।
श्रावक कुल.......
देव मनुष्य यदि हुये कभी तो, राग द्वेष में उलझ गये।
विषय भोग में तृष्णा बढ़ गई, धन वैभव पा फूल गये।।
नर जीवन के ये दिन चार है, फिर वही नरक का द्वार है।
श्रावक कुल.......
निज आतम के बनो पुजारी, परमातम पद पाओगे।
समय गुजरता जाये रे भैया, फिर पीछे पछताओगे।।
हाय कैसा अजब संसार है, दुख साधन से ही प्यार है।

श्रावक कुल.......

सज-धज कर जिस दिन

सज धज कर जिस दिन मोक्ष की वह रानी आयेगी
न चेला काम आयेगा न चेली आयेगी।
जब ध्यान में एकाग्र हो, निज को ही ध्याओगे।
तुम ध्यान अग्नि से कुघाती कर्म जलाओगे।
तब ना कमण्डल ना पीछी साथ जायेगी।
न चेला काम आयेगा.....
जब योग निग्रह, तुम करोगे ध्यान के बल से।
फिर सर्व अघाती कर्म भी जल जायेंगे तप से।
तब मेरी प्यारी काया भी, ये साथ न जायेगी।
न चेला काम आयेगा.....
चाहे तू कितने शिष्य या शिष्या बना लेना।
चाहे तू उनको शास्त्र भी सारे पढ़ा देना।
पर अन्त में जब मृत्यु की बेला आयेगी।
न चेला काम आयेगा.....
भले सब सैन्य धन को, तू अपने पास रख लेना।
कर मंत्र तंत्रादि दवा या अमृत पी लेना।
पर अन्त में मृत्यु की जब बेला आयेगी।
तब ये शक्तियाँ ना टाल पायेगी।
न चेला काम आयेगा.....

मेरा जीवन कोरा कागज

मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया।
जिन्दगी को लख ना पाया यू ही गुजर गया।
मेरा जीवन.......
चन्द दिन की उम्र मैंने, जिन्दगी जानी, जिन्दगी.....
गुरु ने बतलाया बहुत पर, एक ना मानी–2
मौत लेने आई तो मैं, दंग रह गया
मेरा जीवन...........
उड़ना था मुझको गगन में, नापने सागर–2
पंख अपने काट डाले, खुद यहाँ आकर–2
खिलखिलाती जिन्दगी, मिट्टी में कर गया
मेरा जीवन...........
ठोकरे दर–दर की खाते, गम को सह रहा–2
गम के सब सामान दिखते, अपने कह रहा–2
व्यसनों का साथ था, वीरान हो गया
मेरा जीवन...........
जानता तो सब यहाँ था, पर कुछ ना किया–2
भोग विषयों में लिपट कर, मैं यहाँ जीया–2
आपको नहीं जान पाया, पर मैं मर गया
मेरा जीवन...........

गुरुवर ऐसो बसो मेरे दिल में

गुरुवर ऐसो बसो मेरे दिल में कोई देखे ना सुने मेरे मन में..
जैसे मेहन्दी में रंग समाया, वो किसी को नजर ना आया
तुम भी एसो बसो मेरे दिल में, कोई देखे....।।1।।
जैसे फूलों में खुशबू समाया, को किसी को नजर न आयी।
तुम भी ऐसे बसो मेरे दिल में, कोई देखे.....।।2।।
जैसे दही में मक्खन समाया, वो किसी को नजर ना आया।
तुम भी ऐसो बसो मेरे दिल में, कोई देखे........।।3।।
जैसे आत्मा में परमात्मा समाया, वो किसी को नजर ना आया।
तुम भी ऐसा बसो मेरे दिल में, कोई देखे....।।4।।

ना माँगू हीरे मोती

मेरे सिर पर रख दो बाबा, अपने ये दोनों हाथ।
बाबा मुझको दीजिए जनम–जनम का साथ–2।।
देना है तो दीजिए जनम जनम का साथ।
बाबा ....।।
सुना है हमने शरणागत को, अपने गले लगाते हो।
ऐसा हमने क्या माँगा जो, देने से घबराते हो।
चाहे सुख में रखो या दुःख में, बस देते रहना साथ।
बाबा......
तड़प रहे हैं गम की धूप में, प्यार की छाया कर दे तू

बिन मांझी मेरी नाव चले ना, अब पतवार पकड़ ले तू
मेरा रस्ता रोशन कर दे, छायी अधियारी रात।
बाबा..........
कहा है हमसे भक्तों ने तुम, रहम सभी पे करते हो।
हमने ऐसी क्या गलती की, जो तुम नहीं पिघलते हो।
तेरे दर पे आया बाबा, और तेरे चरणों में रखता माथ।
बाबा.....
बिन तुझसे कुछ पाये बाबा, मैं अपने घर ना जाऊँगा।
खाली हाथ जो लौटा अपना, चेहरा किसे दिखाऊँगा।
दाता के संग दीनो की तुझे, रखना होगी लाज।
देना है तो दीजिये.......

मेरी लगी गुरु संग प्रीत

मेरी लगी गुरु संग प्रीत, दुनिया क्या जाने, क्या जाने भई-2,
मुझे मिल गया मन का मीत कि दुनिया क्या जाने।
गुरु ने ऐसा ज्ञान सिखाया, सच की राह पे चलना सिखाया।
अहंकार को दूर हटाया, मोह भरम सब भेद मिटाया।
लागी गुरु चरणन से प्रीत, कि दुनियाँ क्या जाने।।
जो करते जीवन में भलाई, गुरु का प्यार मिलेगा भाई।
जिनक होठों पे सच्चाई, गुरु ने उनसे प्रीत निभाई।
तेरी हार बनेगी जीत, कि दुनिया क्या जाने।।

गुरु मेरे हृदय बस जाओ, रोम-रोम रग-रग में समाओ।
श्वांस-श्वांस को महकाओ, नयनों की पुतली बन जाओ।
मैं गाता रहूँ तेरे गीत, कि दुनिया क्या जाने।।

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पर हमसे, भूल कर भी कोई भूल हो ना।।
दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहे हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना
हम चले ने क रस्ते पे हम से, भूल कर भी कोई भूल हो ना,
इतनी ....
हम ये सोचें किया है अर्पण, फूल खुशियों के बाँटै सभी को
सबका जीवन भी बन जाए मधुवन, अपनी करुणा का जल तू बहा दे
कर दे पावन हर एक मन का कोना, इतनी........

मानव जनम अमोल रे

मानव जन्म अमोल रे, माटी में मत घोल रे।
अब जो मिला है फिर ना मिलेगा कभी नहीं-3 हाँ कभी नहीं-3
तू है बुलबुला पानी का, मत कर गर्व जवानी का।
नेक कमाई कराले रे, भाई पता नहीं जिन्दगानी का।

मीठा सबसे बोल रे, झूठ वचन मत बोल रे।। अब जो...
तू सत्संग में आयाकर गीत प्रभू के गाया कर।
सांझ सबेरे बैठ के बंदे, आतम ध्यान लगाया कर।
नहीं लगता कुछ मोल रे, नरतन ये अनमोल रे।। अब जो..
यं संसार असार है, नहीं इसका एतवार है।
संभल-2 कर कदम धरो तुम, फूल नहीं ये शूल है।
अन्तर के पट खोल रे, मन की आँखें खोल रे।। अब जो..

पंखिडा भाव सहित वंदन करो

पंखिडा भाव सहित वंदन करो,
सम्मेद शिखर में चलो पंखिडा जीवड़ा-2
पंखिड़ा तू उड़ के जाना पावपुरी रे,
वीर प्रभु से कहना तेरे भक्त आये हैं।
पंखिडा ओ पंखिड़ा-2।
मेरे गाँव के भाई जल्दी आओ बेगा आओ रे
मेरे प्रभूजी के लिए भक्ति गीत गाओ रे
पूजा गाओ भावना भाओ गीत गाओ रे
प्रभू जी के लिए सुन्दर मन बनाओ रे।। पंखिडा ....
मेरे गाँव के श्रावक भाई जल्दी आयो रे
वीर प्रभू जी की वाणी को तुम फैलावो रे
जैनम् जयतु शासनम् का नारा गाओ रे

मेरे प्रभु जी की सुन्दर जिनवाणी गाओ रे।। पंखिडा ....
आज सिद्धों से अपनी बात होके रहेगी
शुद्ध आतम से मुलाकात होके रहेगी
राग रहित रोग रहित भेद रहित जो
लोभ रहित मोह रहित शुद्ध बुद्ध जो।। पंखिडा ....

अओनी जिणजी

आओनी आओनी जिणजी–2
ध्यावूं मन से, तन मन से,, दरशन बिन अखियाँ तरसे।
दरशन करने आये जिणजी–2 मत ना देर करिज्यो,
पूजा री थाली मैं ल्याओ, संकट सब हर लिज्यो।
केसर री कटोरी ल्याओ–2 झारी भरके–2, दरशन बिन...
जिणजी थे हो दीपक म्हारा–2 मैं हूँ थारी बाती
ऐसी ज्योति जगा दो, जिसस्यूं मेल घटे दिन राती
थारी हूँ थारो ही रेस्यूं–2 तन मन से, दरशन बिन....
मैं भी थारो भक्त प्रभु जी, सब थारा ही गुण गासी
भूल चूक सब माफ करिज्यो, थे हो शिवपुर वासी
कदस्यूं खड़ो बुलाऊं थाने–2, आयो चल के दरशन बिन...

मोक्ष पद मिलता है धीरे–धीरे

मोक्ष पद मिलता है धीरे–धीरे–2

मन्दिर जाऊँ दर्शन पाऊँ, श्रद्धान बढ़ता है धीरे–धीरे। मोक्ष..
इच्छा रोकूं, संयम धारूं, तपस्या बढ़ती है धीरे–धीरे। मोक्ष.
पापों को छोडूं व्यसनों को त्यागूँ शांति मिलती है धीरे–धीरे। मोक्ष..
स्वाध्याय करूं ज्ञान को पाऊँ, चारित्र बढ़ता है धीरे–धीरे। मोक्ष..
विषयों को त्यागूं, दीक्षा धारूँ, निर्वाण मिलता है धीरे–धीरे। मोक्ष..
परिग्रह छोडूं, दीक्षा व्रतों को धारूं, करम झड़ते हैं धीरे–धीरे।मोक्ष..
गुरु चरणों की सेवा करके, पुण्य मिलता है धीरे–धीरे। मोक्ष..
सब जीवों में, क्षमा धारकर, शिवपुर पहुँचू धीरे–धीरे। मोक्ष..

दुनियाँ पैसा री पुजारी

दुनियाँ पैसा री पुजारी, पूजा करते नर और नारी।
जग में पाप कमावे भारी, माया पैसा री हो माया पैसारी।
पैसा पास में पत्नी राजी, नहीं तो ताना देवे भारी
कैहेवे पीहर में सुख भारी, माया पैसा री...
पैसे मात पिता ने प्यारों, नहीं तो ताना देवे भारी
उसको घरसे कर दे न्यारो, माया पैसा री.....
पैसा परदेशा ले जावे, नहीं तो गलियाँ गोता खावे,
उसको पागल कह बतलावे, माया पैसा री.....
पैसा छप्पन भोग लगावे, नहीं तो भूखों ही मर जावे,
उसको कोई नहीं जगावे, माया पैसा री......
पैसा बूढ़ ने परणावे, पैसा कन्या ने बिकवावे

नहीं तो कुँवारी ही मर जावे, माया पैसा री.....
पैसा बिन माता मुख मोड़े, पिता देख करम ने फोड़े
घर में झगड़ा टंटा होवे, माया पैसा री.......
पैसा से नर पूजो जावे, नहीं तो याद कभी ना आवे,
उस को सारी जग ठुकरावे, माया पैसा री.......

जिनवर का दर्शन सुहाना

जिनवर का दर्शन सुहाना लगता है,
चरणों में वन्दन सुहाना लगता है।
पल भर में कैस बदलते हैं रिश्ते,
संयम का संगम सुहाना लगता है।।
भक्त चरणों में नमन करते यहाँ आकर,
माँगते जो भी वही, पाते यहाँ आकर।
मुश्किल-मुश्किल तुमसे दूर जाना लगता है,
चरणों में..........।।
एक दो दस बीस क्या, लाखों यहाँ आते,
आपके कर दर्शन जीवन धन्य कर जाते।
चरणों-चरणों में सबको ठिकाना मिलता है,
चरणों में..............।।
मोक्ष पथ को भक्ति से तुम, कर रहे रोशन,
भव्य प्राणी कर रहे अपना सफल जीवन।
मन हर सबको ये, बताना लगता है,

चरणों में......।।

ऐ पारस तेरे वन्दे हम

ऐ पारस तेरे वन्दे हम, जो हो दुनिया पे तेरे करम।
हर बाधा मिटे, सारे संकट कटे, करें तेरा ही गुणगान हम।।
आई संकट की भारी घड़ी, कैस पाँव में बेड़ी पड़ी।
बाबा तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा, तेरी कृपा से मुश्किल टले।
आये दर्शन को तेरे हम, करे शत्-शत् तुमको नमन।।1।।
हर बाधा कटे..........
है शिखर जी पावन तेरा धाम, तू ही पूरे करे बिगड़े काम।
लगी भक्तों की भीड़, है दर्श को अधीर, सुनाज ग में बड़ा तेरा नाम
आये लेके भक्त लगन, ले लो बाबा तुम अपनी शरण।।2।।
हर बाधा कटे...........

भाया कांई जमानो आ गयो रे

भाया कांई जमानो आ गयो रे।
धरम, करम और लाज शरम ने, कलयुग खा गयो रे।।टेक।।
भाया कांई.....
धरम, करम, आचार उठाकर, होटल में धर दीना।
जाकर भक्ष, अभक्ष गटागट मुँड़ा में धर लीना।।1।।
भाया कांई....
मुख्य-मुख्य लक्षण भी छोड्या, जैन धर्म का आज

बिन छाण्यों पाणी पी लेवे, जरा न आवे लाज।।2।।
भाया कांई....
भगवन दर्शन करके भोजन, करो शास्त्र की सीख।
पर कलयुग का टाबर, टूबर छोड़ चाल्या या लीक।।3।।
भाया कांई....
नहीं जिन पूजा, नहीं गुरु भक्ति, करे नहीं स्वाध्याय।
अरे बावला सोच जरा यो, जनम अकारथ जाय।।4।।
भाया कांई....
जैन धर्म अनमोल रतन है, बार-बार नहीं पाय।
ईने पाकर व्यर्थ गवायें, सो मूरख कहलाय।।5।।
भाया कांई....

जीवन के किसी भी पल में

जीवन के किसी भी पल में, वैराग्य उपज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है।।
कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी।
बिन कारण दीक्षा लेता, वो पूर्व जनम का त्यागी।।
निर्ग्रंथ साधु ही इतने, सद्गुण से सज सकता है।।1।।
संसार में रहकर प्राणी........
आत्मा तो अजर अमर है, हम आयु गिने इस तन की।
वैसा ही जीवन बनता, जैसी धारा चिंतन की।।
वहीं सबको समझा पाता, जो स्वयं समझ सकता है।।2।।

संसार में रहकर प्राणी......
शास्त्रों में सुने थे जैसे, वैसे ही देखे गुरुवर।
तेजस्वी परम तपस्वी, उपकारी विशदसागर।।
जिनकी मृदु वाणी सुनकर, हर प्रश्न सुलझ सकता है।।3।।
संसार में रहकर प्राणी......
जीवन के किसी भी पल में, वैराग्य उपज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है।।

मैना सुन्दरी कहे पिता से

मैना सुन्दरी कहे पिता से, भाग्य उदय जब जायेगा।
कोढ़ी पति जो दिया आपने, काम देव बन जायेगा।।टेक।।
बोले पिता एक दिन बेटी से, किसके भाग्य का खाती हो।
मैना बोली मीठे बेना, सच्ची बात बताती हूँ।।
जो सद्कर्म किये थे मैंने, उसका ही फल पाती हूँ।
अपने सद्कर्मों के बल पर, हर दुख सुख बन जायेगा।।1।।
कोढ़ी पिता ने दंभी होकर, कोढ़ का रोगी बुलवाया।
प्राण से प्यारी मैना का फिर, ब्याह उसी से रचवाया।।
सागर रोया रोई नगरिया, पर्वत का दिल थर्राया।
आई विदाई की बेला तो, फिर बाप का दिल भी भर आया।।
मेरी कहानी जो भी सुनेगा, नफरत ही कर पायेगा।।2।।
तुमने मेरे दुख में मैना, अपना फर्ज निभाया है।
कल क्या होगा किसने जाना, कर्म वही कहलाता है।

शाम को राजा बनने वाले, सुबह हो वन को जाते हैं।
मेरी किस्मत में सुख होगा, दुख ही सुख बन जायेगा।
कोढ़ी पति जो दिया आपने, काम देव बन जायेगा।।3।।

कितना प्यारा तेरा द्वारा

कितना प्यारा तेरा द्वारा, यही बिताऊँ जीवन सारा।
तेरी दरश की लगन से,
हमें आना पड़ेगा, तेरे दर पे दुबारा-2।।टेक।।
शान्त छवि मूरत तेरी, महिमा अपरम्पार।
मैं क्या इसको गा सकूँ, गाता है संसार।।
पापी भी यदि ध्यान लगाये, भव-भव के संकट कट जाए।
अंजन को भी तारा, हमें....।।1।।
राजा राणा छत्रपति, हथियन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार।।
कितनी सुन्दर काया तेरी, जलकर हो जाएगी ढेरी,
तूने कभी न विचार, हमें....।।2।।
तुमको पूजै सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरे भयो, करन लाग्यो तुम सेव।
प्रभु चरणों में ध्यान लगा ले, चित आत्म में तू रंग जारे।
नरतन मिले न दुबारा हमें....।।3।।

पलना ये रत्नों वाला

पलना ये रत्नों वाला, रेशम की डोरी वाला,

पलने में झूले भगवान, त्रिभुवन भी उनपे कुर्बान।।टेक।।
सोना ना चाँदी माँगू, हीरा ना हार माँगू,
चरणों में प्रभु रहकर, भक्ति अपार माँगू,
बिगड़ी बनाई सबकी, बिगड़ी बना दो मेरी,
कहना प्रभु जी मेरा मान, त्रिभुवन भी....।।1।।
आये कहाँ से भगवन, मनमोहक रूप लेके,
सबको लुभाने वाला, मन को भाने वाला।
त्रिभुवन के तुम हो स्वामी, तुम ही हो अर्न्तयामी,
सबसे बड़े हो प्रभु महान, त्रिभुवन भी.....।।2।।
इन्द्र भी आये देखो, सब साथ लेके,
चरणों में अपनी सारी, निधियाँ भी वार करके
खुद सा बना दो भगवन, मोक्ष दिला दो भगवन,
चरणों में दे दो स्थान, त्रिभुवन भी....।।3।।

मेरी सांसों में तू है समाया

मेरी साँसों में तू है समाया, मेरा जीवन तो है तेरा साया।
तेरी पूजा करूँ में तो हर दम, ये है मेरे करम, द्वारे आये हैं हम
दे दे अपनी शरण दे दे अपनी शरण-2।।टेक।।
सुबह शाम चरणों में, दिये हम जलाये,
देखें जहाँ भी देखें, तुझको ही पाएँ,
इन लबों पे तेरा, बस तेरा नाम हो-2
भक्ति दिल से कभी ना हो कम। ये है मेरे करम..।।1।।

ये दिल नहीं है मन्दिर है तेरा, इसमें सदा रहे, तेरा बसेरा
खुशबुओं से तेरी, जग महकता रहे-2
आए जाए भले कोई मौसम। ये है मेरे करम..।।2।।

चाल चलो जिन मन्दिर में

चाल चलो जिन मन्दिर में, जहाँ जय बाबा की होरी छै। चाल चलो...।।टेक।।

उन भक्तों के करम फूट गए, जो मोह माया में फँसते हैं।
माया उनको छोड़ गई तो, मारम मारी होरी छै।। चाल चलो..।।1।।

करम फूट गए उन श्रावकों के, जो षट्आवश्यक ना पाले हैं।
नरक गति में चले गए तो, खींचा तानी होरी छै।। चाल चलो...।।2।।

करम फूट गए उन जैनी के, जो मन्दिर ना आवें छै।
भवसागर में लटक गए तो, खींचा तानी होरी छै।। चाल चलो..।।3।।

करम फूट गए उन भक्तों के, जो मन्दिर में राग करे हैं।
कर्म का डंडा पड़ गया तो, भागम भागी होरी छै।। चाल चलो..।।4।।

भाग्य खोल दो उन भक्तों के, जो कि बिल्कुल निर्धन हैं।
उनको धन मिल गया तो, तेरी जय-जयकार लगायेंगे।।
चाल चलो.।।5।।

रोते रोते में निकल गई

रोते-रोते में निकल गई सारी जिन्दगी।
सारी जिन्दगी हो तेरी प्यारी जिन्दगी।
बोझा ढोने में निकल गई सारी जिन्दगी।।टेक।।
जन्म लेते ही इस धरती पर, तूने रूदन मचाया।
आँखें भी ना खुलने पायीं, भूख-भूख चिल्लाया।।
हो रोते-रोते में...।।1।।
खेलकूद में बचपन बीता, यौवन पर बौराया।
धर्म कर्म का मर्म ना जाना, भोगों में भरमाया।।
भोगों भोगों में निकल...।।2।।
धीरे-धीरे बढ़ा-बुढ़ापा, डगमग डोले काया।
सबके सब रोगों ने देखा, डेरा खूब जमाया।।
रोगों-रोगों में निकल गई सारी जिन्दगी...।।3।।
जिसको तू अपना समझे था, वह दे बैठा धोखा।
प्राण गए फिर चल जाएगा, ये माटी का खोका।।
खोका ढोने में निकल गई...।।4।।

मेरे दोनों हाथों में ऐसी लकीर

मेरे दोनों हाथों में ऐसी लकीर है
बाबा से मिलन होगा मेरी तकदीर है।
लिखा है ऐसा लेख, भैय्या लिखा है ऐसा लेख-2।।टेक।।
किस्मत का लिखा कोई, मिटा नहीं पाएगा-2,

मिलेंगे कहाँ वो कैसे, समय ही बताएगा–2,
हाथों में उल्लेख इसका, हाथों में उल्लेख–2।।
लिखा है..।।1।।
लिखता है लिखने वाला, कर्मों का लेखा–2
लकीरों में लिखी है ये, कर्मों की रेखा–2
इसमें मीन न मेख भैय्या–2।। लिखा है...।।2।।
मैंने तो किया है खुद को, इनके हवाले–2,
यही दयावान दानी, मुझको सम्भाले–2
उसने खेंची रेखा और भैय्या–2।। लिखा है..।।3।।

हमको बुलाना हर साल बाबा

हमको बुलाना हर साल बाबा,
रखना हमारा ख्याल बाबा। हमें ना भुलाना बाबा–2,
तुम्हीं ही हो सबसे दयालु बाबा, रखना...।।टेक।।
भजनों से आया तुमको रिझाने, मधुवन के मालिक,
मेरे साहिबा–2।
तीर्थंकराय नमोस्तुते–2,
हमको भी कर दे निहाल बाबा।।1।।
रखना...।।
जब–जब भी तेरे मन्दिर में आया, तकदीर मेरी बदलती रही–2।
तीर्थंकराय नमोस्तुते–2, करो सब को मालामाल बाबा।।2।।
रखना....।।

चाहे तु जिसको राजा बना दे, तेरी कृपा से सब कुछ मिले-2
तीर्थंकराय नमोस्तुते-2, तेरी दूजी ना कोई मिसाल बाबा।।3।।
रखना...।।

ढोल बाजा के बोल बाबा मेरा है

ढोल बजाके बोल बाबा मेरा है।
जोर-जोर से बोल बाबा मेरा है।।टेक।।

कोई कहे काला, कोई कहे गोरा।
बाबा है चकोर, बाबा मेरा है।।
जोर-जोर.........।।1।।

कोई कहे मोटा, कोई कहे पतला।
बाबा गोल मटोल, कि बाबा मेरा है।।
जोर-जोर.........।।2।।

कोई कहे महँगा, कोई कहे सस्ता।
बाबा है बेतोल, बाबा मेरा है।।
जोर-जोर.........।।3।।

कोई कहे पूरब, कोई कहे पश्चिम,
कोई कहे उत्तर, कोई कहे दक्षिण।
बाबा है चहुँ और कि बाबा मेरा है।।
जोर-जोर.........।।4।।

कोई कहे हीरा, कोई कहे मोती।
बाबा है अनमोल, बाबा मेरा है।।

जोर-जोर.........।।5।।

हम भूल जाए रे घर द्वार

हम भूल जाए रे घर द्वार मगर गुरु द्वार नहीं भूले।
गुरु जीवन के आधार-मगर उपकार नहीं भूले।।
जब शिष्य नहीं चल पाता है, तब गुरु ही उसे चलाते है।
वह ठोकर खा गिर जाता है, तब गुरु ही उसे उठाते हैं।।
भव से गुरु करते पार, नहीं यह शिष्य कभी भूले।
हम......।।1।।
गुरु के बिन जीवन शुरु नहीं, गुरु ही शुभ फूल खिलाते हैं।
गुरु ब्रह्मा है गुरु विष्णु है, गुरु ही महेश कहलाते हैं।।
गुरु देते जीवन सार, यहीं वो बात न भूले।
हम.....।।2।।
विशद गुरु ज्ञान प्रदाता है, गुरु ही सम्यक्त्व विधाता है।
गुरु माता-पिता है भ्राता है, गुरु मुक्ति मार्ग प्रदाता है।।
गुरु है जीवन के द्वार, नहीं शिष्य राह कभी भूले।
हम.....।।3।।
गुरु ही सतधर्म बताते हैं, गुरु किस्मत नई बनाते हैं।
गुरु देव जगत के सूरज हैं, जो अन्तर ज्योति जलाते हैं।।
गुरु ज्योति पुंज के किरदार, नहीं यह बात कभी भूले।
हम.....।।4।।
गुरु के चरण हृदय में हो, मम हृदय रहे गुरु चरणों में।

दो मरण समाधि हे गुरुवर, मैं हूँ अर्पण चरणों में।।
कर दो मेरा उद्धार, नहीं उपकार कभी भूले।
हम.....।।5।।

हम वन्दन करते हैं

हम वंदन करते हैं, अभिनन्दन करते हैं।
प्रभू सा बन जाने को, प्रभु दर्शन करते हैं।।
प्रभू शरण में आने को, प्रभू वाणी सुनते हैं।
बोलो आदिनाथ की जय जय जय
बोलो शान्तिनाथ की जाय जय जय
बोलो पार्श्वनाथ की जय जय जय
हम करते जय जयकार, तेरा वंदन बारम्बार
तेरा वंदन बारम्बार, तेरा सुमरन बारम्बार।
बोलो महावीर की जय जय जय।।टेक।।
जीवन का करो सत्कार, संयम का दो उपहार
खुल जायेगा शिवद्वार, संयम कर लो स्वीकार
बोलो विराग सागर की जय जय जय
बोलो विशद सागर की जय जय जय।।

मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।टेक।।
क्या साधु क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,

प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्ज कहानी।
अर्न्तयामी अर्न्तलेखा, सबका यही लगाता।
मेरे दाता...।।1।।
बड़े-बड़े कानून प्रभू के, बड़ी-बड़ी मार्यादा।
किसी को कौड़ी कम नहीं मिलती, मिले ना पाई ज्यादा।
इसीलिए प्रभु दोनों जग का, जगपति कहलाता।
मेरे दाता...।।2।।
चले ना उसके आगे रिश्वत, चले नहीं चालाकी,
उसकी लेन देन की बन्दे, रीत बड़ी है बाकी।
समझदार तो चुप रह जाता, मूरख शोर मचाता।
मेरे दाता...।।3।।
उज्ज्वल करनी कर ले वन्दे, करम ना करियो काला,
लाख आँख से देख रहा है, तुझको देखने वाला।।
उसकी तेज नजर से बन्दे, कोई नहीं बच पाता।
मेरे दाता...।।4।।

सागर से भी गहरा वंदे गुरुवर

सागर से भी गहरा वंदे गुरुदेव का प्यार है।
देख लगाकर गोता इसमें, तेरा बेड़ा पार है।।टेक।।
भवसागर में एक दिन तेरी, जीवन नैय्या डूबेगी।
खेते-खेते एक दिन तेरी, ये पतवार भी टूटेगी।।
जाएगी उस पार ये कैसे, चारों ओर अन्धकार है-2। देख..।।1।।

सौंप दे नैय्या गुरुदेव को, वो ही पार लगा देंगे।
पैर पकड़ ले जाकर इनके, सोये भाग्य जगा देंगे।
पापी से भी पापी तक को, करते न इंकार है-2। देख....।।2।।
सन्त समागम हरि कथा भी, गुरु कृपा से पाओगे।
खुद आयेंगे वीर प्रभु, गुरु का आशीष पाओगे।
बन्दे बिन गुरु कृपा के तेरी, जिन्दगी बेकार है-2। देख...।।3।।

करता रहूँ गुणगान

करता रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान।
तेरा नाम लेते-लेते, इस तन से निकले प्राण।।टेक।।
तेरी दया से मेरे भगवन, मैंने ये नर तन पाया,
तेरी सेवा में बाधाएँ टाले, जग की ये मोह माया।
फिर भी ये अरज करता हूँ, हो सके तो देना ध्यान।।
मुझे...।।1।।
सोमा सती द्रोपदी जैसी, दुःख सहने की शक्ति दो,
विचलित ना हो पथ से भगवन, मुझमें ऐसी शक्ति दो।
तेरे चरणों में ही बीते, इस जीवन की हर शाम। मुझे....।।2।।
मेरे मन की इच्छा मेरे, मन ही मन रह जाएँ,
क्या कब कौन किस घड़ी मेरा, काल बुलावा आ जाए।
मेरी इच्छा पूरी करना, मेरे भगवान कृपा निधान।। मुझे..।।3।।

नाम तिहारा तारण हारा

नाम तिहारा तारण हारा, कब तेरा दर्शन होगा।

तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।टेक।।
जाने कितनी माताओं ने, कितने ही सुत जन्में हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे, सम कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्य देव सम, सदा तेरा सुमरन होगा।
नाम तिहारा....।।1।।
पृथ्वी के सुन्दर परमाणु, सब तुझ में ही समाये हैं।
केवल उतने ही अणु मिलकर, तेरी रचना बना गये।।
इसीलिए तुम सम सुन्दर नहिं कोई नर सुन्दर होगा।
नाम तिहारा...।।2।।
मन में तुम सुमरन करने से, पाप सभी नश जाते हैं।
यदि प्रत्यक्ष करने ले तव दर्शन, मनवांछित फल पाते हैं।।
आज महावीर प्रभु का, अनुपम गुण कीर्तन होगा।
नाम तिहारा...।।3।।

माता पिता गुरु प्रभु चरणों में

माता पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रणमत बारम्बार
हम पर किया बड़ा उपकार।।टेक।।
माता ने जो कष्ट उठाया, उसका ऋण न जाय चुकाया।
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया।।
जिनकी गोद में पल-पलकर हम, कहलाते होशियार।
हम पर ....।।1।।
पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमा कर अन्न खिलाया।

पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया।।
जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार।
हम पर .....।।2।।
तत्वज्ञान गुरु ने दर्शाया, अंधकार सब दूर भगाया।
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, बिना स्वार्थ प्रभु मार्ग बताया।।
कृपा करे वो सबके ऊपर, इतने बड़े हैं उदार।
हम पर ....।।3।।
प्रभु कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया।
बल, बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों से श्रेष्ठ बनाया।।
जो भी उनकी शरण में आता, कर देता उद्धार।
हम पर ....।।4।।

जो मोक्ष मार्ग के नेता है

तर्ज : है प्रीत जहाँ की रीत सदा...

सब वीर प्रभु की जय बोलो, हम गीत उन्हीं के गाते हैं।
जो मोक्ष मार्ग के नेता है, हम शीष उन्हीं को नवाते हैं।टेक।।
ये जैन धर्म स्वीकारने को, महावीर ने हमें बताया है।
जैनी होकर कुछ धर्म करो, ये पाठ हमें सिखलाया है।।
है नर-भव दुर्लभ दुनियाँ में, ये जैन शास्त्र बतलाते हैं।
जो मोक्ष मार्ग के नेता है, हम शीश उन्हीं को नवाते हैं।।
नरकों की मार सही भारी, और भूख प्यास से दुःख सहे।
सेमर के वृक्ष तले बैठे, पत्ते गिरते ही अंग कटे।।

है गर्मी और सर्दी भारी, छहढाला में हमें बतलाया है।
जो मोक्ष मार्ग.....।।
होकर जैन जो धर्म को, भली भाँति अपनाते हैं।
सोऽहं सोऽहं को ध्याकर के जो, शीघ्र परम पद पाते हैं।।
सब मोह माया का चक्कर है, ये वीर ने हमें बताया है।
जो मोक्ष मार्ग.....।।

हवा जब तेज चलती है

तर्ज : हवा जब तेज चलती है

हवा जब तेज चलती है, तो पत्ते टूट जाते हैं।
मुसीबत के दिनों में तो, अच्छे छूट जाते हैं।।टेक।।
बहुत मजबूर हूँ मैं तो, झूठ बोला नहीं जाता।
यदि सच बोलते हैं तो, रिश्ते टूट जाते हैं।।
भले ही देर से आये, मगर वो वक्त आता है।
हकीकत खुल ही जाती है, मुखौटे टूट जाते हैं।।
हवा जब ..।।1।।
अभी दुनियाँ नहीं देखी, तभी वो पूछते हैं ये।
किसी का दिल किसी का ख्वाब, कैसे टूट जाते हैं।।
हवा जब.....।।2।।
जो रिश्ते हैं हकीकत में, वो अब रिश्ते नहीं होते।
हमें जो लगते हैं अपने, वही अपने नहीं होते।।
हवा जब..।।3।।

पसीने की स्याही से, जो लिखते हैं इरादों को।
कभी उनके मुकद्दर के, सपने कोरे नहीं होते।।
हवा जब....।।4।।
वतन कीजो तरक्की है, अभी तो वह अधूरी है।
वो घर भी है दवाई के, जहाँ पैसे नहीं होते।।
हवा जब...।।5।।

फूलों पर बैठी

फूलों पर बैठी हुई, यूँ न तितलियाँ उड़ाइए।
खुद के लिए न गैर का, तुम दिल दुखाइए।।टेक।।
यू प्रेम में तकरार तो, होती है हर जगह।
अपने घरों की बात न, सड़कों पर लाइए।।
खुद के लिए ....।।1।।
योग्यता नहीं है और, कहने चल दिये-2।
कुब्बतों को पहले लाके, खुद दिखाइए।।
खुद के लिए...।।2।।
चापलूसी जी हुजूरी, योग्यता नहीं।
ये दिखा के होशियारी, न दिखाइए।।
मार करके पत्थरों को, माँगते क्षमा।
ये कहाँ का धर्म है, हमें बताइए।।
अपने घरों की.....।।3।।
बाँटना है गर तुम्हें, फूल बाँटिये।

शूल देके दर्द दिल का, ना बढ़ाइए।।
खुद के लिए न गैर का, तुम दिल दुखाइए।
आपने घरों की...।।4।।

अंग्रेज हिन्दुस्तान में

अंग्रेज हिन्दुस्तान में आए थे, कुछ बातें सिखा कर चले गए।
सौ वर्ष यहाँ पर राज्य किया, फिर टुकड़े बनाकर चले गए।।टेक।।
एक पाकिस्तान बनाया था, लाखों का खून बहाया था।
कश्मीर में जंग मचाया था, बरबाद कराकर चले गए।।
अंग्रेज....।।1।।
हमको अंग्रेजी सिखलाई, हिन्दी से नफरत करवाई।
शस्त्रों की शिक्षा छुड़वाई, तहजीब मिटाकर चले गए।।
अंग्रेज....।।2।।
लस्सी माखन से मुख मोड़ा, और दूध दही खाना छोड़ा।
चाय बिस्किट लैमन सोडा, और अभक्ष्य खिलाकर चले गए।
अंग्रेज....।।3।।
सीता नीली और राजुल का, आदर्श है भारत भूल गया।
देवी को लेडी पत्नी को वाईफ, पिता को डेड बना कर चले गए।।
अंग्रेज....।।4।।
चोटी कटवा जंजू तोड़ा, और टाई गले में बांधी है।

सिर की पगड़ी उतराई है, और हैट पहनकर चले गए।।
अंग्रेज....।।6।।
विशाल कहे भारत वालो, प्राचीन सभ्यता अपनाओ।
उनके पीछे क्यों जाते हो, जो तुम्हें बहका कर चले गए।।
अंग्रेज....।।6।।

रथ यात्रा समय का

तर्ज : जब तेरी डोली निकाली जाएगी...
जब प्रभू रथ पे, बिठाए जाएँगे।
भाग्योदय तब भक्त के हो जाएँगे।।टेक।।
सारी नगरी में ये कह दो बोलकर।
रथ के सभी साथ चलते जाएँगे।।
जब प्रभु रथ पे बिठाए जाएँगे।।1।।
जैन ध्वज आगे चलेगा शान से।
भक्त झुकते जाएँगे सम्मान से।।
छत्र प्रभु के, शीश पे लहराएँगे।
जब प्रभु रथ पे, बिठाए जाएँगे।।2।।
जब प्रभू के आगे ढोरेंगे चँवर।
झूम जाएगा सु भक्ती से नगर।।
भक्त भक्ती से भजन तब गायेंगे।
जब प्रभु रथ पे बिठाए जाएँगे।।3।।
सिंहासन पे जिन, प्रभू सोहे अहा।

पुष्प वृष्टि, शीश पे होगी महा।।
जिन चरण में, भक्त आ सिर नाएँगे।
जब प्रभू रथ पे बिठाए जाएँगे।।4।।
भक्त करते हैं, प्रभू की आरती।
ज्ञान देती है, जगत को भारती।।
आगे-आगे, वाद्य बजते जाएँगे।
जब प्रभू रथ पे बिठाए जाएँगे।।4।।

मेरा कोई ना सहारा

मेरा कोई न सहारा बिन तेरे, महावीर प्रभू जी मेरे।
महावीर प्रभू जी मेरे, श्री वीर प्रभू जी मेरे।।टेक।।
प्रभू रत्नत्रय को पाए, फिर केवलज्ञान जगाए।
मुझे भक्त बनाओ प्रभु मेरे, महावीर प्रभू जी मेरे।।1।।
भू गर्भ से तुम प्रगटाए, कई चमत्कार दिखलाए।
सद् राह दिखाओ प्रभु मेरे, महावीर प्रभूजी मेरे।।2।।
जो दीन दुखी दर आते, वे झोली भर के जाते।
सौभाग्य जगाओ प्रभु मेरे, महावीर प्रभू जी मेरे।।3।।
तुम दीनों के हितकारी, अब आई मेरी बारी।
काटो जन्म-मरण के फेरे, महावीर प्रभू जी मेरे।।4।।
मैंने भ्रमण किया जग सारा, प्रभु पाया ना कोई सहारा।
अब विशद खड़ा दर तेरे, श्री वीर प्रभू जी मेरे।।5।।

रथ यात्रा के समय का

प्रभू रथ में हुए सवार, नगाड़ा बाज रहा।।टेक।।
क्या ठुमक चाल रथ चलता है, वह छतर शीश पे हिलता है।
इत चँवर नाथ पर ढुलताहै, क्या छाई आज बहार।। नगाड़ा..
किस छवि से नाथ विराज रहे, नाशा दृष्टि से साज रहे।
अद्भुत बाजे बाज रहे, सब बोले जय-जयकार।। नगाड़ा..
ढोलक और बजे नगाड़ा है, बाजे स्वर अति ही प्यारा है।
तबले का ठुमका न्यारा है, झाझन की हो झनकार।। नगाड़ा..

नरक का बने वही मेहमान

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत

कामी कपटी चोर-लालची, होता जो इन्सान
नरक का बनता वो मेहमान
वचन का झूठा, मन का मैला, सूरत का शैतान
नरक का बने वही मेहमान।।टेक।।
सुने कान से सदा बुराई, नजरों में रहे नार पराई।
प्राण दूसरों के लिये हर्षाई, दुर्गुण गावे जीभ सराही।।
नरक-स्वर्ग नहीं माने रहता, पापों में लिप्तवान।
नरक का बने वही मेहमान।।1।।
मन में भरी पड़ी कपटाई, ऊपर दिखती साफ सफाई।
ईर्ष्या की मन आग समाई, भ्रष्टाचार करे अन्याई।।
रचकर जाल फंसाता फिरता, दंभी दंभ महान।
नरक का बनता, वह मेहमान।।2।।

अति आरंभ करे अज्ञानी, परिग्रह कीना सीमा बांधी।
दानवता की है यही निशानी, पापों की है गठरी बांधी।।
तृष्णा के लालच में पड़कर, करता पाप महान।
नरक का बनता, वो मेहमान।।3।।

विहार के समय का

तर्ज : दिल के अरमां...

करके आज विहार, हम तो जा रहे।
भूलें हुई जो हमसे, क्षमा माँग रहे।।
करके आज विहार, हम तो जा रहे।।टेक।।
कुछ समय रहने की, यहाँ ठानी थी।
आप लोगों की, ये विनती मानी थी।।
पूरी हुई वो आज, ये बतला रहे।
करके आज विहार, हम तो जा रहे।।1।।
धर्म ही साथी है, जग में जीव का।
दिल दुःखाना न, किसी भी जीव का।।
वीर का संदेश, सब को सुना रहे।
करके आज विहार, हम तो जा रहे।।2।।
सेवा भक्ति आपने जो, की यहाँ।
भला उसे हम, भूल पाएँगे कहाँ।।
धर्म के रिश्ते, दिल में सजा चले।
करके आज विहारा, हम तो जा रहे।।3।।

विशद सागर जी नाम, बड़ा सुखदाई है।
इनकी कृपा से ही, रौनक छाई है।।
यादों के मोती, यहाँ बिखरा रहे।
करके आज विहार, हम तो जा रहे।।4।।
जो भी संत या मुनिराज यहाँ आए जी।
सेवा भक्ति कर, उठाना लाभ जी।।
प्यारा यह उपदेश, देकर जा रहे।
करके आज विहार, हम तो जा रहे।।5।।

तेरी महिमा बड़ी महान

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत

वर्धमान श्री महावीर को, मेरा हो प्रणाम
तेरी महिमा बड़ी महान।
करुणा सागर दीन दयालु, तारा सकल जहान
तेरी महिमा बड़ी महान।।टेक।।
पिता सिद्धार्थ त्रिशला जाया, घर-घर में था आनन्द छाया।
देव-देवियाँ मंगल गाया, धर्म का तू अवतार कहाया।।
कुण्डलपुर में जनम लिया था, वीर प्रभु भगवान।
तेरी महिमा बड़ी महान।।
दीन दुःखी का तू रखवाला, तूने तारी चन्दन बाला।
फेरी जिसने तेरी माला, उसका संकट तूने टाला।।
चण्ड कौशिया जैसे तारे, बड़े-बड़े शैतान।

तेरी महिमा बड़ी महान।।
यज्ञ बलि को दूर हटाया, दया धर्म का नाद बजाया।
भेद ज्ञान करना सिखलाया, मानवता का मान बढ़ाया।।
विशद ज्ञान का खिला पुष्प और खिला खूब उद्यान।
तेरी महिमा बड़ी महान।।

भजन

तर्ज : मेरे अंगने में...

महामंत्र प्यारा, हमारा णवकार है।
ग्यारह अंग चौदह पूर्वों का, समझो यह सार है।।टेक।।
पाँच पद प्यारे हैं, अक्षर पैंतीस जी
मन में बसा लो तो-2, निश्चय बेड़ा पार है।।
महामंत्र प्यारा, हमारा णवकार है।।1।।
देव-देवी दुनियाँ के, इसके आधीन है।
पाँच पद मानो-2, ये बड़े अवतार हैं।। महामंत्र..
सुबह जपो शाम जपो, जपो जब चाहे जी
होती है सुनवाई-2, यह खुला दरबार है।। महामंत्र..
सभी जैनी भाई ये, जपते हैं प्यार से।
जपने का औरों को भी-2, मिला अधिकार है।। महामंत्र..
सीखो सिखलाओ इसे, बोलो बड़े प्यार से-2।
इसका ही घर-घर में-2, करना प्रचार है।। महामंत्र..
देखो नाग काला, फूलों की माला बन गया-2।

भावना से ध्याओ तो–2, मिले चमत्कार है।। महामंत्र…

कोई दूर प्रभु का घर नहीं

तर्ज : धीरे–धीरे बोल कोई…

धीरे–धीरे मोड़ तू इस मन को, इस मन को तू इस मन को।
मन मोड़ा फिर डर नहीं, कोई दूर प्रभु का घर नहीं।।टेक।।
मन लोभी मन कपटी, मन है चोर।
कहते आए हर, पल–पल में ओर।।
कुछ जान ले, कुद मान ले, होना है विचलित नहीं।
कोई दूर प्रभु का घर नहीं।।
धीरे धीरे मोड़ तू इस मन को, इस मन को तू इस मन को।।1।।
जप–तप तीर्थ सब होते बेकार।
जब तक मन में रहते, भरे विकार।।
बेमान क्यों नादान, क्यों, गफलत ऐसे कर नहीं, कोई…
जीत लिया मन, फिर ईश्वर नहीं दूर
जान बूझ क्यों, बना है तू मजबूर
अभ्यास से, वैराग्य से, कुछ भी है दुस्कर नहीं, कोई…

ले जीवन की बाजी जीत

तर्जः आ लौट के आ जा….

आ गा ले प्रभु के गीत, तेरे दिन बीते जाते है।
तेरा सूना पड़ा रे संगीत, तेरे दिन बीते जाते है।।टेक।।
कभी है आना कभी है जाना, कैसा ये जीवन का फेरा।

कभी है मिलना कभी बिछुड़ना, दुनिया है दो दिन का डेरा।।
यह तो है पुरानी रीत, तेंरे दिल बीते जाते है।।1।।
मेरा-मेरा क्यों करता है मूरख, कौन यहॉ। पर है तेरा।
जिसके पीछे भूला प्रभु को, मोह माया का ये तो घेरा।।
तज जग की है झूठी प्रीत, तेंरे दिन....
न कोई संगी न कोई साथी, अजब है दुनिया का मेला
आए अकेला जाए अकेला, झूठा है सारा झमेला
यहाँ कौन है किसका मीत, तेंरे दिन....
क्यों इस यौवन कपे इतराए, देख देख मुस्काए।
हँसा जो गुलशन में फूल इक दिन, माटी में वो मिल जाए।।
तेरी जाए उमरिया बीत, तेंरे दिन....
दुनिया की माया से दिल लगाकर, पगले क्यों जीवन को हारे
मिला तुझे अनमोल ये हीरा, इसको न यू ही गंवा रे
ले जीवन की बाजी जीत, तेंरे दिन....

अगर दिल किसी का

तर्ज : वफा कर रहे हैं....

अगर दिल किसी का, दुखाया न होता।
जमाने ने तुझको, सताया न होता।।टेक।।
न आते तेरी, आँख में आँसू।
किसी हँसते को गर, रुलाया न होता।।
न मिलते कदम दर, कदम तुझको कांटे।

जो कांटा किसी को, चुभाया न होता।।
न घर में अंधेरा, तेरे आज होता।
जो दीपक किसी का, बुझाया न होता।।
क्यों लुटती खुशी की, तेरी आज दुनियाँ।
जो खंजर किसी पे, चलाया न होता।।
अगर बेसहरों का, बनता सहारा।
तो सर पे तेरे गम का, साया न होता।।

सपेन में रात मेरे

सपने में रात मेरे आए.... ओ .....हो.. ऽऽ
मेरे बाबा आदिनाथ जगत के रखवाले।।टेक।।
जब रात को सोने जाते, श्री आदिनाथ को ध्याते।
जब भोर भये उठ जाते, प्रभु तुमरे दर्शन पाते।।
प्रभु धर्म प्रवर्तक गाये.. ओ.. हो.... ऽऽ।।1।।
जो द्वार पे तेरे आते, चरणों में शीश झुकाते।
जो पूजा आरती गाते, वे मन वांछित फल पाते।।
हम भक्त शरण में आए .... ओ... हो ..ऽऽ।।2।।
हम चरण शरण को पाए, तुमको निज हृदय बसाएॅ।
प्रभु तुमरी महिमा गाये, अपना कर्तव्य निभाएँ।।
हम दर्शन कर हर्षाए.. ओ... हो....ऽऽ।।3।।
हे आदिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
हे विशद मोक्ष पथ गामी, चरणों करते प्रणमामी।।

तव चरणा हृदय बसाए.... ओ.... हो....ऽऽ।।4।।

हमको तो पनाह

तर्ज : जब से गुरु दर्श मिला...

जब से नेमिनाथ मिले, भक्त कमल खिले-खिले।
हमको तो पनाह मिल गयी रे.....ऽऽऽऽ
जिंदगी की राह मिल गयी रे।
तुम्हीं तो हमारे चारों धाम हो
तुम ही तो हमारे जाप ध्यान हो
रोम-रोम में उल्लास-जब से बने भक्त खास
हमको तो पनाह........
तुम ही तो हमारे इष्ट पूज्य हो
तुम ही तो हमारे सिद्ध साध्य हो
भक्तिभाव से पुकार, जब से की है बार-बार
हमको तो पनाह.......
तुम ही रहे सत्य शिव सुन्दरम्
तुम ही साँचे जिनधरम हो मन्दिरम्
प्राण-प्राण है निहाल, बदली अपनी चाल-ढाल
हमको तो पनाह.........

मिले शांति प्रभु

तर्ज : चले मंदिर नारनोल चलिए.....

चलो मंदिर नलापुर चलिए, जहाँ शांतिनाथ दरबार है।

मिलें शांति प्रभु के द्वार पे, इस मंदिर की महिमा अपार है।।टेक।।
इन्द्र देव भी इस मंदिर में, भक्ति करने आते हैं।
नृत्यगान करते हैं भारी, अतिशय वाद्य बजाते हैं।।
ऐसा कहते यहाँ के नर-नार है, मिले शांति प्रभु के...
इस मंदिर में आदिनाथ जी, के शुभ दर्शन मिलते हैं।
जिनके दर्शन कर भव्यों के, हृदय कमल शुभ खिलते हैं।।
किए प्रभु जी बड़ा उपकार है, मिले शांति प्रभु के.......
प्रभु के दाये नेमिनाथ जी, की वेदी मनहारी है।
बाये हाथ पे कुंथुनाथ की, शोभा अतिशयकारी है।।
पीछे पाँच बिम्ब मनहार हैं, मिले शांति प्रभु के......
डोसी नदी के तट से प्रभु जी, शांतिनाथ प्रगटाए है
साथ में चार अन्य बिम्ब भी, भूमि से प्रगटाए हैं
भक्तों की भीड़ अपार है, मिले शांति प्रभु के....
विशद सिन्धु मुनिराज जी आके, जीर्णोद्धार कराएँ है।
होगा शीघ्र ही पंचकल्याणक भी, भक्त यह आश लगाए हैं।।
हुआ यहाँ अतिशय विशाल है, मिले शांति प्रभु के.....

आओ काटे करम की कड़ी

तर्ज : जिंदग की ना टूटे लड़ी...

लम्बी-लम्बी इच्छाओ को छोड़ो।
सांस की ये घड़ी है बड़ी, आओ काटे करम की कड़ी हो-हो
है यही दास्ता वीर की, अपने भावों को तू जान ले

ये अहिंसा मई धर्म की, अपने हृदय से पहचान ले
अपने हृदय से पहचान ले...
मोह-माया की पड़ी हथकड़ी, आओ काटे करम की कड़ी
हो-हो-हो भार भोगों की बेड़ी पड़ी, आओ काटे करम की कड़ी
मनवा भजन बिन लागे ना रे जियरा
हो मनवा भजन बिन लागे ना रे जियरा, लागे ना...
आज से अपना वादा रहा, हम चलेंगे उसी राह पर
जो लगी थी चरण वीर के, रख कदम तू उसी राह पर
रख कदम तू उसी राह पर-हो.....
खो ना जाये सुहानी घड़ी, आओ कांटे करम की कड़ी
हो-हो-हो भार भोगों की बेड़ी पड़ी
आओ कांटे करम की कड़ी
लाख कर्मों का चक्कर हो क्या
त्याग से कुछ भी बढ़कर नहीं
ज्ञान दर्शन रहे साथी अगर
डरता विशाल जरा भी नहीं
डरता विशाल जरा भी नहीं हो....
सार तत्त्वों की महिमा बड़ी
आओ कांटे करम की कड़ी
हो-हो-हो भार भोगों की बेड़ी पड़ी.....
श्वांस आ

तर्ज : याद आ रही है तेरी याद....

श्वांस आ रही है... इक श्वांस जा रही है।
आने जाने के चक्कर में, आयु बीती जा रही है।।
श्वांस आ..........।।टेक।।

लख चौरासी चक्कर खाते, यहाँ आया तू प्राणी।
जिनवाणी को धार हृदय में, बन जाये तू ज्ञानी।।
ना कर खोटे कर्म यहाँ पर, वाणी ये गा रही है।
श्वांस आ.........।।

तिर्यंचों का बन्धन क्यों, बांध रहा अनजाने।
गोते खाता फिरता है क्यों, नरकों में दीवाने।।
तप संयम का भेद ना जाना, कायालुभा रही है।
श्वांस आ..........।।

ये ना जाना तूने बन्धु, काया साथ ना जाये।
धन दौलत ये माया सारी, धरी यही रह जाये।।
संयम पा ध्यान लगाओ, विशद वाणी समझा रही है।
श्वांस आ.......।।

भजन

तर्ज : बहारो फूल बरसाओ...

साथियों फूल बरसाओ, मेरे गुरुराज आये हैं
मुनि महाराज आये हैं
करो उत्सव की तैयारी, मेरे गुरुराज आये हैं

मुनि महाराज आये हैं

छोड़ा है राज सुख सारा, दिगम्बर भेष धारा है–2

जीयो और जीन दो सबको, यही आपका नारा है–2

दिगम्बर भेष के धारी, मेरे गुरुराज आये हैं

मुनि महाराज आये हैं

रत्नत्रय से भूषित है, और सम्यक् भाव आया है–2

श्रावक का हो कल्याण कैसे, मुक्ति का मार्ग बतलाया है–2

मूरत लागे अति प्यारी, मेरे गुरुराज आये हैं।

मुनि महाराज आये हैं।।

भजन

तर्ज : मैं क्या करूँ राम.....

मैं क्या करूँ नाथ मुझे कर्मों ने घेरा–2।।टेक।।

पढ़ने बैठू तो मैं पढ़ नहीं पाऊँ,

शिर तो पचाऊँ पढ़ूँ फिर भूल जाऊँ।

मेटो अज्ञान मुझे कर्मों ने घेरा– मैं क्या करूँ.....

सामायिक करूँ तो मुझसे बैठा नहीं जाये, पेट कमर दुखे मेरा जिया घबराये

चाहूँ मैं आराम मुझे कर्मों ने घेरा– मैं क्या करूँ.....

माला फेरूँ तो मन घूमने को जाते,

उसे समझाऊँ तो नींद आ जावे

कैसे जपूँ नाम मुझे कर्मों ने घेरा– मैं क्या करूँ....

उपवास नहीं होवे मुझसे नीरस नही भावे,
इकासन करूं तो शाम भूख लग जावे
स्वाद नहीं छूटे मुझे कर्मों ने घेरा-मैं क्या करूँ....
पुण्य नहीं होवे मुझ से पाप नहीं छूटे,
दान के नाम से पेट मेरा दूखे
कैसे हो कल्याण मुझे कर्मों ने घेरा.. मैं क्या करूँ....

भजन

तर्ज : बहारो फूल बरसाओ.....
गुरु के गीत सब गाओ, यह मौका हाथ आया है।
डूबती नैय्या तिराओ, यह मौका हाथ आया है।।टेक।।
चौरासी लख योनी में, बड़ा हो दुःख उठाया है।
बड़े पुण्य और सौभाग्य से, यह हीरा सा जनम पाया है।
इसे यों ही न गंवाओ, यह मौका हाथ आया है-2
यह चाँदनी दिन चार की, आखिर फिर अंधेरा है
चढ़ता सूरज ढलती छाया
ज्ञान का दीप जलाओ, यह मौका हाथ आया है-2
नश्वर काया और माया में, मन तेरा क्यों भरमाया है
बगले सोचा जरा मन में, वह बादल की सी छाया है
मन का भरम मिटाओ, यह मौका हाथ आया है-2
जैसी करनी वैसी भरनी, विशद गुरु ने फरमाया है
जैसा बोये वैसा काटे, क्यों इतना समझ न पाया है

कुछ अच्छे बीज बो जाओ, यह मौका हाथ आया है

यह मौका ......

भजन

तर्ज : देख तेरे संसार की हालात.....

सच्ची श्रद्धा, सच्चा चारित्र, सच्चा होवे ज्ञान

उसी को मिलते हैं भगवान–2

चाँद सा निर्मल फूल सा कोमल, उज्ज्वल सूर्य समान

उसी को मिलते हैं भगवान–2।।टेक।।

डसे न जिसको क्रोध की ज्वाला, पीए नहीं जो मद का प्याला।

मन पर नहीं माया का जाला, अन्दर से मन न हो काला।।

शान्त धीर और नम्र सरल हो, निर्लोभी गुणवान

उसी को मिलते हैं भगवान–2

ईश्वर मिले न गंगा नहाए, ईश्वर मिले न तीरथ जाए

ईश्वर मिले न राख लगाए, ईश्वर मिले न धूनी रमाए

भक्ति तीर्थ हो ज्ञानका जल हो, सदाचार का स्नान

उसी को मिलते हैं भगवान–2

जिसका करुणा निर्झर मन हो, जिसके अमृत सने वचन हो

व्रत संयम लेने का मन हो, दीक्षा पाने को आतुर हो

भेद ज्ञान कर आत्म ज्योति का, पाए वही वरदान

उसी को मिलते हैं भगवान–2

भजन

तर्ज : चुप चुप खड़े हो

चुप-चुप बैठे हो, जरूर कोई बात है।
राज की ये बात है-2।।टेक।।
बाकी बातें सीखियेगा, बन्धुवर बाद में-2।
रखनी जवान काबू, सीखियेगा साथ में-2।
बोलती कलम यही, बोलती दवात है- राजकी ये...
जब तक कोई न बुलाए, मत बोलो जी
मतलब बिना कभी, मुखड़ा न खोलो जी
मूर्ख ही बोलता, हमेशा दिन रात है- राजकी ये.....
मौन की कदर जो, मनुष्य नहीं जानता
बात कोई दुनिया में, उसकी न मानता
अपनी कदर खुद, आदमी के हाथ है- राजकी ये...
गाली के जवाब में न, गाली तुम दीजिए
लड़े कोई आपसे तो, मौन धार लीजिए
शान्ति है पास तो, जमाना सारा साथ है- राजकी ये...
सुनने में देख लो, कहावत यह आती है
इक चुप पल में, हजार को हराती है
अद्भुत ऐसी और, कहाँ करामात है-राजकी ये.....
हास उपहास में भी, दिल न दुखाओ जी
द्रोपदी की बोली पर, नजर दौड़ाओ जी
हुआ महाभारत का, भारी संग्राम है- राजकी ये....

बोलता है दूल्हा कम, बहुत ही बरात में
इसलिए ताकत है, उस ही के हाथ में
फीकी सब उस आगे, सारी बारात है– राज की ये....
चुप–चुप बैठे हो, जरूर कोई बात है।
राज की ये बात है, भैया राज की ये बात है।।

भजन

क्या लेकर तू आया बन्दे, क्या लेकर तू जाएगा।
मुट्ठी बाँध के आया जगत में, हाथ पसारे जाएगा।।टेक।।
काम कभी न होंगे पूरे, तू पूरा हो जाएगा।
सोएगा तू इक दिन ऐसा, कोई ना तुझे जगाएगा।।
चढ़ जाएगा काठ की घोड़ी, फिर वापिस ना आएगा।
क्या लेकर तू आया वन्दे, क्या लेकर तू जाएगा।।1।।
छोड़ के इक दिन महल गाड़ियाँ, जंगल होगा वास तेरा।
ढाई गज कपड़ा कफन का टुकड़ा, होगा वही लिवास तेरा।।
सोच जरा माटी के पुतले, माटी में मिल जाएगा।
क्या लेकर.....
चले गए वो दुनिया से, जो दुनिया के हाली थे
संग नहीं वो कुछ भी ले गए, दोनों हाथ खाली थे
जोड़–जोड़ भर लिए खजाने, संग ना धेला जाएगा
क्या लेकर...
है ये बात मानने वाली, ये दुनिया आनी जानी है।

नेकी बदी तो संग–चलेगी, आगे खत्म कहानी है।।
बिना भजन के आखिर बन्दे, हाथ मसल पछताएगा।
क्या लेकर.....

भजन

तर्ज : चिट्ठी ना कोई संदेश...

ये शहरे तमन्ना, अमीरों की दुनियाँ।
ये खुदगर्ज है यूँ अमीरों की दुनियाँ।।
सुख यहाँ पे हमें, दो जहाँ का मिला है।
मेरा गाँव जाने, कहाँ खो गया है–2।।
वो गाँवों के बच्चे, वो बच्चों की टोली।
वो खोली वो मासूम, चाहत की बोली।।
वो गिल्ली वो डंड़ा, वो लड़ना झगड़ना।
वो सावन के झूले, वो पेड़ों पर चढ़ना।।
वो चौपाल, वो आला, वो ऊदल के किस्से।
वो गीतों की गंगा, वो सावन के झूले।।
वो लुटता हुआ प्यार, वो जिन्दगानी।
है मेरे लिए भूली बिसरी कहानी।।
ये सोना ये चाँदी, ये हीरे ये मोती।
है अनमोल इन सबसे, इक सूखी रोटी।
जो हमने गंवाया, न कोई गंवाये।
न घर छोड़ कोई, परदेश जाये।।

झलकती है आँखे, ये दिल रो रहा है।
मेरा गाँव जाने, कहाँ खो गया है।।

भजन

हीरा जन्म जो तुझको मिला है, वो गंवाने के काबिल नहीं है।
तेरी हर श्वांस अनमोल मोती, जो लुटाने के काबिल नहीं है।।टेक।।

हीरा जन्म.....

देखो प्रभु की अद्‌भुत माया, कैसा रूप जो तुम्हारा बनाया।
तूने ऐसे प्रभु को भुलाया, जो भुलाने के काबिल नहीं है।।

हीरा जन्म......

पंछी जीव जो सेवा में आते, मरकर भी वो काम में आते।
तेरा जिस्म जीते जी काम आने के काबिल नहीं है।।

हीरा जन्म......

तू माया में फंसकर ऐसा, खर्च करता है तू जिस पर पैसा।
बिन अनमोल सत्संग जैसा, जिसमें आने के काबिल नहीं है।।

हीरा जन्म......

जब तू समझेगा तो रोना पड़ेगा, नरक में गोता खना पड़ेगा।।
तेरा ऐसा बुरा हाल होगा, जो बतलाने के काबिल नहीं है।।

हीरा जन्म......

भजन

कभी फुरसत हो तो हे गुरुवर, निर्धन के घर भी आ जाना।

जो रूखा सूखा दिया हमें, वो आहार ग्रहण तुम कर जाना।।टेक।।
कर्मों के उदय से हे गुरुवर, चौका ना अब तक ला सका।
मौका तो बहुत मिला गुरुवर, पर भाव ना दिल में जगा सका।।
अब श्रद्धा जागी है गुरुवर..
इस श्रद्धा को मत ठुकराना- जो रूखा सूखा....
ना पड़गाहना मुझे आता, ना चौक पुराना आता है।
ना विधि मिलानी आती है, ना बात मनानी आती है।।
इस बार मेरे घर आ गुरुवर....
बच्चों का दिल बहला जाना-जो रूखा सूखा....
तुम भाग्य बनाने वाले हो, मैं तकदीर का मारा हूँ
हे गुरुवर सम्भालो अब मुझको, आखिर तेरी आँख का तारा हूँ
मैं दोषी हूँ, निर्दोष हो तुम
मेरे दोषों को तुम भुला देना, जो रूखा सूखा....
कभी........

भजन

तर्ज : सावन का महीना..
शुद्ध हृदय हो पल में, हो जाता कल्याण।
बगुला भक्तों को ना, मिल सकते हैं भगवान।।टेक।।
हाथ में माला दिल है काला।
भला ऐसी माला में, क्या मिलने वाला।।
दिल में पाप भरा है, मुख से कहते राम।

बगुला भक्तों को ना, मिल सकते भगवान।।1।।
पीन में धोखा है, खाने में धोखा।
दुनिया की हर बात शह है, धोखा ही धोखा।।
सब जीवन है इस धोखा, फिर कैसे हो कल्याण।
बगुला भक्तों को ना, मिल सकते भगवान।।2।।
मन्दिर में जाते हो, प्रभु गीत गात हो।
पर मौका पा करके, जूते चुराते हो।।
ऐसी भक्ति हरगिज ना, बन सकती बरदान।
बगुला भक्तों को ना, मिल सकते भगवान।।3।।
छल और कपट के, विष को जला दो।
सच्चे हृदय से भक्ति, धन को कमा लो।।
हेरा-फेरी छोड़ो, यही मुनियों का फरमान।
बगुला भक्तों को ना, मिल सकते भगवान।।4।।

भजन

तर्ज : सीताराम सीताराम....

विशद सागर विशद सागर, विशद सागर कहिए।
ताहि विधि राखे गुरुवर, ताहि विधि रहिए।।
विशद सागर......।।टेक।।
गुरु नाम मुख में, और सेवा हाथ से।
तू अकेला नहीं बन्दे, गुरुवर तेरे साथ में।।
गुरुवर का कहा मान, राह उनकी चलिए।

विशद सागर......।।1।।
किया अभिमान तो, सम्मान नहीं पायेगा।
होगा वही विशाल जो, गुरुवर जी को भायेगा।।
फल की आश छोड़, काम शुभ करिए।
विशद सागर......।।2।।
जिंदगी की डोर सौंप, गुरुवर जी के हाथ में।
गुरुवर ही निभायेंगे, तुम्हें हर हाल में।।
नमोस्तु गुरुवर को, सुबह शाम कहिए।
विशद सागर......।।3।।
गुरुवर के नाम की, हर सुबह जाप कर।
गुरुवर के नाम से ही, सुबह की शुरुआत कर।।
भक्ति से सुबह शाम, गुरु रंग में रंगिए।
विशद सागर......।।4।।

भजन

चलो चलो सखी अपने देश, बहुत रहा लिया अब परदेश।
भीड़भाड़ है आठो याग, मचा हुआ है यहाँ कोहराम।।
नहीं सुहाता ये परिवेश, चलो चलो सखी अपने देश।।टेक।।
यहाँ न कोई अपना है, लगता सब ज्यों सपना है।
दिखता नहीं शान्ति लवलेश, चलो-चलो सखी अपने देश।।
चहुँ गति फिरे रखे बहुभेष, भोग लिये बहु दुःखअशेष।
नहीं रही कोई इच्छा शेष, चलो चलो सखि अपने देश।।

कितना प्यारा अपना देश, जहाँ नहीं है दुख का लेश।
अरे! वहाँ तो सब अखिलेश, चलो चलो सखी अपने देश।।

भजन

जो होते हैं, परम सौभागयशाली
उन्हीं को मिलता है, माँ का आशीर्वाद।।
माँ के हाथ का स्वाद, हमेशा रहता है याद।।1।।
जिनको मिलता है, माँ का स्नेह प्यार।
जो होता है सपूत, वही रखता माँ की याद।।
माँ के हाथ का स्वाद, हमेशा रहता है याद।।2।।
जो होता है, बीबी का गुलाम।।
उसको नहीं आती होगी, माँ की याद।।
माँ के हाथ का स्वाद, हमेशा रहता है याद।।3।।
हे प्रभो! मेरी है, विशद यह कामना।
हर बेटा रखे, अपनों को हर पल यादं।
माँ के हाथ का स्वाद, हमेशा रहता है याद।।4।।
हे प्रभो सद्‌बुद्धि, प्रदान करो बेटों को।
हमारी यही है आपके, चरणों में फरियाद।।
माँ के हाथ का स्वाद, हमेशा रहता है याद।।5।।

भजन

तर्ज : झिलमिल सितारों का आंगन होगा.....
खुशियों से भरा, मेरा आंगन होगा।

जब विशद सागर जी का आवन होगा।।टेक।।
आयेंगे महाराज तो हम खुशियाँ मनायेंगे।
हीरे मोती से आंगन, चौक हम पुरायेंगे।।
घर–घर में सुख सावन होगा।
जब विशद सागर जी का आवन होगा।।1।।
होगा जब चौक गुरु का, गद–गद हो पड़गाहेंगे।
दे आहार स्वयं हाथों से, जीवन सफल बनायेंगे।।
जन–जन का मन–भावन होगा।
जब विशद सागर जी का आवन होगा।।1।।
होगा जब चौका गुरु का, गद–गद हो पड़गाहेंगे।
दे आहार स्वयं हाथों से, जीवन सफल बनायेंगे।।
जन–जन का मन–भावन होगा।
जब विशद सागर जी का आवन होगा।।2।।
चरण वंदना करके गुरु की, श्रद्धा सुमन चढ़ायेंगे।
बैठ गुरु के चरण कमल में, गीत भक्ति से सुनायेंगे।।
जन–जन का मन–भावन होगा।
जब विशद सागर जी का आवन होगा।।3।।
खुशियों से भरा मेरा आंगन होगा।
जब विशद सागर जी का आवन होगा।।

आचार्य
श्री विशद सागर जी की आरती

विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी सूरत निहारूँ, आरती उतारूँ...।।
कर दो भव से पार-आज थारी आरती उतारूँ....।।टेक।।
इन्दर देवी के तुम हो प्यारे-2
नाथूलाल जी के राजदुलारे-2
जन्मे हो कुपी ग्राम आज थारी आरती उतारूँ।
विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।।1।।
विराग सिन्धु से पाई, मुनि दीक्षा
भरत सिन्धु से पद, आचार्य प्रतिष्ठा
करने चले हो कल्याण, आज थारी आरती उतारूँ।
विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।।2।।
जगमग दीपक, हाथों में लेकर-2
गुरु चरणों में, शीश झुकाकर-2
संघ के पालनहार, आज थारी आरती उतारूँ।
विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।।3।।

भजन

पानी में मीन प्यासी।
मोहे सुन सुन आवे हांसी।।
आतम ज्ञान बिन नर भटके।
कित जमुना कित काशी।।
जैसे मृग नाभि में कस्तूरी।

वन वन फिरत उदासी।।
जाकौ ध्यान धरै ऋषि मुनिवर।
मुनिजन सहस अठासी।।
सो तेरे घट मांही विराजे।
परम पूज्य अविनाशी।।
संयम धर आतम को ध्याले।
मिट जाय जन्म की फांसी।।
पानी में मीन प्यासी।
मोहे सुन सुन आवे हांसी।।

भजन

हरदम है तैयार तू पाप कमाने के लिए।
कुछ तो समय निकाल, प्रभु गुण गाने को लिए।।टेक।।
माँ के गर्भ में कोल किया था, नाम जपूँगा मैं तेरा।
इस झूठी दुनियाँ में आकर, भूल गया मैं नाम तेरा।।
पूर्व पुण्य से सद्गुरु आते, समझाने के लिए। कुछ तो..।।1।।
जब तक तेल दिये में बाती, जगमग जगमग हो रही।
जल गया तेल निपट गई बाती, जगमग जगमग हो रहा।।
चार जने मिल आते हैं, ले जाने के लिए।। कुछ तो..।।2।।
हाड़ चले जैसे सूखी लकड़ी, केश जले जैसे घास रे।
कंचन जैसी काया जल गई, कोई ना आवे पास रे।।
पराये अपने हो जाते हैं, दिखलाने के लिए।

कुछ तो समय निकाल, प्रभु गुण गाने के लिए।।3।।

भजन

तर्ज : दुनियाँ में संत हजारों हैं

तूने खूब दिया इस दुनियाँ को, अब आज हमारी बारी है।
जिसने जो माँगा वो पाया, यह भक्त भी तो अधिकारी है।।टेक।।
बहुतों को तूने दौलत दी, भक्तों को तूने इज्जत दी।
जो शरण तुम्हारी आन पड़ा, उसकी चमका दी किस्मत ही।।
तेरी दया का धन मैं भी पाऊँ, बस इतनी अरज हमारी है।
तूने खूब दिया इस दुनिया को, अब आज हमारी बारी है।।1।।
यहाँ रंक भी राजा बनते हैं, जो निशदिन तुमको जपते हैं।
सुख देना तेरे हाथों मं, तेरे नाम को ऋषि भी रटते हैं।।
तेरी सेवा हर पल किया करूँ, अब आगे मरजी तुम्हारी है।।
तूने खूब दिया इस दुनिया को, अब आज हमारी बारी है।।2।।
तेरे दर पे आस मैं लाया हूँ, सारे जग का मैं ठुकराया हूँ।
तेरी चर्चा बहुत सुनी बाबा, विश्वास लिए मैं आया हूँ।।
कहता है भगत इस दुनियाँ से, ये प्रभु बड़ा दातारी है।
तूने खूब दिया इस दुनिया को, अब आज हमारी बारी है।।3।।
जो दर पे तेरे आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
मन में जो आस लगाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।
यह भक्त चरण में खड़ा विशद यह भी फल का अधिकारी है।
तूने खूब दिया इस दुनिया को, अब आज हमारी बारी है।।4।।

भजन

तेरा एक-एक श्वांस हीरा मोती, जो लुटाने के काबिल नहीं है।
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला है,गंवाने के काबिल नहीं है।।टेक।।
यह दुनिया बड़ी खूबसूरत, ये है माया की मोहनी मूरत।
जिसकी पड़ती है तुझको जरूरत, जो गंवाने के काबिल नहीं है।।1।।
पशु जीते जी सेवाकहै करते, बाद मरने के भी काम आए।
तू ने जीते जी सेवा नहीं की, बाद मरने के क्या काम आए।।2।।
याद तूने किया जब किसी को, काम कोई भी तेरे ना आया।
धोखा देता रहा है जमाना, याद आने के काबिल नहीं है।।3।।
गई जवानी बुढ़ापा जो आया, सबको लगने लगा तू पराया।
बाल बच्चे कहे बूढ़ा कब मरे, ये कमाने के काबिल नहीं है।।4।।
अब ना सोचा तो रोना पड़ेगा, जाके नरकों में सड़ना पड़ेगा।
ऐसा होगा बुरा हाल तेरा, जो बताने के काबिल नहीं है।।5।।
तेरा एक एक श्वांस हीरा मोती, जो लुटाने के काबिल नहीं है।
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला है, जो गंवाने के काबिल नहीं है।।6।।

भजन

आँखें बंद करूँ या खोलूँ, बाबा दर्शन दे देना।
दर्शन दे देना ओ बाबा, दर्शन दे देना।।

आँखें बंद करूँ या खोलूँ, बाबा दर्शन दे देना।।टेक।।
मैं ना चीज हूँ बन्दा तेरा, तू सबका दातार।
तेरे हाथ में सारी दुनियाँ, मेरे हाथ में क्या।।
खुद में देखूँ बाबा तुझको, ऐसा दर्पण दे देना।।
आँखे बंद करूँ या खोलूँ, बाबा दर्शन दे देना।।1।।
मेरा ध्यान बड़े बाबा, मेरे मन में आते रहिये।
हर इक श्वांस के पीछे, अपनी झलक दिखाते रहिये।।
करूँ साधना ऐसी तेरी, साधन दे देना।
आँखे बंद करूँ या खोलूँ, बाबा दर्शन दे देना।।2।।
तेरे दर पे भक्त भिखारी, जो भी जैसा आया।
श्रद्धा भक्ती का फल उसने, दर पे तेरे पाया।।
सुख शांती आनन्द विशद, हे भगवन दे देना।
आँखे बंद करूँ या खोलूँ, बाबा दर्शन दे देना।।3।।
भक्त बने हम प्रभू आपके, दर पर चल के आए।
श्रद्धा के पुष्प संजोकर, द्वार आपके लाए।
जिस पद को तुमने पाया, वह अर्हन् दे देना।
आँखे बंद करूँ या खोलूँ, बाबा दर्शन दे देना।।4।।

भजन

प्रभु तेरे ही भरोसे, मेरा घरबार है।
तू ही मेरी नाव का मांझी, तू ही पतवार है।।
प्रभु तेरे ही भरोसे, मेरा घरबार है।।टेक।।
हो अगर अच्छा मांझी, नाव फिर पार होती।

किसी की बीच भंवर में, फिर ना दरकार होती।।
अब तो तेरे ही हवाले, मेरा घरबार है।
प्रभु तेरे ही भरोसे, मेरा परिवार है।।1।।
मैंने अब छोड़ दी चिंता, तेरा जो साथ पाया।
तुमको जब भी पुकारा, अपने ही पास पाया।।
मुझ पर एहसान तेरा, विशद बेशुमार है।
प्रभु तेरे ही भरोसे, मेरा घरबार है।।2।।
मुझको अपनो से बढ़कर, सहारा तुमने दिया है।
जिंदगी भर जीने का, गुजारा तुमने किया है।।
कहता हूँ सबसे तेरा, बड़ा उपकार है।
प्रभु तेरे ही भरोसे, मेरा परिवार है।।3।।

भजन

तर्ज : कोई कारण होगा...

इक झोली में फूल भरे हैं, इक झोली में कांटे रे।
कोई कारण होगा, अरे! कोई कारण होगा।।
तेरे बस में कुछ भी नहीं, ये तो बांटने वाला बांटे रे।
कोई कारण होगा, अरे! कोई कारण होगा।।1।।
पहले बनती है तकदीरे, फिर बनते हैं शरीर।
ये प्रभु वीर की कारीगरी है, तू क्यों हो अधीर।।
कोई कारण होगा, अरे! कोई कारण होगा।।2।।
धन का बिस्तर मिल जाए, पर नींद को तरसे नैन।
किसी को कांटों पर सोकर भी, आ जाता है चैन।।

कोई कारण होगा, अरे! कोई कारण होगा।।3।।
नाग भी डस ले तो मिल जाए, किसी को जीवन दान।
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नामो निशान।।
कोई कारण होगा, अरे! कोई कारण होगा।।4।।
इन्द्र चक्रवर्ती नारायण की भी, विशद रही ना शान।
जब जागे तब होय सबेरा, सत्य यही पहचान।।
कोई कारण होगा, अरे! कोई कारण होगा।।5।।
जो तू चाह रहा जीवन में, उसका होय विनाश।
विशद महापुरुषां की भी तो, हुई ना पूरी आश।
कोई कारण होगा, अरे! कोई कारण होगा।।6।।

भजन

तर्ज : जीवन की अंधेरी रात में दीपक जला दिया...
गुरुवर तुम्हारे प्यार ने, जीना सिखा दिया।
भूला हुआ था रास्ता, भटका हुआ था मैं।।
किस्मत ने मुझको आपके-2, काबिल बना दिया।
विशद गुरु तुम्हारे प्यार ने, जीना सिखा दिया।।1।।
रहते हे। जलवे आपके न्जरों में हर घड़ी।
मस्ती का जाम आपने-2, ऐसा पिला दिया।।
विशद गुरु...............।।2।।
जिस दिन से मुझको आपने, अपना बना लिया।
दोनों जहाँ को विशाल ने-2, तब से भुला दिया।।
विशद गुरु...............।।3।।

जिसने किसी को आज तक, सजदा नहीं किया।
वो सर भी मैंने आपके–2, दर पे झुका दिया।।
विशद गुरु ....।।4।।